Chapter. 4

अध्याय–4

राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का कृत्तित्व

चतुर्थ अध्याय

राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों का कृतित्व

1. श्री रामशरण पीतलिया

श्री रामशरण पीतलिया ब्रजभाषा के सृजन में नहीं बल्कि उसके प्रचार प्रसार में भी बहुत बड़ा योगदान दिया हैं। इनको बचपन से ही साहित्य और कला में रूचि रही। रामलील में भाग, वाद-विवाद प्रतियोंगिता में अव्वल आना इन की प्रतिभा को पल्लवित करता रहा। और ब्रजभाषा के काव्य साहित्य में एक नये कविरत्न का आगमन हुआ। जिसनें अपनी कला द्वारा ब्रजभाषा परम्परा की पताका का फहरा रखा हैं। इन्होंने 'लालिमा' नामक पत्रिका में सहयोग दिया। जिससे पत्रकारिता में रूचि बढ़ी और 'चौरासी खम्भा' नामक साप्ताहिक अखबार निकाल कर निरपक्ष रूप से खबरें दी। जिसमें ब्रजसंस्कृति को उभारा।

आकाशवाणी मथुरा और दिल्ली के द्वारा बाल हास्य में सरहाना की गई। वही इन्होंने वर्तमान घटनाओं के प्रति भी अपने भाव प्रकट किए। गांधी जी के निधन से दुःखी हो अपने भावों को ब्रजभाषा में इस प्रकार किया। उदाहरण द्रष्टाव्य हैं।

प्यारे बापू प्यारे बापू,
स्वर्ग सिधारे, छोड़ौ देस।
रह न सके अँगरेज देस में,
मार भगाए पकरे केस।

पहलैं तौ अँगरेज देस में,
करते भारी अत्याचार।
अत्याचारन के बढ़बे तें,
बढ़बे लगे घने कुविचार।
तीस जनवरी कौ दिन हू
भारत कूँ धोखौ देई गयौ।
बापू से हीरा मीती कूँ
हाय छीन कै लैई गयौ ।।[1]

जिसमें गांधी जी को हीरें के रूप में प्रस्तुत कर मरण दिवस तीस जनवरी को धोखेबाज दिन की संज्ञा दी हैं।

सांस्कृतिक पक्ष को उजागर करते हुए इन की रचना 'रसिया होरी कौ रस लै लै' बहुत पंसद की गई। उदाहरण इस प्रकार है -

रसिया होरी कौ रस लै लै

जैसी रस बरसाने करसै, सो रस बैकुंठहुँ में नाहिं।
सुर तैतीसन की मति बौरी।
तजि कै चले सुरग की पौरी।
देखि देखि मा ब्रज की होरी, ब्रह्मा मन पछताहिं।[2]

जिसमें ब्रज की होली का सुन्दर सजीला वर्णन कर वसन्त की महक, ढ़ोल, नगाड़े, नर-नारी रागावृत्ति के माध्यम से दार्शनिक शैली में सांस्कृतिक परम्परा का वर्णन हैं।

इसी प्रकार 'ब्याह' की परम्परा पर एक सांस्कृतिक लेख लिखा जिसमें ब्याह के सभी रीति-रिवाज जैसे पीली चिट्ठी, तेल पूजा, हल्दी आदि का सटीक वर्णन हैं। इसी प्रकार रेखाचित्र 'आदि-बद्री' में तीर्थ भावना को प्रस्तुत किया जैसे उदाहरण द्रष्टाव्य -

मंगला कौ शंखनाद भोर को सन्देस देत,
सूरज सरमा तो सौ बिछावै स्वर्ण जाल है।

कुहू-कुहू कोयल करै कदंब पै पलासन पै,

बांसुरी बजैया कूँ हेरे तिहि काल है ।।[3]

*** * ***

चलि आदि बद्री धाम। मन मिलै तोहि विश्राम ।।

नर नारायण दरसन करिकै संकट संकट मिटै तमाम ।।

इहां सरोबर निरमल पानी।

कन-कन की कहि रयौ कहानी ।।

मंसादेवी गोप सरोवर रुचिर धाम श्रभिराम।

चले आदि बद्रीधाम लछिमन फूला हरि की पौरी। [4]

*** * ***

मैया बुला नन्द बाबा कूँ बद्री धाम गयौ है आय।

हरी भरी सी पर्वत माला।

दरस परस मन भयौ निहाला।

देखि कदम्ब पलाश विशाला, हरौ भरौ मन भाय।

नर नारायण वहाँ बिराजै।

शिव शंभू कौ घंटा बाजै।

निरखा छटा नन्दन वन लाजै-परसै भाग सराय।[5]

'आदि बद्री' निम्बार्क सम्प्रदाय का प्रख्यात स्थल हैं यह भगवद् गीत के अध्याय सुनने को मिलतें हैं इस स्थल का सुन्दर संजीव चित्रण किया गया हैं।

इन की नवसर्जित रचना 'ससुरार सतक' ने पाठकों के मन को मोंह लिया, जिसमें 108 दोहों की रचना कर ब्रजभाषा में ससुराल की सरसता और नोंक झोंक का चित्रण किया हैं।

इस तरह ब्रजभाषा में कहानी, रेखाचत्रि, कविता, आलोंचना, रिर्पोताज की रचना बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से की हैं। जों इन्हें राजस्थान के ब्रजभाषा कवियों में अनुठा स्थान देती हैं।

इन की मौलिक रचनाएँ तो है, साथ ही ब्रजभाषा में अनुवाद भी किया है।

रवीन्द्र जी की 'गीतांजली' वल्लभाचार्य जी कृत 'यमुनाष्टकम्' का ब्रजभाषा में अनुवाद कर ओर भी माधुर्य भर दिया। इस के कुछ छन्द इस प्रकार हैं।

संगम कारन गंगहु पूजि बनी हरि कूं जमुना मन भ वे।
भक्तन दायक सिद्धि बनी प्रिय काज सरे हरि नित्तसिह बै॥
सांच कही भगिनी सुत कूं किमि त्रासन सो जमराज नसावै।
गोपिहि सेवत प्रीतिबढी हरि तैसिहि सेवत प्रीति बढ़ावै॥[6]

रचनाकर्म के साथ ही ब्रजभाषा के प्रसार के लिए 'कदम्बा संस्था' की शुरुआत कर नई पीढ़ी को ब्रजभाषा में रचना करने के लिए प्रोत्साहित किया जिस में 15-15 कवि गोष्ठी में भाग लिया करते थे। जिससे नवगीतों की रचना हुई।

इस प्रकार श्री पीतलिया जी के कृतित्व को देखे तो इन्होंने अपनी प्रतिभा से ब्रजभाषा, सांस्कृतिक परम्परा को बहुत ही सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया। इन का रूझान लोकभोग्य काव्य पर विशेष रहा हैं जनाग्रही काव्य के वह पक्षधर रहें हैं यही कारण हैं कि उनकी रचनाएँ आँचलिक स्तर की अधिकतर रही हैं। कवि सम्मेलनों एवं काव्यगोष्ठियों के द्वारा भी उन्होंने ब्रज के गेय छंदों को प्रसारित किया हैं। जयपुर, नाथद्वारा, उदयपुर आदि स्थानों पर इनका विशेष सम्मान हैं। इन्होंने भक्ति, शृंगार तथा सामाजिक विषयों पर जनभोग्य शैली में सौंदर्यपूर्ण काव्यसृजन किया है।

2. डॉ. रामकृष्ण शर्मा

डॉ. रामकृष्ण शर्मा ने ब्रजभाषा में अनूठा-चमत्कारिक रूप में अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया हैं। इन का कृतित्व ब्रजभाषा के लिए बहुत ही सम्मानीय हैं। इन्होंने गध और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में बहुत ही सुन्दर रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। बचपन से ही ब्रजभाषा ब्रज के माहौल में इस तरह रंग गए कि बड़े होकर उन्होनें उन्ही रंगो को अपने भावो के साथ प्रस्तुत किया।

इनके कृतित्व पर ध्यान दे तो पता चलात है कि इन्होंने समाज के हर पक्षों की ओर ध्यान दिया हैं। चारों दिशाओं की समस्या को एक कर प्रस्तुत किया हैं जैसे 'भारत गाथा' और 'भारत सतसई' में उन्होंने अपने सीमित साधन बदलते परिवेष के आलोक को जन-जन तक पहुँचाया हैं। यह मुक्त काव्य रचना हैं इस को तीन भागों

में बाँट कर क्रमबद्धरूप में प्रस्तुत किया हैं। पहला भाग भारत की महिमा का वर्णन हैं, कि यहां विभिन्न जाति धर्म, वेशभूषा के होते हुए भी एकता का संगम है।

''एक भर्‌यौ पूरौ बाग सोहत हमारो देश,
विविध विटप बेल सुमन सुहैया है।
धरम अनेक वेषभूषा खान पान भेद,
ऐसी है अनेकता सुरंग सरसैया है।।
दीसै जो विविधता में एकता या देश मांहि,
बाकी सरि कोउ देस क्हूं न करैया है।।''[7]

अर्थात भारत उस बगीचें की तरह हैं, जहां विभिन्न फूल एक साथ रह कर शोभा बढ़ा रहे हैं। एक बेल में विभिन्न फूल शोभनीय हैं। इस के माध्यम से भारत के विभिन्न धर्म, संस्कृति की महत्ता प्रस्तुत कर भारत की महिमा का गान किया।

दूसरें भाग में 'भारत पतन' में भारत में हुए बदलाव से समाज के भ्रष्ट्राचार, पतन, धोखाबाजी, बुराईयों को भी उन्होंने ब्रजभाषा में सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया है। जैसे -

नैक दीठ डारौ वा विभाग पै जो रच्छा हेत,
आरक्षी कहात बाके कैसे बुरे हाल है।
ध्येय निरधार्‌यौ जन-जन भयहीन होंय,
किन्तु करतूतन सों दीखें मानो काल हैं।
दीन की पुकार पहुँचे न काऊ विधिकान,
उल्टे फैसि जांय ऐसे फंदाबारे जाल है।
दुखी तो धिधायौ करें दोसी मुक्त मस्तफिरें,
कोऊ मरें, कोऊ जिये नेक न मलाल है।[8]

इस में देश की समस्याओं जैसे राजनीति में चालबाजी, भष्ट्राचार, गुंडागर्दी, अपराधिक प्रवृत्तियाँ नारी समस्याओं आदि को प्रस्तुत किया हैं।

तीसरे भाग में, भारत विकास पर लिखा हैं कि भारत के विकास के लिए क्या किया जाय? कैसे जागृति पैंदा की जाये। इस प्रकार अपनी लेखनी द्वारा लोगों को

जागृत करने की कोशिश की। उदाहरण द्रष्टाव्य है -

छाँड़ि वे विदेसी वस्तु, देसी की खरीद करें,
याते सुधरेगी ई प्रनाली चालू अर्थ की।
देस में बढ़ेगी पैदावार देसी चीजनकी,
दूर होगी घौंस जो विदेसी सहें व्यर्थ की। [9]

इस के अलावा ब्रज के प्राकृतिक सौदर्य को भी प्रस्तुत किया।

'ब्रज रचना माधुरिमा' में भी बहुत ही सुन्दर रचना की हैं। इस में भी इन्होंने विभिन्न विषयों पर लिखा हैं। जैसें बसन्त बहार, बरखा बहार, प्राकृतिक विषय, स्वतंत्रता का बदलाव, परयौ ऐ अकाल, जिय न जिये, ग्राम गाथा, गनतंत्र कौ परब जैसें विभिन्न शीर्षक देकर विभिन्न परिस्थितियों समस्याओं को प्रस्तुत किया। तो दूसरी ओर होरी का त्यौहार, भरत सतसई, द्वारा सांस्कृतिक पक्ष को रचा।

गद्य के क्षेत्र में भी इन्होंने कहानी, रेखाचित्र उपन्यास की रचना ब्रजभाषा में की जैसे रेखाचित्र, 'बाबामनमोहनदास' कहानी 'बेटी कौ ब्याह', मेरी रचना प्रक्रिया, पाँच कहे सो साँच, जिस में इन्होंने अलग-अलग तरिको से अपने भावों को प्रस्तुत किया हैं ब्रज भाषा ने उस के माधुर्य को बढ़ा दिया हैं।

इन की भाषा ब्रज रही, साथ ही हर बात को इन्होंने सीधे सादे रूप में प्रस्तुत किया। बात को घुमाफिराकर नही कहा। सच को प्रस्तुत किया विचारों की सीधे और सच्चे रूप में प्रस्तुत किया।

इस प्रकार डॉ. रामकृष्ण शर्माजी ने, गद्य-पद्य दोनों ही विधाओं में अपने विचारों भावों को प्रस्तुत किया। और काव्य जगत में अपना अळग स्थान प्राप्त किया। फलस्वरूप ब्रजविभूति अचंल रत्न, मनीषी द्वारा अभिनन्दित किया गया।

3. श्री भवँर स्वरूप भँवर

राजस्थान भरतपुर के सितारें **'श्री भँवर स्वरूप भँवर'** ने, ब्रजभाषा में लिखते हुए काव्य जगत में चमकतें रहे हैं इन को अलंकार छन्द का ज्ञान न होते हुए भी इन्होंने बहुत ही सुन्दर रचनाएँ रची। इन को बचपन से ही काव्य में रुचि थी। इन्होंने ज्यादातर समस्याओं पर ही लिखा जैसे सामाजिक कुंरितयाँ, शासन की बुराई, दहेज,

जनसख्या, न्यायलय व्यवस्था, पश्चिमी सभ्यता, छुआछूत आदि। इन समस्याओं पर लिख कर समाज का ध्यान समस्याओं की ओर खिंचा और माधुर्य के कारण भाषा मधुर होने से लोग रसानंद से पढ़ते हैं, और सरहाते हैं।

इन की अपनी रचना पर आधारित दो पुस्तके 'विश्व भारती' और 'गोपाल गीता' है। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हो समाज की बुराइयों पर तीखा प्रहार किया, हर क्षेत्र राजनैतिक, सामाजिक आदि पर लिखा है। उदाहरण द्रष्टाव्य हैं -

'आज काँगरेस में तौ कालि जनता एस में,
तौ सोसलिस्ट में लिखाऊँ नाम परसों।
फेरि जनता में मिल बैठूँ जनसंघ संग,
आर. एस. एस. की परेड करूँ नरसों।
देखि रंग-ढंग दोऊ कम्यूनिस्ट गुहन कौ,
फारवार्ड ब्लाक में लिखाऊँ नाम तरसों।
'भँवर' बबूला जैसे उड़त हवा के संग,
तैसे नकसल पंथी बनि जाऊँगौ अतरसों॥'[10]

इस में राजनीति के दल-बदल की पोल खोलतें हुए उन्होंने राजनीति पर व्यंग्य किया हैं। उदाहरण द्रष्टाव्य है। जनसंख्या वृद्धि -

ज्यादा बच्चा पैदा करि क्यों मरि रहे बोझन है,
भलौ परिवार नियोजन है।
जा किसान के घर में धरती दस बीघे आई,
पाँच-चार छोड़न पै रह जाय बीघे दो-ढाई।
सधै नांय कछु प्रयोजन है॥ भलौ परिवार.....[11]

न्याय व्यवस्था -

खूनी डाकू चोर ठग सोषक बेईमान।
'भँवर' वकील दुकान के सब सच्चे जिजमान।
धनि-धनि बुद्धि बकील की, रचे अनोखे खेल।
चोरन बरी कराय दे, साहूकार को जेल॥[12]

मतदान पर वोटर के चरित्र को उजागर-

भैंस भए बोटर 'भँवर' अकोर नट जाँय,
दारू बोतल नोट लै, डारै बोट सिहाय।
जाति-पाँति की औट लै, ठाड़े भए निधोट,
होइ जमानत जब्त जब, दें कर्मन कूँ खोट॥[13]

नशाबाजी व्यसन पर-

'नसाबाजी सत्यानासी,
अपनेई हाथन लगा रहे है आप गरे फाँसी।'[14]

इस प्रकार सामाजिक बुराईयों के साथ-साथ भारत की गौरवमयी संस्कृति के प्रति लगाव के लिए भी लिखा है। 'भारत की आरती' की कुछ पंक्तियों के द्वारा राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीयता की भावना को उद्धत किया। उदाहरण इस प्रकार हैं।

मेरी माता भारती, हिमालैं कण्ठ धारती,
ब्रह्मपुत्र विस्तारती, गंगाजी कूँ प्रसारती।
मेघन उतारती, सरोबरन धारती,
पबन थहारती, तू बनन बहारती।
सुमारुती चलत, षट ऋतुन बिहाराती॥[15]

इस के अलावा महँगाई, मिलावट, घूसखोरी, ऊँचनीच, छुआछूत, दहेज आदि विषयों पर भी खूब लिखा। उदाहरण इस प्रकार हैं।

मँहगाई -

हल्ला साहेन कौ मच्यौ, सबकौ लगि गयौ दाव।
कपड़ा चीनी डालडा, सबके चढ़ि गये भाव॥[16]

***

पानी मिलमा दूध मिलाबै कछु सपरेटा।
चीन डारै खूब चतुर व्यापरी बेटा॥[17]

***

घूंस बिना नहीं काम करै कोउ काहू कौ,

माने नहीं अनुशासन।
मरि जाऔ चाहै दम घोटि उसासन॥[18]

* * *

'नाँय घर में टपकाऊ पानी।
सबके हा हा खाय कुआ पै खड़ी महतरानी॥'
बोल्यो एक रिसाय कै इनके हुड्डान्नै तोरूँगी।
छोरेऔ लठिया लाऔ दारी के चपटाय फोरूँगी॥
बात सुन सुन के थर्रानी। सबके हा हा खाय....
'एक बूढ़े ने कही दोस कछु नाँय बिचारी कौ।
इनकूँ सिरी लगा रह्यो है भँवर अँध्यारी कौ॥'[19]

समाज में नारी पर हो रहे अत्याचारों में सिर्फ दहेज ही नही बल्कि विधवा होना भी उस के लिए मौंत की सजा के समान हैं। 'भँवर जी' ने विधवा स्त्रीयों की दयनीय स्थिती पर लिखा हैं, बानगी द्रष्टाव्य हैं।

इन दीन दुखियान की समस्या कैसे सुरझै।
ब्याह है गयौ रे परि गोनौं नाँय भयौ रे॥
दूलह पहलेंई छोड़ि गयौ रे, समस्या कैसे सुरझै॥[20]

* * *

बेटी विधवा है गई रही बाप घर आय।
माता पिता अति दुखित हैं बुद्धू रहे सिहाय॥
बूढ़्‌ रहे सिहाय, इसारेन में बतराय में।
आगि फूंस कौ बैर कहाँ लौं समझामें॥
पुनर्ब्याह में नांक कटै समझें कुल हेटी।
सधवा फूली फिरै। दुखी है विधवा बेटी॥[21]

गन्दगी सिर्फ समाज की ही नही बल्कि बस्ती, दूकानों, छोटे-छोटे इलाको में पानी भर जाने के कारण जो गन्दगी होती हैं, जो कि मानव के स्वास्थ को हानि पहुँचाती हैं। उस की ओर भी लोगों का ध्यान आकर्षित किया उदाहरण इस प्रकार

है।-

गंदगी :-

भाँति भाँति मिष्ठान्न इमरती बालू साही।
दिन भर मांखी परै मैल की जमि जाय स्याही।।[22]

सिनेमा :-

स्वांग सिनेमा में समै, करौ न धन बरबाद।
कविता हिन्द सुराज कौ, चाख्यौ बढ़िया स्वाद।।[23]

फालतू खर्च :-

ब्याह होय याही साल, चढ़े जेवर जडिया सौ।
धूम धाम ते आयौ, लाओ नाटिक बढ़िया सौ।
बुद्धू रह जाय दंग देखिकें ब्याह बिशाला।
हंसन की होय कार बैठकै निकरै लाला।।[24]

इस प्रकार भँवर जी ने, सिर्फ समाज में पनप रही गंदगीं जो कि देश के स्वास्थ, व्यवस्था के लिए बुरी हैं। इस को दर्शाया, वहीं दूसरी ओर भारत की संस्कृति की प्रंशसा भी की। किसी भी क्षेत्र को इन्होंने छोड़ा नही, हर ओर अपनी द्रष्टि डाल कर ब्रजभाषा में उसे पिरों कर प्रस्तुत किया हैं। इन को समाज सुधारक भी कहा जाता हैं।

4. श्री यशकरण खिड़िया

श्री यशकरण खिड़िया राजस्थान के जैतपुर गाँव भीलवाड़ा के हैं। बचपन से ही इन्हें कविता में रुचि रही और पारवारिक माहौल भी इसी प्रकार का मिला। इन की रचनाों में आधुनिकता का पुट झलकता हैं साथ ही आध्यात्मिकता के भी दर्शन होते हैं। इन्होंने छोटी-मोटी कई पुस्तकें लिखी जिनमें 'खारी कौ बाढ़ बर्नन', शिवाशिव महिमा, यशकरण दोहावली (पहला भाग) प्रकाशित हैं। अप्रकाशित रचना में उद्बोधन, सवैयाबली, राजस्थान दोहावली, घरेलू-औषधालय, प्रश्नोत्तरी काव्य आदि।''

इन की रचनाओं के विषय न्यायलयों की रिश्वत खोरी पर भी लिखा गया-

न्याय मांग रंकन की कानन रुदम होत,

होत न दयादै हिय कान ना पसारे हैं।

उच्च कोर्ट शासन के आसन बिराज कर,

पूरन प्रपंच जाल जग में पसारे हैं।

मारे कैई तारे कैई चाहे कर डारे वहीं।

धूर्त धनवानन के विजय सहारे हैं।

पास नहीं पैसा तौ मसोस मन बैठे रहौ।

रिश्वत खवैया कछू जज्ज ये हमारे हैं॥[25]

चारण जाति के प्रति उपालम्भ करते हुए लिखा है -

क्षत्रिय के हित बीच नहीं, अपनौ हित मानें।

देत न उत्तम सीख, सिर्फ खुश करनौं जानैं॥

तप त्याग रहित, भय लौभ वश, कथन सत्य करते नहीं।

वे कविवर चारण वंश के, कहला नहिं सकते कही॥[26]

दोहा -

वे चारण निज वाक्य सौ, सतत बीर रस सींच।

कायर को भी वीर कर, ला रखते रन बीच॥[27]

समाज में व्याप्त बुराईयाँ जैसे विधवा विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, मृत्युभोज, दहेज आदि बानगी द्रष्टाव्य है -

रोकत विधवा ब्याह कौ, सतयुग में बन संत।

आखिर वे ही करत हैं, गर्भ स्त्राव शिशु अंत॥[28]

* * *

बाल वृद्ध अनमेल के, करहु न कबहुं विवाह।

इनतें उर में रहत हैं, कलह दुखानल दाह॥[29]

* * *

देव अधिक दहेज जो, ताकौ बेड़ा पार।

जो दहेज दैवै नहीं, बो डूबत मझधार॥[30]

समाज में नारी के सम्मान के लिए पुरुषों को समझाने का प्रयास भी किया गया। उदाहरण द्रष्टाव्य-

जैसौ तुम तिय सौ चहौ, अपने प्रति ब्यौहार।
तियहू तुमते चहत है, ताही के अनुहार॥[31]

राष्ट्रीय एकता –

भाषा मत से भिन्न जनि, समझहु मनुज समस्त।
वस्तु वही, चाहे कहो, हैण्ड दस्त या हस्त॥[32]

अनमेल विवाह –

बाल वृद्ध अनमेल के, करहु न कबहु विवाह।
इनसे उर में रहति है, कलह दुखानल दाह॥[33]

दहेज कुप्रथा –

देता अधिक दहेज जो, उसका बेड़ा पार।
दे सकता न दहेज तो, वह डूबत मझधार॥[34]

मदिरा के दोष –

री मदिरा मोहित किये, पण्डित सन्त प्रवीण।
प्रकट नहीं तो गुप्त हो, सब तेरे आधीन॥[35]

अछूतों का भूत –

होता रहत श्वान का, मन्दिर मध्यप्रवेश।
प्रतिमा दर्शन प्राप्ति का, हरिजन को न निदेश॥[36]

इस प्रकार श्री यशकरण खिड़िया जी ने विविध सामाजिक बुराईयों पर लिखा साथ ही अध्यात्म की ओर भी लिखा जैसे शिव महिमा, शिवा महिमा, ईश्वर महिमा, बुद्धदेव महिमा, अनोपदेश, हितोपदेश, मिथ्याचार, निंदा, सत्कर्म महिमा, भावात्मक एकता, धार्मिक समन्वय, नीति परक रचना। इत्यादि।

मानव का क्या धर्म हैं, उसे किस तरह से जीवन को जीना चाहिए, इनसे सम्बन्धित विषयों का भी समावेश इनमें दृष्टिगोचर होता है। ''मानवधर्म- सज्जनता, साहस, श्रमशक्ति, मानवता, परोपकारी, प्राकृतिक व्यवहार, शठता निन्दा, वद्धावस्था

की विकलता, चिन्ता-तृष्णा, मोह, आलस्य आदि की निंदा, जीवन की क्षणभंगुरता, संतोष सुख, साधु पहचान, गुरू-शिष्य, त्यौहार आदि। ग्राम जीवन, यम नियम, परिवार कल्याण, स्वास्थ परक दोहे, घरेलु औषधालय, अछूतोद्धार ब्राह्मण धर्म, नकली नेता।''

शिवमहिमा

सवैया–

जग शासक के पद सौं गिर के, प्ररदेशिन के पद दास भये।
दुख रौरव में हम डूब रहे, वर गौरव के दिन बीत गये।
शुभ नाम निशान मिटावन कौ, शिर पै प्रलपंकर मेघ छये।
करूणानिधि नाथ करों अब तौ, भयनाशक वे अवतार नये।।[37]

हितोपदेश–

कर न सकत शुभ कर्म कछु, मेरा जीर्ण शरीर।
ईश अन्त इसका करहु, विन आयम बिन पीर।।

*** * ***

अचला चित वृत्ति यें, प्रेम भक्ति में लीन।
उर अन्तर ईश्वर लखहु, ले विवेक दुरबीन।[38]

'शिव महिमा' में शिव की स्तुति करते हुए सवैया, दोहा, षटपदी द्वारा प्रस्तुत किया। हितोपदेश में 45 दोहें के माध्यम से लोगों के हित के लिए उपदेश दिए हैं।

इस प्रकार से श्री यशकरण खिड़िया जी ने, ब्रजभाषा में बहुत से विषयों पर अपनी रचनाएँ रची। इसलिए इन के काव्य को निम्न भागों में बांट सकते हैं। (1) भक्ति काव्य (2) नीति क्राव्य (3) ऐतिहासिक काव्य (5) उद्‌बोधन काव्य (5) व्यंग्य काव्य (6) राष्ट्रीय काव्य (7) प्रकीर्णक काव्य

इन्होंने भाषा डिंगल और पिंगल भाषा का भी उपयोग किया हैं और काव्य में दोहा, पद, सवैंया, कण्डलियों की रचना की हैं। जो इन के कवि कर्म के उच्च कोटी के ज्ञान को पूर्ण रुपसे दर्शाता हैं।

5. श्री फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'

श्री फतहलाल गुर्जर 'अनोखा' का जन्म 17 अक्टूबर 1939 में कांकरोली राजस्थान में हुआ। इन्होंने एम. ए. बी.एड तक शिक्षा प्राप्त की तथा शिक्षक के व्यवसाय में कार्यरत रहें।

'अनोखा' जी को बचपन से ही काव्य की ओर रुचि थी। कवित्ता-सवैया यह बचपन से ही बड़े चावसे पढ़ते तथा मौंका मिलने पर छन्दों की रचना भी कर देते। नौटकी, नाटक में भाग लेना इनका शौक था। इन को नाटक लिखने और खेलने के लिए गोल्ड मेडल भी मिला। इन्होंने 'स्कूल चलो अभियान''चीन पाक कौ ललकार' शीर्षक देकर पुस्तक लिखी। इन के प्रकाशित ग्रन्थ (1) अनोखा फैंशन फिरंगी (2) चीन पाक कौ ललकरा (3)बालगीत माला (4) लय के रहे पड़ाव घनेरे (5) आखर मंडिया मांडण (6) अनोखा संकीर्तन (7) गरबा गीत (8) द्वारकाधीश चालीसा (9) अनोखा आखर गीत हैं।

इन को ब्रज भाषा में कविता लिखने की प्रेरणा 'कवि घनश्याम दास' की कविताओं से मिली इन की पहली ब्रजभाषा रचना हैं -

'सिया हर लायौ पिया काहे वनवासिन की धरकैं मो जिया, नैनं फरके घरी-घरी।
नारी संताप महापाप जो लगैगौ नाथ, साप सूँ मिचैगौ, नाव पार हो तरी-तरी॥
घरनी बिन धरनी पै खाते हुंगे पछार, सोचै लंकपति मति कैसी करनी करी।
रजनी निहारौ ख्वाब कपि नैं उजारौ बाग 'फत्ते' कागबोल कही लंक तौ जरी -जरी॥[39]

इन के कविताओं के ज्यादातर विषय राष्ट्रीय सरोकार पर रहे। श्री कृष्ण सम्बन्धित छन्दों की रचना की। ब्रजरचना माधुरी में 'अनोखा' जी ने सरस्वती वन्दना इस प्रकार की हैं।

जय वीणा पाणि माँ दयाद्र दीन दासन पै,
सुभ्र हंस आसन पै, सासित महेश्वरी।
'अनोखा' सुबानी वरदानी स्वर साम गीत,
सोहे तन सेताम्बर, सक्ति गुण-आगरी॥
दग्धाक्षर नासिनी, प्रकासिनी पिंगल रस,

मानस वासिनी कमलासना कृपा करी।

वेदन बखानी औ ब्रम्हाणी सुरासुर ध्यानी,

सारदा सयानी घट बैठ मो वागेश्वरी॥[40]

गणेश वन्दना से शुरूआत कर अपना परिचय भी कविता में दिया काँकरोली जन्मभूमि पर दोहा कवित्त लिख कर प्रकृति वर्णन बहुत सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया। बानगी द्रष्टाव्य हैं -

काँकरोली वर्णन :-

द्वारकेस की द्वारिका ,लहरै राजसमन्द।

त्रिविध बयारी बहत है, सीतल मंद सुगन्ध॥[41]

प्रकृति वर्णन -

सखी फूलिगे चम्पा-चमेली-गुलाब-कनेर-जुही-कचनार कली।

बन बाग बगीचे औ खेतन में सरसों संग रंग मिलाय चली॥

ब्रज द्वारन पै औ कछारन पै मँडराये 'अनोखा' जू स्याम अली।

अरी डोल रही री बसन्त बनी ब्रज धाम गली वृषभान लली॥[42]

इन में इन्होंने बड़े ही सुन्दर ढ़ग से क्रमानुसार अपना, जन्मभूमि फिर वहां की प्रकृति का वर्णन बहुत ही प्रभावी रूप से किया हैं। 'नीति' परक विषयों में इन्होंने बचपन, जोबन, बुढ़ापा, देशी-विदेशी, लोभ, ऋृण जैसे विषयों पर लिखा हैं जैसे-

लोभ ना दबाय चित्त भ्रष्ट होइ जाय तेरौ,

पाप हो प्रकट अरू धर्म नस जायगौ।

धर्म के नसैं ते कुल नारिन तजैं है लाज,

बिगरि समाज वर्ण संकर कहायगौ।

ऐसे वर्ण संकर ते मिटिह कुल की कानि,

ध्यान, जपदान, भगवान बिसरायगौ।

जे ही वर्ण संकर गहैंगे जो पै क्रिया पिण्ड,

पितरन पानी देय नर्क में गिरायगौ॥[43]

दूसरी और 'ब्रज की महिमा' पर्यावरन महिमा, 'राष्ट्रीय अरू जन जीवन'

जीवदया, भक्ति, जैसें विषयों पर लिखा हैं।

कुण्डलियाँ का विषय नारी, भौतिकता, किसान पर बहुत ही सुन्दर लिखा हैं जैसा

नारी नर की खान है, जनमें वीर सुजान।
नारी विष कौ पान है, खाये तज दैं प्रान।।
खाये तज दैं प्रान, बनैं पागल मतवारौ।
नारिन की परछाँह परे, अन्धौ ह्वै कारौ।।
मतना हिय में मार, ''अनोखा'' स्वर्ण कटारी।
तुरकन बेगम धरौ नाम, हिन्दुअन के नारी।।[44]

इसी प्रकार गीत, झूलना, गरबा गीत, बसन्त (रसिया) होरी, पर इन्होंने लिखा है। वैसे ज्यादातर देखे तो यह प्रकृति के ज्यादा करीब लिखा हैं। भक्ति पर भी लिखा है। किन्तु सामाजिक विषयों पर कम लिखा हैं फिर भी इन्होंने जितना भी लिखा बहुत सुन्दर हैं। फलस्वरूप राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सन् 1998 में इन्हें सम्मानित भी किया गया।

6. डॉ. सियाराम सक्सेना 'प्रवर'

'डॉ. सियाराम सक्सेना का जन्म 04 अक्टूबर 1923 को कम्पिल जिला फरूँखाबाद उत्तर प्रदेश बाँरा में हुआ। इन्होंने शिक्षा की उच्च डिग्री प्राप्त करके डिग्री के आचार्य पद पर नियुक्त रहें इन्हें हिन्दी, अग्रेजी और संस्कृत भाषा का भी ज्ञान हैं।'

इन्होंने ग्यारह ग्रन्थों की रचना की हैं। गद्य-पद्य दोनों ही इन्होंने रचा हैं इन के ग्रन्थ हैं।

(1) सारदा वन्दना (2) प्रवर सतसई (3) प्रवर दोहावली (4) अनुराग गीतावली (5) श्री. राधागोविन्द देव शतक (6) हरि रस सिन्धु (7) ब्रजवाडी (8) रंगमाधुरी (9) बुझौवल (10) ब्रज कवित्त (11) अनुवाद ईशावस्थापनिषत

गद्य (1) मन तरंग (2) व्याग-उमंग।

'सारदे वन्दना' में इडा स्वरूप की वन्दना सत्य, कर्म, बुद्ध के रूप में की हैं वैंदिक दर्शन में वाग्देवी के पांच स्वरूप भारती, इडा, सरस्वती सरमा और दक्षिणा का

वर्णन किया हैं। बानगी द्रष्टाव्य हैं -

'इड़े ! सत्य की झिलमिल झाँकी

करत सतत धी सक्रिय।

कर्म क्षेत्र में सील सिवं की

स्फुटनाकारी तू है॥

बुद्धि क्षेत्र की सकल मलिनता

मेरी मैया झारि दै।

करु-करु किरपा मातु सारदे !

मन कंथा मैं सुमति डारि दै॥'[45]

'प्रवर सतसई' में दोहे जैसे छोटे छन्दो द्वारा गूढ़ भावना प्रस्तुत की है। जिसको व्यंग्य रूप में प्रस्तुत कर पाठकों को आकर्षित किया। व्यंग्य द्वारा गूढ़ विषयों पर लिखा जैसे उदाहरण इस प्रकार है -

'हम सेवक सबसै बड़े कहि नेता पग धोय।

'सत्याग्रह'सौं अग्र बढ़ि अब 'सत्ताग्रह' होय॥'[46]

'प्रवर सतसई के' के विषय हैं।

(1) प्रशस्ति आधृत हास्य-व्यंग्य (2) कर्म आधृतं हास्य व्यंग्य (3) शृंगारधृत हास्य व्यंग्य (4) व्यौसाय आधृत हास्य व्यंग्य (5) असंगति आधृत हास्य व्यंग्य (6) विडम्बना आधृत हास्य व्यंग्य (7) वाग्वैदग्ध जन्य हास्य व्यंग्य।'

उदाहरण -

पज्छम शतक (असंगति-आधृत हास्य-व्यंग्य)

'बिस्वंभर की अति कृपा' रकत चूसि कह जौंक।

यहि आभार-प्रदर्स सौं, चकपक गए प्रभु चौंक॥[47]

प्रवर दोहावली में शृंगार भक्ति, हास्य, व्यंग्य और नीति पर अलंकार युक्त 24 दोहों की रचना की हैं जैसे-

ग्राहक उपभोक्ता बन्यौ, मात्र भोग उपभोग।

अपेच्छान की उपेच्छा, रत बिलास संछोभ॥[48]

श्री राधा गोविन्ददेव शतक में श्री राधा, श्री राधा गोविन्द , विरह मिलन, गोपी प्रेमभाव, भक्ति द्वारा इन्होंने अपने भक्ति भाव को प्रस्तुत किया हैं। 'अनुराग गीतावलि' में ब्रज के राजा कृष्ण के प्रति राधा जी के और गोपीयो के प्रेम का वर्णन हैं।

'ब्रज कान्त कवित्त' में राधा कृष्ण के प्रेम का वर्णन हैं इस की भाषा ने इस की मधुरता को और ज्यादा बढ़ा दिया हैं। 'हरि-रस-सिन्धु' में कृष्ण का ही गुण गान किया हैं उन की सुन्दरता और लीलाओं का सुन्दर वर्णन हैं। 'ब्रजवाडी' में ब्रज के प्राकृतिक सौदर्य को प्रस्तुत किया हैं।

'रंग माधूरी' में हास्य व्यंग्य नीति को कुण्डलियों के रूप में प्रस्तुत किया जो कि अत्यंत सराहनीय हैं।

इन्होंने अपनी रचना में छन्द, अंलकार का बहुत अच्छे से प्रयोग किया भाषा में अलंकार गहने के समान हैं। जिसने सक्सेना जी के काव्य में इनका प्रयोग बखूबी किया है।

इस प्रकार डॉ. सियाराम सक्सेना जी ने रचनाएँ ब्रजभाषा में अनेक रचनाएँ रची। जिसे छन्द अलंकार ने उसमें चार चाँद लगा दिए। ज्यादातर कृष्ण की आराधना, नीति परख में अन्य विषयों पर लिखा हैं जैसे स्वार्थता, लोभ, सत्य, नम्रता, नारी, भष्ट्राचारी, आदि इन को भी व्यंग्य द्वारा प्रस्तुत किया है। इन की इसी कला ने इन्हें उच्च कोटी के साहित्यकारों में स्थान दिया हैं। और इन का नाम आदर से लिया जाता हैं।

7. श्री शिवचरण शास्त्री

भरतपुर जिले की डीग तहसील माहिं, गाँव कौरेर है एक राजस्थान राज में।
ब्रज की पछां में और पूंछरी ते डेढ़ कोस, पुरातन गाँव सिनसिनवार बास में॥
भगवती अंबिका के भगतन कुल माहिं, शिव नैं जनम लियौ ब्राह्मण समाज में।
प्रेम औ मान सहित निवसत सभी जन, प्रातहि उठत देत ध्यान गिरिराज में॥[49]

श्री शिवचरण शास्त्री इस कवित्त से ही इनका परिचय मिल जाता हैं कि ब्रजभाषा में इन्होंने जो भी रचा होगा वह ब्रज की मधुरता, सरसता, सुन्दरता को प्रकट करता होंगा।

इन का जन्म 11 नवम्बर 1931 को कौरेर, डींग भरतपुर में हुआ। इन्होंने बी.एड तक शिक्षा प्राप्त कर व्याख्यता के रूप में कार्य किया। इन को संस्कृत हिन्दी और ब्रजभाषा का ज्ञान हैं किन्तु ब्रजभाषा से इनका अधिक लगाव रहा। ब्रजभाषा में इन्होंने एंकाकी हास्य-व्यंग्य, संस्मरण, नई तर्ज की कविताएँ, ललित निबंध, विवरणात्मक छन्द, मुक्तक छन्दों की रचना की। अर्थात गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में शास्त्री जी ने ब्रजभाषा में प्रेम से लिखा हैं। इनकी पद्य रचना में वन्दना, अराधना जिस में सरस्वती वन्दना, गणेश वन्दना, देवी वन्दना, शिव स्तुति, श्री कृष्ण स्तुति, विष्णु स्तुति, भगवती दुर्गा स्तुति का वर्णन किया हैं। जिसमें बहुत ही सुन्दर रूप से ब्रजभाषा में देवी-देवताओं की अराधना की हैं। जिस का उदाहरण इस प्रकार हैं।

सिंह पै विराजै मातु, ससि सिर सोहे सदा,
शंख चक्रादि आयुध, आठ भुजा धारी है।
दीपित हैं तीन नेत्र, भाल में चमचमात,
बाजूबन्द भुज, गले, हार मणिधारी हैं॥
सुन्दर सिंगार धरि, सोहत सकल अंग,
शकती विपुल मैया, महिमा अपारी है।
श्रवन सोहै कुंडल, दीपत जोति मण्डल,
दुर्गति कौ खंड करै, जननी हमारी है॥[50]

'तीर्थ महिमा' वर्णन कृति में भी ब्रज के तीर्थों का गुणगान किया हैं जिसमें गोवर्धन महिमा, फलश्रुति, कामवन महिमा के द्वारा ब्रज के हर कोने का वर्णन अर्थात ब्रज के स्थलों, प्रकृति का बहुत ही सुन्दर वर्णन किया हैं। जैसे गोवर्धन पर्वत, दानधारी, गंगा जल, चक्रेश्वर महादेव, उद्धवकुण्ड, माधव विद्यालय, आदि का ब्रजभाषा में सुन्दर वर्णन किया है। स्थान की महत्ता श्री कृष्ण की अराधना द्वारा की हैं। जहां जहां कृष्ण है वह स्थान का महत्व उस स्थान को चार चाँद लगा देता है। उदाहरण द्रष्टाव्य हैं।

बंगाली साधु बसत, कीर्तन करे रहत,
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, धुनि हू समाई है।

गिरिराज जिह्वा यहाँ, जगन्नाथ रहैं यहाँ,

काँच मन्दिर है महा, शोभा बनि आई है॥

अष्ट सखी देवालय, गोप कुआँ पुरातन,

राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, विसाषा हू आई है।

कुण्डन कौ आचमन, करत अध समन,

थोरिक आगे भवन, भगवती माई है॥[51]

'कामवन महिमा' में कृष्ण के सुन्दर स्वरूप को प्रस्तुत किया हैं किस प्रकार मुरली, वस्त्र, कृष्ण से पर्वत, पुष्प की सुन्दरता बढ़ गई हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

चरन पहाड़ी चढ़ि, मुरली सोहति कर,

पीत पट सोहै तन, मन्द मुस्काय रहे।

सजल जलद गात, मोरमुकुट सुहात,

वैजन्ती मन लुभात, काम कूँ हरि रहे॥

कामवन शोभित हवै, पादप प्रफुल्लित ह्वै,

लता हू पुष्पित भई, आनन्द बढ़ि रहे।[52]

अर्थात ब्रज के सभी स्थलों जहां कृष्ण लीलांए किया करते थे मथुरा, वृन्दावन, कामवन, गोवर्धन आदि का सुन्दर चित्रण किया हैं।

'लीला निरुपण' में कृष्ण की विभिन्न लिलाओं को जैसे कृष्ण जन्म, मोहलीला, बंसी वर्णन, बंसी वादन, कंदम्ब, ब्रज, जमुना, गोपी, ग्वाल, गाय के साथ की मधुर लीलाओं का वर्णन किया हैं। कृष्ण काव्य ब्रज के हर कवि के काव्यकाव्य की मधुरता को बढ़ता हैं और भक्तिभाव को प्रस्तुत करता हैं उसी प्रकार शास्त्री जी के पद्य रचना को सुन्दरता प्रदान की हैं।

इस से उनके सुन्दर भक्ति के दर्शन होते हैं। जैसे बानगी द्रष्टाव्य हैं-

धनि-धनि वृन्दावन, गोकुल औ महावन,

मुरली मुरारि जहाँ नित्त ही बजात हैं।

गोपी निज भूली सुधि, धुन में मगन भई,

छोड़ि-छोरि निज गृह, श्याम ढिंग जात है।

मुरली की धुनि सुनि, नाचत मयूर गन,
यमुना हू गति रोकि, मन में लजात हैं।।
अप्छरा पतिन संग, विमानन चढ़ि-चढ़ि,
फूलन कूँ बरसात, अति हरषात हैं।।[53]

इस में बंसूरी के प्रभाव वर्णन किया गया हैं गोपी, मयूर, यमुना वन पर मुरली की धुन का प्रभाव दर्शाया है।

'ऋतु वर्णन' में गंगा वर्णन, पावस बसन्त वर्णन, शीत वर्णन का सुन्दर वर्णन कर ऋतुओं की सुन्दरता को बढ़ा दिया हैं। अपने प्रकृति के प्रति कोमल भावों को बहुत ही सुन्दर रचा हैं जैसे -

आम की मंजरी पीरी, बान कौ करति काम,
पलास कौ पीरौ पोप, धनुआ बनायौ है।।
भौंरन की कारि कारी, पोति ही प्रत्यंचा बनी,
चमकीली चाँदनी कौ, छत्र हू लगायौ है।।
मदमाते हाथी सम, बहत मलयानिल,
कोयल ने कहू कुहू, यशगान गायौ है।
शरीर विना ही सबै, बसन्त में व्यापि रह्यौ,
सजाइ सकल साज, कामदेव आयौ है।।[54]

इन्होंने भक्ति के अलावा समसामायिक विषयों को भी अपनी भाषा में पिरों कर पेश किया हैं। 'सुतंत्रता पौछ कौ भारत' के माध्यम से स्वतंत्रता के पश्चात के भारत की तस्वीर का चित्रण किया हैं कृषि, बिजली, औद्योगिक, रोजगार, शिक्षा, समानता, यातायात जैसे सामाजिक, वैज्ञानिक आर्थिक प्रगति को प्रस्तुत किया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

समाज में पिछड़े जो, आज लौं सोषित रहे,
उनके उत्थान काज, दृढ़ता बनाई है।
समाज में समानता, तिनहिं दिवाइबे कूँ,
पदन में आरक्षण, योजना चलाई है।

निःशुल्क शिक्षण की हू, व्यवस्था नवीन करि,
छात्रवृत्ति मिलै सबै, उन्नति कराई है।
छुआ-छूत, जाति-पाँति, भेद हू मिटाइ दियौ,
समाजवादी विचार, भावना बनाई है।।[55]

इन के अलावा मुक्तक, सौरंठा और कुण्डालियाँ अन्य फुटकर छन्दों की भी रचना की हैं। जिस में भक्ति के साथ सामाजिक चेतना को प्रस्तुत किया हैं। उदाहरार्थ

थोथौ चण बाजै घनौं, ओछौ अति इतराइ।
या दुनियाँ की रीति है, टीप-टीप बनि जाइ।।[56]

इसी प्रकार पद्य के साथ गद्य की भी रचना की जिस में एंकाकी 'अब तौ सोचौ', 'ढपोल संख', ललित निबंध 'ब्रजभाषा के छंदन' में व्यंग्य एवं उपालम्भ लिखें हैं जिस के द्वारा जन चेतना, परिवार कल्याण, लोभ प्रवति का चित्रण किया हैं।

इस प्रकार 'शास्त्री' जी ने गद्य में एंकाकी, ललित निबंध और पद्य में वन्दना अराधना, तीर्थ महिमा वर्णन, लीला निरूपण, ऋतु वर्णन, समसामायिक चित्रण, मुक्तक की रचना कर अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया। जो इन की बहुआमी प्रतिभा का एक स्वरूप हैं।

8. श्री किशनवीर यादव 'ब्रजवासी'

श्री किशनवीर यादव 'ब्रजवासी' का जन्म 15 नवम्बर 1968 को काँमा में हुआ। इन के काव्य गुरू 'श्री रामशरण पीतलिया'जी हैं। जिनसे प्रेरित हो इन का ब्रजभाषा की ओर रुझान हुआ। इन्होंने गद्य, पद्य दोनों विधाओं में रचना की।

पद्य में कवित्त, सवैया, दोहा, कुण्डलियाँ, छप्पया, रोला, बारहमासी लिखे दूसरी ओर नवगीत, गद्यगीत, अतुकांत कविता लिखी।

गद्य में 'टोपी की बला ते', 'टिकट लैके चुनाव लड़ैगौ', 'चोर अपनैन की', 'गले की घंटी टेलीफोन', 'शौक सुसरार कौ', 'ब्रज की लट्ठमार होरी', नंद के आनंद भए जय कनैया लालकी, वल्लभ संप्रदाय के प्रर्वतक 'श्री मदवल्लभाचार्य जी' जैसे शीर्षक देकर गद्य रचना की हैं।

कवित्त में भक्ति भावना, राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक, श्रृंगार, वर्तमान परिप्रेश्य

में आर्थिक, भष्ट्राचार, अत्याचार प्रस्तुत किया हैं साथ ही रचनाओं हास्य की भी रचना की हैं। कुछ बानगी इस प्रकार हैं -

हास्य

आठवीं पढ़ी है बहू पाम धरा धरै नाँय,
बनी डोलै टिपटॉप काऊ कूँ गिदानैं ना।
शादी भोज पारटीन होटल अटैण्ड करै,
भारत की मूल रीति-नीति कूँ पिचानैं ना।
हिन्दी बोलबे में याकूँ कैसी लाज आय रही,
तोरै अँगरेजी टाँग ए.बी.सी.डी. जानैं ना।[57]

भक्ति की भावना को प्रकट करते हुए सभी संकटो से सबको उबारने वाले नंदलाल के प्रति अपने भावों को इस प्रकार ब्रजभाषा में लिखा हैं -

संकट काट दिए सबरे सबके तुमनैं पल में गिरधारी।
कोय न जानत है महिमा तुमरी नदनंदन हे बनवारी।।
बारहिंबार लियौ अवतार हरौ जग भार दयानिधि भारी।
आन सहाय करी सबकी अरू डूबत नाब हु आय उबारी।।[58]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवन बिता रहें, मानव की विडम्बनाओं को प्रस्तुत करते हुए दहेज और अनीति, जैसे विषयों को दर्शाया हैं। दहेज की प्रतारणा लड़की और माता-पिता के लिए किस तरह से रोग बना है, उस का मार्मिक चित्रण करते हुए लिखा है-

रोबत मात-पिता घर में जब दीखत नाँय उनैं उजियारौ।
भागन कूँ सब कोसत हैं भगवान तुम्हीं अब पार उतारौ।।
जेबर बेच दियौ सिगरौ धरवाय दियौ गिरवी घर सारौ।
दानव आज दहेज भयौ सब खाय गयौ हमकूँ बजमारौ।।[58]

'बारहमासी-कामवन महिमा' के द्वारा कामवन की महिमा का वर्णन करते हुए वैशाख, जेठ, फागुन, ऋतुओं द्वारा प्रकृति का सुन्दर सजिला चित्रण किया हैं उदहारण द्रष्टाव्य हैं

आबै कातिक मास होत तैयारी दीवारी।

जितै देखिए उतै खुशी कौ आलम है भारी।।[60]

इस प्रकार 'श्री किशनवीर यादव' जी ने पद्य में ब्रजभाषा काव्य के भण्डार की वृद्धि की हैं। इनके विषय भक्ति के साथ सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रचे बसे हैं। कवित्त, सवैया, कुण्डलियों द्वारा अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया हैं।

दूसरी ओर इन्होंने गद्य में भी रचनाएं रची जिसके ज्यादातर विषय समाज के ईदगिर्द घूमते हैं। जिसको इन्होंने एंकाकी, लघुकथा, संस्मरणात्मक के रूप में प्रस्तुत किया है। 'टोपी की बलाते' में व्यक्ति की प्रकृति में बदलाव को संस्मरणात्मक के रूप में रचा, 'टिकट लैकें चुनाव लड़ैगौ' में व्यंग्य द्वारा आम आदमी पर व्यंग्य किया हैं। 'चोंट अपनेन की' में लोहे और सोने के माध्यम से प्रेम को प्रकट किया हैं। इसी तरह 'गले घंटी टेलीफोन' 'शौकें ससुरार कौ' में व्यंग्यात्मक रूप में वर्तमान का चित्रण किया हैं।

उसी तरह ब्रज की संस्कृति परिवेश 'ब्रज की लठ मार होरी' नंद कै आनंद भए जए कन्हैया लालकी और वल्लभ संप्रदाय के प्रवर्तक श्री मद्‌वल्लभाचार्य जी के द्वारा प्रस्तुत किया हैं।

इस प्रकार 'श्री किशनवीर यादव' जी ने ब्रजभाषा काव्य के साहित्य के गद्य और पद्य दोनों के भण्डार में वृद्धि कर अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया हैं। ब्रजभाषा के। प्रति प्रेम इन की रचनाओं द्वारा देखा जा सकता हैं।

9. श्री जय शंकर प्रसाद चतुर्वेदी 'जय'

भरतपुर राजस्थान में जन्में 'श्री जयशंकर प्रसाद' जी ब्रजभाषा के कवियों में बड़े ही मनोहर कवि माने जाते हैं इन्होंने ब्रजभाषा में भक्ति, ऋतु, प्रकृति के साथ-साथ नीति, हास्य, समसमायिक विषयों पर भी लिखा हैं। कृष्ण के प्रति भक्ति भाव के प्रकट करते हुए लिखा हैं -

नैन मूदि देखत हिये, वस्यौ सलौनौ स्याम।

कर जोरे भली अजहु, ठाड़ी करत प्रनाम।।[61]

प्रकृति के प्रति इन का विशेष रूझान रहा है। प्रकृति के विविध रंगों को

ऋतुओं के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं जिन के शीर्षक 'ब्रज की शोभा हैं', 'आई है', 'आँगन में', 'धार हे', 'बरसै', 'रितुराज की', 'बंसत', 'ब्रज रचना माधुरी में रचा हैं।' कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं

छाई हरियाली रही सब ठोर आस पास, फूली फुलबारी फूलफूल भरी लाज की।
नाचत मयूर मन मोद भरे कानन में, बागन अचूक कूक कोकिल समाज की।
डोलत उमंग भरे, जहाँ तहाँ नारी नर, सुधि–बुधि भुलाय सो सारे ग्रह काज की।
जोहत हैं बाट ये ललित निज नैनन सौं, आबत सबारी इतै आज रितु राज की।[62]

उसी प्रकार 'कुसुमावलि' के माध्यम से हास्य, नीति जैसे विषयों पर जैसे शोषण के खिलाफ, रिश्वतखोरी, चोरबाजी, सिफारिस, दलबदल, पांखड, अध्यापक, वकील, उच्च अधिकारी, डॉकटर, ने व्यवसाय को व्यापार बना दिया। इन सब पर 'समस्यापूर्ति' के विशाल भण्डार का सृजन किया हैं ब्रज रचना माधुरी में कलयुगी महापुरुष के माध्यम से आज के नागरिक भक्ति छोड़ नय-नय फैंशन में फस कर समय की बर्बादी हो रही हैं। इस का बखान किया। बानगी द्रष्टाव्य हैं।

रिश्वत –

रिसवत लैवे के धनी, चोर बजारी बैर।
गुरण ढूंठि सिकार कौ, लावत है नित घेर॥[63]

* * *

भजन ध्यान की बात में, जिनकौं नहीं विसवास।
पोलिस जूतन की करै, भक्ति भाव सौं खास॥[64]

आज का मानव समय और रूपया किस तरह व्यर्थ गवा रहा हैं नय-नय फैशन में पश्चिमी सभ्यता को अपना धन लुटा रहा हैं। इसी भाव को दोहे के माध्यम से इस प्रकार लिखा है -

घर भोजन नीरस लगै, होटल में जो खाहिं।
सुरा माँस के योग कौ, सब मिलि खाहिं सराहिं॥[65]

होरि के छीटा के माध्यम से होली जो कि बड़े चाव से मनाई जाती थी आज मँहगाई ने इस के रंगों को फिका कर दिया है। इस को इस प्रकार लिखा है -

महँगाई के चरक रंग, रंगे गरीब अमीर।

रंग होरी कैसै चटै, या कारे पै बीर॥[66]

इसी प्रकार बुरे काम, लोभ, क्रोध, मोह, स्वार्थ, ढोगी लोगों पर भी कटाक्ष करते हुए लिखतें हैं कि आज कल लोग अपना काम निकल जाने पर भूल जाते हैं बुरें कामों से बुद्धि भ्रष्ट होती जा रही हैं। लोभ पाप को जन्म दे रहा हैं। क्रोध ने सब को एक दूसरे से दूर कर दिया हैं लोभ के कारण इच्छाओं के पूर्ण न होने पर क्रोध ने जन्म ले कर मानव के मानसिक सन्तुलन को बिगाड़ दिया हैं। उसे क्रोध में अपने तन मन की सुध नही रहती हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

लोभ बुद्धि सौं कहत हैं, तू चुपि बैठि अजान।

चाम गए हू राखियत, दाम मीत को मान॥

* * *

लोभ जनक है पाप कौ, पालें पोसे पूत।

नेह सनों लाये गरे, ज्यों बिमारी छूत॥[67]

इसी प्रकार भ्रष्टाचार पर कटाक्ष करते हुए व्यापारी अध्यापक, बाबू, नेता, डॉकटर, साधु, वकील आदि को अपना कर्म सही ढंग से ना निभाते हुए रूपयों के पीछे भाग कर अपने कर्म से गद्दारी करते हुए बताया गया हैं बानगी द्रष्टाव्य -

उत्तम बही वकील है मछली लेइ फँसाइ।

बात करै जादू भरी, बिगरी देइ बनाइ।

बिगरी देइ बनाइ, झूठ कूं सच दरसावै।

बहस जोर की करै, पसीना झरझर लावै।

कह संकर कविराय, करै जो गुत्था गुत्म।

पोथा राखै बड़े मुवक्किल फाँसै उत्तम॥[68]

आज के जीवन पर 'आज कौ जीवन', 'कुंडली बारे आयौ है', 'पक्को नेता', जैसे शीर्षक दे कर सवैयो की रचना की। इसी प्रकार हिन्दी दिवस पर भी लिखा हैं उदाहरण द्रष्टाव्य है -

भारतवासी पूत की, हिन्दी माता एक।

मान करहु आदर करहू, तजि कुतर्क की टेक।[69]

इस प्रकार 'जय शंकर प्रसाद' 'जय जी' ने ब्रजभाषा में भष्ट्राचार, बईमानी, शोषण, छूआछुत, पश्चिमी प्रभाव से देश के बदलते मूल्यों, धन का लोभ, क्रोध, प्रीत, मोह जैसे शीर्षकों के माध्यम से 'कुसुमावली' में दोहा, सवैया, कुण्डलियों के माध्यम से भक्ति, नीति को दर्शाया हैं। भाषा भी इस प्रकार उपयोग की है कि पाठकों को सरल रूप से समझ आ जाए। इसलिए पाठकों ने इन के काव्यों को पंसद भी किया है।

10. श्री प्रभुदायल 'दयालु'

1936 में हिन्दी भाषा की उन्नति की राष्ट्रीय स्पर्धा में प्रथम श्रेणी से साहित्य रत्न की उपाधि प्राप्त करनेवाले 'दयालु' जी ब्रजभाषा के बहुत ही सशक्त कवि हैं। इन्होंने ढ़ेर सारी रनचाएँ रची किन्तु समस्या पूर्ति के बेजोड़ कवि कहे जाते हैं। ब्रजरचना माधुरी में इन्होंने विभिन्न विषयों पर लिखा हैं। जैसें श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, भजत हैं, वारैगें, गणेश, वसाये हैं, हमारी हैं, करियै, कृष्ण नाम पायो हैं, रखवारे श्री कृष्ण जन्माष्टमी जैसे शीर्षकों द्वारा भक्ति भावों को प्रस्तुत किया हैं जिस में कृष्ण की भक्ति प्रचुर मात्रा में हैं वानगी द्रष्टाव्य हैं।- कृष्ण नाम पायो हैं

मथुरा में जन्म लिये, नाम पायो वासुदेव,
गोकुल में आयो नन्द नन्दन कहायो।
गोपिन संग नृत्य कर नाम पायो गोपीनाथ,
गौ वच्छ पारे ते गोपाल है सुहायो है।
केशौ संहार नाम धारौ श्री केशव देव,
नवनीत चोरे नाम तसकर धरायो है।
गिरिवर कों धारे ते कहायो गिरधर लाल,
कारी रात बायो याते कृष्ण नाम पायो है॥[70]

गणेश –

विधन हरन मंगल करन, लम्बोदर सुख खान।
दया करिये मो दास पै, दीन हीन मोहि जान॥ [71]

ब्रजभाषा कवि ब्रज के प्रकृति और होली के बारें में ना लिखे तो वह अधूरें हैं। इन्होंने भी यह कार्य कर पूर्ण रूप से ब्रजभाषा के कवियों में अपना स्थान बनाया शरद वर्णन, रितुराज सप्तक, बंसत है, बंसत की होरी हैं, शिशिर तुषार ने चाही ते गंगा को, काशी प्रति पियारी, गुलाल लाल डारोनी श्री कृष्ण जन्माष्टमी, बसन्त की छाई है, ब्रजरचना माधूरी में इन शीर्षकों के द्वारा ब्रज की सुन्दरता का वर्णन किया हैं दूसरी ओर रितु, बंसत, होली का सुन्दर चित्रण किया हैं जैसे -

''रितुराज''

चटक-चटक चारू, चुटकी दै बागन में,
कलिका भी देखो आजु क्रीड़ा कर फुदकती।
मंद मंद मारूत भी खींच कै सुगन्धी कौं,
नाक में पठाकैं मोद मन बीच भरती।
दीखत है हरी लता कुंज पुंज वीथिन में,
खेतन में सरसों फूल फूल मन हरती।
चहक रही हैं चारू चिड़िया हू मोदमयी,
आगत बसंत कौ ये स्वागत हैं करती॥[72]

''होली''

भवन के अङ्क में विछाय परयंक एक,
बैठे नंदराय अङ्क जोड़ी श्याम गोरी है।
सुखमा सदन दिपै वदन मदन कौसौ,
मानो विधि सृष्टि छवि इन पै निचौरी है।
आये सब गोप ग्वाल, खेलवे फाग ख्याल,
लम्बे लम्बे लठ हाथ रोरी की झोरी है।
मनत 'दयालु'जब लगन गुलाल लागी,
हर्ष मई ध्वनि छाई, आज रंग होरी है।[73]

इस के अलावा अन्य विषयों पर भी लिखा हैं, जिस का शीर्षक इस प्रकार हैं 'सोय रही', मे धर्म-अधर्म, महाराना प्रताप की महारानी अरू एक भोलनी संवाद,

समस्या-पराये, अखरा बढ़ाय देत नखरा कवी के दरबार, में तट जायगी, भाग के बंद कपाट भये, आदि निम्न विषयों द्वारा विभिन्न संवाद, समस्याओं पर लिखा हैं।

जैसे निम्न कवित्त में सन् 1924 की बाढ़ की स्थिती का वर्णन हैं।

पानी की बाढ आई प्रजा में कुलाहल मचौ,
पानी के रोकबे को रंग बहु रचायौ है।
पानी नें जोर कियो, गिर्द पथ तोड़ दियो,
तीव्र गती सों चरण खाई में बढायौ है।।
नृपति मुकुट मणि दयालु श्री कृष्ण सिंह,
कियो परिश्रम चित्त नैंक न हटायौ है।
बार-बार बारि ते बचौ है पुर बिहारी जू,
रावरी कृपा नें बूढत ते बचायो है।।[74]

बधाई देते हुए भी इन्होंने ब्रजभाषा में अनुठा प्रयास किया जिस में श्री हिन्दी पुस्तकालय डींग की स्थापना पर सुखद बधाई पर 'बधाई' लिखी हैं। श्री ब्रजेन्द्र सिंह जी की 19 वी वर्षगाठ पर लिखा है। जो बहुत सुन्दर शब्दों में हैं जैसे-

''बधाई''

यद्यपि सदैव से दीर्घपुरी शोभा खान,
पंडित पुरान जो जहांन ने बताई है।
भूपति ब्रजेन्द्र की ये सुर पुर वाटिका सी,
शोभा तीन लोक की भवन न समाई है।।
मनत दयालु धरा धाम पै स्वर्ग थापि,
सांची इन्द्र पदवी सुजान नृप पाई है।
शोभा बढाये श्री ब्रजेन्द्र के शुभागम पर,
प्रकृति स्वरूपा दीर्घ देती सु बधाई है।।[75]

* * *

'श्री ब्रजेन्द्र सिंहजी की 19 वी वर्ष गाठ पे'

आनन्द आज महा ब्रज में, ब्रज राज की वर्ष नवीन सुहाई।

स्वर्ण सुगंध समेत सी सोहत, भूप व्रजेन्द्र की चोखी अबाई॥
भूपति भक्ति रंगे ब्रजवीर, परी निध मानों इन्हैं कहीं पाई।
लोचन लाभ दियो विधनें, इन कोलख कौन की चाह अधाई॥[76]

'अभिलाषा' द्वारा अपनी अभिलाषा को प्रस्तुत किया हैं। देश में कलेश ना हो हिन्दी भाषा का उच्च स्थान हो ऐसी अभिलाषा की है। बानगी द्रष्टाव्य हैं -

देश में क्लेश का न लेश रहै दीना नाथ,
सम्बत हो नीका, द्रवौ दीनन के हाल पै।
संतति उदार शुचि शोभा अगार बनें,
कीरत कमावै इस वसुधा विशाल पै॥
मनत 'दयालु' नट नारी हों ब्रजेश भक्त,
ज्ञान वान होके करै अधिकार काल पै।
भारत के लाल रत राखें सब हिन्दी में,
हिन्दी शुचि बिन्दी दिपै भारती के भाल पै॥[77]

इस प्रकार 'दयालु जी' ने ब्रजभाषा में रचना कर ब्रज साहित्य भण्डार में वृद्धि की हैं। इन्होंने समस्या पूर्ति पर ज्यादा लिखा हैं। लोगों के कष्टों को जान कर अपने भावों द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं प्रकृति और भक्ति से भी जुड़ें रहे साथ ही कुछ व्यक्तित्व पर भी लिखा। इस प्रकार राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा कवियों में सशक्त कवि के रूप में अभर कर आए।

11. श्री हीरालाल शर्मा

गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा को ब्रजभाषा के माध्यम से प्रस्तुत करने वाले 'श्री हीरालाल शर्मा का व्यक्तिव की तरह कृत्तिव भी बहुत अच्छा हैं इन्होंने सूरदास मतिराम की तरह काव्य को कुण्डली, छन्दों के साथ प्रस्तुत किया हैं। ब्रजरचना माधुरी में सूरदास, गाय की महिमा, ब्रज के पच्छी, लाल बलवीर, लोकमंच, ब्रजकाव्य माँहि समन्वयवाद, कविवर सूदन, मतिराम, भरतपूर, फादर बुल्के कौ श्रद्धानजलि, लठिया जाके, जैसी बहैं बयार, सन् 78 में सी.आई की विजय पर, शिव भक्ति न नीर बरसते हैं, गद्दी के भूखे, चार संग हँसि-हँसि बातियां, बसन्त के दो

रूप, होरी मेघा, चम्पालाल, मुजुल पै, दुर्दसा, अपने अभिनन्दन के सामै, महँगाई, सार्वजनीय सिच्छा, अलक, कवित्त, ब्रज मंहि देवी पूजा, जसूदा, की बिथा, सत्ताधारीन के नाम, नाथद्वार में, आदि शीर्षक देकर विभिन्न विषयों पर अपने भावों को ब्रजभाषा में प्रकट किया। कुछ बानगी द्रष्टाव्य हैं -

'सूरदास'

सूरा तोकों धन्य है, सरजन कियौ अपार।
बाल कृष्ण लीलान सों, भरि डार्‌यौ भण्डार॥
भरि डार्‌यो भण्डार, कहूँ पै धेनु चरावै।
चन्दा माँग मातु, कहूँ नवनीत चुरावै।
ग्वाल करें किलकारि, मोद मन है भरपूर।
बात्सल्य बेछोर, धन्य तोको है सूरा॥[78]

'गाय की महिमा'

कोटि-कोटि देव जाके अंग-अंग बास करें
दरसन सुहाव सों, गति-मति दानी है।
घास-पात खाय खात, अलभ सुलभ करै,
विपुल धन-धानि की अनुपम खानी है।
पंचगव्य प्रासन सों आधि-ब्याधि भाग जात,
जग नै जननि सम सजग ह्वै जानी है।
गोधन के गौरव कौं, कहाँ लौं बखानौ जाहि,
ब्रज माँहि ब्रजराज, आप सनमानौ है।[79]

''ब्रज के पच्छी''

चातक चकोर, मोर चौ-दिसि मचावें सोर,
झिल्ली झनकार झाँझ, झंकृत कर देत है।
दादुर दुकारें सुक-सारिका सुनावें गीत,
भोंरन की भीर मडराबै खेत-खेत है।
कोकी-कोक किलके करें, केलि कानन माँहि,

खंजन कपोत कलहंस कहूं सेत है।
सुनकें सुरीली तान, वेदना बिलाय जात,
कूक कोकिला की हूक, हिय की हरलेत है।[80]

''लाल बलवीर''

घुमड़त कवित निकुंज बनि, सीतल सुरभि समीर।
अल्पज्ञात ब्रज कविन में, वहै लाल बलवीर।।
वहै लाल बलवीर, माल अलबेली गूँथी।
रंग-बिरंगे छन्द, 'हजारा' गन्ध अनूठी।।
प्रकृति सरस सिंगार, भगति नद-नारे उमड़त।
मोर मचाबैं सोर, छोर आनँद धन धुमड़त।।[81]

''लोकमंच''

मंच लोक समृद्ध अति ब्रज कौ परम पुनीत।
रास राम लीला भगत, नाट्य बाद्य संगीत।।
नाट्य बाद्य संगीत, ब्रह्म राधे सँग नाचै।
झांझ-ढोल मृदंग, चंग बंसी सँग बाजै।।
पूरन परमानँद बहै, रंच न कछु परपंच।
निसि-दिन रूप नवीन सों, लसै लोक ब्रजमंच।।[82]

सूरदास में श्रीकृष्ण का गुणगान करते हुए सूरदास की प्रतिभा को दर्शाया। 'गाय की महिमा' में ब्रज के प्राकृतिक सौदर्य के दर्शन होते हैं। 'ब्रज के पच्छी' में भी प्रकृति वर्णन है। इस प्रकार 'लाल बलवीर' में और लोकमंच में भी बलवीर के व्यक्तित्व और लोकमंच के वैशिष्ट को दर्शाया हैं।

इस के अलावा मँहगाई, शिक्षा, समन्वयवाद, और राजनीति पर भी अपने विचार काव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उदाहरण इस प्रकार है।

''सार्वजनीय सिच्छा''

सिच्छा सार्वजनीन कौ, तुम भर रहे हौ स्वाँग।
अजहूं समझो नहिं कहा, लोकतन्त्र की मांग।

लोकतन्त्र की मांग, कै बालक सिकुर रहे ए।
चौरे काटें निसा, सौ सों ठिठुर रहे एँ।
झूंठन खामे छीन, सदा मांगत रहें भिच्छा।
ढोल–बोल की पोल, न फैले घर–घर सिच्छा।[83]

''महँगाई''

महँगाई कौ है नहीं, भैया कत हूं ओर।
नाहीं जाकौ लखि परै है कित माऊं छोर।
है कित मांऊं छोर, कै तसकर पनप रहेए।
डोली–पहरेदार संग, छिनराय भसे ए।
स्वामिन सों कर रहे, कुसेवक घोर दगाई।
कहाँ लों जनता सहै, कमर तोरन महँगाई।।[84]

ब्रज काव्य माँहि समन्वयवाद

ठौरि–ठौरि पै लसत है, नाहे नेंकु विबाद।
झलकत है ब्रज काव्य मैं, सुद्ध समनबै बाद।।[85]

'गद्दी के भूखे'

भूखे गद्दी के निपट, रहैना जन हुसियार।
चरना–देवी–बहुगुना, फिरि मिलि गए इक बार।
फिरि मिल गये इक बार, बगल में लिए अड़ानी।
मारीची है खाल, बिसभरी मीठी बानी।।[86]

राजनीति में गद्दी के लिए झगड़ा, द्वेष, पाखंड की भावना को बढ़ाने वालो पर कटाक्ष किया है। 'सत्ताधारीन' के नाम में भष्ट्राचार, स्वार्थी नेताओं का चित्र खींचा हैं।

वही दूसरी ओर ऐसे लोगों को सौ-सौ बार नमन किया जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए रक्त दिया लोकतंत्र समाजवाद के झंड़ें को फहराया। उन को नमन किया। साथ ही ब्रजभाषा के प्रति अनन्य प्रेम को प्रस्तुत किया इन्होंने एम. ए. अग्रेजी विषय में किया। किन्तु रचनाएँ ब्रजभाषा में रच कर अपने ज्ञान को चारों ओर फैलाया, भक्ति, अनुराग और समसमायिक विषयों में रचना कर अपने भावों को प्रकट किया

और अग्यात ब्रजभाषा साहित्य रत्नों में अपनी आभा को फैलाया।

12. श्रीमती माधुरी शास्त्री

'श्रीमती माधुरी शास्त्री' 22 जुलाई 1938 में कानपुर में जन्म लिया। ब्रजभाषा काव्य में अपना अलग स्थान बनाया। इन्होंने गद्य पद्य दोनों ही क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया।

वेरूढ गई, विष्णु लक्ष्मी, गोरी की चिरौरी, सौत, ससुराल, प्रसव पीड़ा, काकि की, दीवार ई दीवार, बसंत कौ कहा काम, रहिमन आप ठगाद्ए, नंगी तरवार, एक प्लेट छिपकली नामक कहानीयों की रचना ब्रजभाषा में की है।

'वे रूढ़ गई' कहानी में पति पत्नी के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला हैं। उसी प्रकार 'शिव-पार्वती' के माध्यम से भी पति पत्नी के सम्बन्धों पर प्रकाश डाला। 'एक प्लेट छिपकली' एक महिला क्लब की कहानी हैं। इस प्रकार कहानी के अलावा लघु कथा, निबंधो की भी रचना की।

पद्य में 300 दोहों की रचना की जिस में विभिन्न विषयों, विभिन्न भावों को प्रस्तुत किया।

'श्वान-चालीसा' एक स्वतंत्र रचना हैं जिसमें पर्यावरण नारी, रोटी, महँगाई का चित्रण किया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं

रोटी चूर दूध भरि प्याला।
करत कलेऊ सेरू लाला।। [87]

'जनसख्या' में बढ़ती हुई जनसख्या के कारण रोटी, कपड़ा, मकान की बढ़ती मुश्किलों को रचा हैं राम राज्य के सपनें को साकार करने के लिए जनसंख्या वृद्धि को रोकने का आग्रह किया हैं। बानगी द्रष्टाव्य हैं -

जनसंख्या या देस की, पल-पल बढ़ती जाय।
माखी माछर ज्यों बढ़ैं, अब कछु करौ उपाय।।
कपड़ा तन पै है नहीं, ना रोटी भरपूर।
घर जिनकौ फूटपाथ है, का विधि जिएँ मजूर।।[88]

'विकास व्यंग्य' में इन्होंने कहा हैं कि विकास हो नही सकता ऐसा नही हैं

किन्तु भ्रष्ट नेताओं ने इस विकास को रोक रखा हैं। देश की बागड़ोर भ्रष्ट नेताओं के हाथ में है। उदाहरण -

नेता नाटक करि रहे, मार रहे हैं हाथ।
इनकूँ है धोखा भयौ, सबहि जायगौ साथ॥[89]

'आखर' में ज्ञान की महत्ता को प्रस्तुत किया हैं। शिक्षा से सदा मान सम्मान मिलता हैं। शिक्षा को महत्व तो दिया सात ही 'बेटी' में बेटी के जन्म को अभिषाप माननें वालों को सीख दी हैं कि बेटी आपार धन का भण्डार हैं रोंग नही। उदाहरण इस प्रकार हैं।

'आखर'

आखर में ताकत घनी, आखर उन्नति बीज।
आखर-आखर जब मिलैं, सुरसति जात पसीज॥
आखर-आखर जोरिकैं, पंडित बनैं महान।
व्यवहारिक पद ना पढ़ै, बिनसे रहे अजान॥[90]

* * *

''बेटी''

बेटी लक्ष्मी सारदा, बेटी घर की शान।
अन्नपूर्णा सुता कौ, मत कर तू अपमान॥
बिटिया घर की शान है, नाँहि अनादर जोग।
अनपढ़ रखिकैं ब्याह दी, लगिहैं तिहि सौ रोग॥[91]

'रोटी' में रोटी के महत्व को प्रस्तुत किया। इस को जीवन की धुरी के रूप में दर्शाया हैं। वही 'मारे महँगाई' में महँगाई और 'ऐसे रखवारें हैं' में आज की शासन व्यवस्था, नेताओं की चालों का वर्णन किया।

''रोटी''

रोटी जीवन की धुरी, रोटी सौं संसार।
सब सारन की सार यह, नतरु सबहै निस्सार॥[92]

* * *

''ऐसे रखवारे है''

बड़े-बड़े ओहदान बैठे खूब तीर तान,
बगुला सौ बेस तापै तमगा कतारे हैं।
रकम के बिना कबौं काहू कौ न दूख हरैं,
टूट के परे हैं जैसैं सिग भुखमारे हैं॥
धापे धींग तौऊ हाथ मारते फिरैं सदैव,
कारे-कारे काम कर नाम हू निकारे हैं।
गुंडन कूँ जानैं खूब, अड़रन कूँ जानैं तऊ,
आँखि मूँदि बैठे रहैं कैसे रखवारे हैं॥[93]

प्रकृति और भक्ति के रंग को भी अपनी प्रतिभा द्वारा व्यक्त किया। 'बरसाती रात' में प्रकृति के बदलते रूप को व्यक्त किया। 'कटै न बैरिन रात' में कृष्ण मथुरा चले गए है राधा कृष्ण की याद में गोपी से अपनी व्याकुलता का वर्णन कर रही हैं बानगी द्रष्टाव्य हैं -

''कटै न बैरिन रात''

आज सखी तोसौं कहूँ, हिय निसि दिन अकुलात।
मोहन मथुरा जा बसे, कटै न बैरिन रात॥
चंदा की मृदु चाँदनी, जारै डारत गात।
मलय पवन जद्यपि चलत, कटै न बैरिन रात॥[94]

''बरसाती रात''

मंद मंद बरसत जलद गरजत हैं थम जात।
चमक रहे पटबीजना ये बरसाती रात॥
कुँवर सुनै बरबर हँसै, ये कैसी बरसात।
मुदित सबै मेंढ़क भए, लखि बरसाती रात॥[95]

इस प्रकार विविध विषयों पर कवित्त, दोहो अदि की रचना की। जिसमें भक्ति, प्राकृतिक, आधुनिक विषयों का समावेश हैं। जैसे सुख कै छुआरें से देश में हो रही धाँधली सेलोगों को एक वक्त की रोटी न मिलना, लोगों का सुख चैंन छीन जाना देश

से अनीति के मिटने की कल्पना की हैं।

कवि पद्माकर, सूरदास, तुलसी की महत्ता का वर्णन किया। माँ शारदा, भगवान, वेणु बजावत, स्याम, भगवती, संगीत, विध्नहरन, जैसे शीर्षक देकर सुन्दर सजीव वर्णन करते हुए भक्ति भावना का परिचय दिया। होरी, रंग गई स्याम-स्याम, कहाँ हौ लाला, बसत महकन लगयौं के द्वारा अपनी प्रकृति और संस्कृति के प्रति प्रेम को दर्शाया।

इस प्रकार से माधुरी जी ने ब्रजभाषा में गद्य-पद्य दोनों रचना रची जिनके विषय आधुनिकता, समस्याओं, प्रकृति और भक्ति से ओतप्रोत रहें हैं। जिसके फलस्वरूप इन्हें 1999 ई. में 'साहित्य निधी' की उपाधी से राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी ने सम्मानित किया।

13. श्री पूरणलाल गहलौत

श्री पूरणलाल गहलौत जी, की रचना सहजता का भाव ली हुई हैं। इन्होंने विभिन्न तरह के विषयों पर लिखा हैं। जैसे पौराणिक, राष्ट्रीय, लोकधर्म और लोकनीति, श्रृंगार और प्रकृति, पर्वोत्सव पर फुटकर रचना प्रस्तुत की।

पौराणिक में भजन के द्वारा भक्ति भावना को दर्शाया हैं जैसे सरस्वती, गणेश, शिव और हनुमान की वन्दना के द्वारा अपनी भक्ति को प्रस्तुत किया। उदाहरण -

'हनुमान'

लाल लँगोटी री धारौ, अरि हनुमत हरि भक्त पियारौ।
एक हाथ में बज्र बिराजै, गदा दूसरे धारौ।
कन्धा पै सज रहौ जनेऊ, सब सुख देयबे बारौ। लाल....'[96]

इसी प्रकार महारस, गिरिराज पूजा, गोचरण लीला, नाग नथैया, सूर का संगीत, सीता हरण, सूर का सागर आदि नौटकी पौराणिक है। जिस में कृष्ण लीला गाय चराना, रास करना, सीता हरण आदि शीर्षक देकर लिखा। जिसकी विषय वस्तु पुराण पर आधारित है।

राष्ट्रीय विषयों में राष्ट्र की समस्याओं पर लिखा हैं। 'सुभाष चन्द्र बोस' में आजादी के लिए सुभाष जी के विचार प्रस्तुत किए हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं

वीर छन्द द्वारा- बहरतबील

एजी हिटलर बड़ौ देश भारत मेरौ,
ये फिरंगी बड़ौ दुक्ख पहुँचा रहे।
प्यारे बापू भी भारी परेशान हैं,
या गुलामी सौं नर-नारि अकुला रहे॥[97]

'बापू अरू बलि कौ बकरा' में बापू का गुणगान करते हुए उनके सत्य, अहिंसा की विचारधारा को छन्द, भजन और दोहो द्वारा प्रस्तुत किया। वानगी द्रष्टव्य है।

भजन-

खुल गये नयन भयौ उजियारौ।
पाप समद में डूबत तुमनैं बापू हमैं उबारौ।
साँचौ धर्म बतायौ हमकूँ, संकट हम सब ही कौ टारौ।
नहीं सतावैं जीव कबहु हम, मन में ये प्रण धारौ।
सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता पूरन ये गुरू ज्ञान तिहारौ।[98]

'परिवार नियोजन' लघु नौंकटी में बढ़ती हुई जनसख्या की समस्या पर 'परिवार नियोजन नौंटकी' द्वारा लोगों को समझाने की कोशिश की हैं 'पर्यावरण प्रदूषण' के द्वारा पर्यावरण समस्या की ओर लोगों का ध्यान खींचा। नारी शिक्षा द्वारा 'नारी शिक्षा के लिए जोर दिया। उदाहरण इस प्रकार है।'

नारी शिक्षा के लिये लगा रहे सब जोर।
बिना पढ़ी नारी यहाँ रहती कई करोर॥
कन्या जो पढ़ जायँ तो सुधर जायँ सब काम।
सुधर जायगौ देश ये ऊँचौ होवै नाम॥
आरक्षण नारीन कूँ है विधान अनुकूल।
नारी उन्नति कौ यहाँ खिलै अनौखो फूल॥
परदा प्रथा हटाईये होबै याते हानि।
लखौ पुराने ग्रन्थ सब बात सकोगे जान॥[99]

'राग काफी' में होली प्रसंग द्वारा काम, क्रोध, मद मोह को भूल प्रेम, शान्ति,

साधना, अहिंसा के रंगों में एक साथ रहने का सदेंश दिया 'झूलना' द्वारा लोकनीति, लोकधर्म का संदेश दिया हैं। उदाहरण इस प्रकार है-

'होली'

प्रेम के रंग सौं होरी, सभी खेलौ बरजोरी,
क्षमाशीलता दयादान सौं अमल प्रीत की जोरी।
त्याग की भरलैं झोरी, प्रेम के रंग....।[100]

इसी प्रकार पर्वोत्सव, प्रकृति पर फूटकर छन्दों की रचना कर, विभिन्न ऋतुओं उत्सवों का वर्णन प्रभावी ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। 'रसिया होरी'इसी प्रकार की रचना है। उदाहरण द्रष्टाव्य हैं।

ऋतु मस्तानी देख कै, मन में उठै हिलोर।
सबै ओर बहना मचौ, या होरी कौ सोर॥[101]

श्रृंगार परक रचना में राधा-कृष्ण सयोंग श्रृंगार, वियोग श्रृंगार को 'चन्द्रवाली' में प्रस्तुत किया। विरह वर्णन भी बसन्त के द्वारा 'विरह गीत' में दर्शाया है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

'चन्द्रावली'

भजन –

चन्द्रावली प्यारी बहन हमारी- चन्द्रावली।
कबही रही पुकार द्वार पै हेला दै-दै हारी।
बहुत देर में ढूँढ़त -ढूंढ़त पाई है तेरी ये लाल किवारी॥
चन्द्रावली....[102]

'विरहगीत'

मैं अकेली नवेली पहेली बनी,
या बसन्त में कन्त न आयौ सखी।
बन-बाग में फाग में आग लगी,
अनुराग तड़ाग सुखायौ सखी॥
सब फूल-दुकूल त्रिशूल बने,

या समीर कौ तीर समायौ सखी।।

ये जवानी कौ ज्वार अपार चढ़ौ,

भरतार कौ पार न पायौ सखी। [103]

इस प्रकार से गहलौद जी चन्द्रावली, सूर कौ संगीत, गिरजि पूजा, चन्द्रबोस, बापू और बलि करै बकरा, राष्ट्र एकता, ब्रज की महिमा, परिवार नियोजन रचनाओं द्वारा अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत कर ब्रजभाषा साहित्यकारों में अपना अनूठा स्थान बनाया।

14. डॉ. हरदत्त शर्मा 'सुधाशु'

02 मार्च 1934 को गाँव माँढ़ए तहसील बहरोड़ जिला अलवर में एक ऐसे व्यक्ति का जन्म हुआ जो आगे चलकर ब्रजभाषा के कवियों में सशक्त कवि के रूप में विख्यात हुए। इन्होंने 1955 संस्कृत और 1956 में हिन्दी में एम. ए. कर पी.एच. डी. की और शिक्षक के रूप में कार्यरत रहें।

इन्होंने गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में रचना की। परम्परागत और आधुनिकता दोनों ही काव्य में नजर आते हैं परम्परागत अर्थात देव स्तुति से लेकर परम्परा से चले आ रहे विषयों की रचना करना। 'ब्रजरचना में शुरूआत में श्री सरस्वती की स्तुति कर, बालकृष्ण, राधा कृष्ण प्रीत की रचना की है।

'श्री सरस्वती स्तुति' में माँ सरस्वती की उपासना की हैं जिसमें कहाँ है कि सरस्वती के मन में निवास करने से काव्य में रस अपने आप आ जाता है। इसी भाव को ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा हैं -

'सरस्वती'

मो मन मन्दिर मैं जननि सारद ! करौ निवास।

तव पद-रज-रुचि-बास ते होय कवित्त सुवास।।[104]

'बालकृष्ण' में कृष्ण के बाल रूप का वर्णन किया वात्सल्य रस का सुन्दर चित्रण है। जो सूर का याद दिलाता है। बाल कृष्ण की लीलाओं को देख माता का हृदय गद्गद् हो रहा है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

किलकनि भरौपुरौ जसुदा को अँगना मातु अनंद बढ़ावत।

किलैक वायु–अस्व पै चढ़ि कै, कंस–हृदय मँह दूंद मचावत॥

किलकनि की माधुरी भगत जन मन बत्सलता–भगति जगावत।

गोपी–गोप नचत हरषित हवै किलकत कान्ह घुटुरूवनि आवत॥[105]

राधा कृष्ण प्रीति में राधा कृष्ण की प्रीत को श्रृंगारिक भक्ति के रूप में दर्शाया है। कृष्ण के सौदर्य, बांसूरी की धुन और राधा की छबि से प्रकृति का सौदर्य अत्यधिक बढ़ जाता है। जिसकों इस प्रकार ब्रजभाषा में लिखा हैं।

'राधा कृष्ण प्रीति'

नैनन कौ कजरा करयौ कान्हा रूप अपार।

प्रतिबिम्बित सर्वत्र ह्वै गयो स्याम सुकुमार॥

सब कछु दीसै कान्हमय, नैन भये मदमत्त।

सब नादन में बाँसुरी सुनै श्रौम अमुस्त॥[106]

इसके अलावा विभिन्न विषयों पर लिख कर अपने विचारों को ब्रजभाषा के द्वारा प्रस्तुत किया। जैसे 'आत्मा का स्वरूप' में आत्मा को व्यापक बताया है जिसका काम बिना ज्ञान बिना कोई महत्व नहीं है। आत्मा पूर्ण ब्रह्म रूप है, दर्शाया है। बानगी द्रष्टाव्य है -

ज्ञानस्वरूप है, सुद्ध है चेतन, ता बिनु देह कूं काम न आवै।

देह की आड़ में काम करै, न करै खुद, देह ते काम करावै॥[107]

'आत्मकथ्य' में कृष्ण भक्ति से सभी दूःख दूर हो जाते हैं वही रखवाले, कष्टों को दूर करने वाले हैं। वही 'सूरस्मरण' में सूर की भक्ति रचना का वर्णन है। उदाहरण इस प्रकार हैं

'आत्मकथ्य'

बाँसुरि नैकु बजाउ, सिगरे मम संकट कटै।

हिरदै मैं बसि जाउ, नैन निहोरे करि रहे॥[108]

'सूरस्मरण'

उर उत्कृष्ट सहज सरस बिम्बग्रहण अमन्द।

भक्ति काव्यरस छकि रह्यो सु–उर सूर स्वच्छन्द॥[109]

'खल बर्नन' में व्यक्ति की सज्जनता के बारे में कहाँ है कि जो जैसा कहता वैसा ही कार्य करे वह सज्ञन हैं किन्तु जो कहता कुछ और करता कुछ वह सज्ञन नही है इसमें इन्होंने सज्ञनता के विरुद्ध लक्षणो को प्रस्तुत किया हैं वही 'सुजन-सुभाव' में अच्छे व्यक्ति का स्वभाव के गुणों का वर्णन किया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

''खल बर्नन''

लाभ सदा तिन जनन कौ जे सुभाव ते वक्त।
सज्ञन के तो हाथ में आवै कबहूँ न तक्त॥
छल कौ करि पाथेय, बचन सदा भंजन करैं।
सब दिन रहै अजेय, भद्र जनन कौं कष्ट दै॥ [110]

*** * ***

कछु कौ तन करौ सदा, पै मन उज्ञल रूप।
सुन्दरता कूं छांड़ि कै, भए प्रतिमा के भूप।
अपनौ दुख दीखै नहीं, पर-दुख दिखै पहार।
ताकूँ मेटन कूं फिरै, सदा अपनपौ हार॥
अपनौ हित सूझै नहीं, पर-हित सूझै सार।
पर-हितु-हेतु सदा फिरै, चिन्तित भए अपार॥[111]

'राष्ट्र दशा' में भारत की सुन्दरता, फिर अग्रेजों का राज करना, गाँधी सुभाष का स्वतन्त्रता दिलाना किन्तु स्वतन्त्रता के पश्चात् भष्ट्र नेताओं के कार्य जातिवाद, साम्यवाद, प्रान्तवाद आतंकवाद जैसी समस्यों को उद्‌भव किया। वही राष्ट्र की संस्कृति, कला, विधा, ज्ञान, पराक्रम, त्याग, तप का भण्डार बताया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

'राष्ट्रदशा'

वेदन कौ गायन जहां, देवन कौ परकास।
ऋषि मुनि जन-तप कौ जहाँ फैल्यौ भयौ उजास॥[112]

*** * ***

सासन भयौ बिदेस कौ, भारत भयौ अधीन।

सहस बरस लौं ह्वै विवस, बन्यौ दीन अरु हीन॥[113]

अंग्रेजों का भारत पर शासन गुलाम भारत की विडम्बना और साथ ही स्वतन्त्र भारत की विडम्बना भी हमें इनके दोहो में देखने को मिलती है।

स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में जातिवाद का पनपना महँगाई बढ़ना प्रगति तो होना किन्तु भ्रष्ट राजनेता के कारण विकास ना होना इस पर व्यंग्य करते हुए नेता को मेढ़क की उपमा दी जो बेमतलब टर्र-टर्र करते हैं।

प्रगति भयौ हर छेत्र में अति ही भयौ बिकास।

राजनीति छल की भयी, भारी भयौ बिनास॥[114]

* * *

टर्र टर्र बोल्यो करै बेमतलब की बात।

मतलब किनरे पै करैं सदा देस सौं घात॥[115]

इस प्रकार साम्यवाद, जातिवाद, प्रान्तवाद, आंतकवाद जैसी समस्याओं पर भी लिख कर लोगों का ध्यान पनप रही समस्यों पर खींचा।

सम्प्रदायवाद, जातिवाद, प्रान्तवाद अरु,

अलगाववाद कौ अतीव सोर मच्यौ है।

कसमीर, पंचनद, असम में आगि लगी,

उग्रवादी लोगन कौ उग्रताप तच्यौ है॥[116]

पश्चिमी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति पर बुरा प्रभाव डाल कर भाषा, पहनावें, विचारों में परिवर्तन लाने की कोशिश को रोकते हुए लोगों को सचेंत किया। उदाहरण

भारत की या भूमि में पौधे विदेसन के सुलगे अतिभारी।

पच्छिम की बही तीखी हवा, सु स्वदेसी विचार की ह्वै गयी ख्वारी।

भाषा 'रु भूषा, बिचार औ' भाव सु जीवन की बिकृती भई सारी।

उज्ज्वलता सिगरी बिगरी, पुती कारिख, आकृति ह्वै गयी कारी॥[117]

नारी और नियमों का समाज में कोई सम्मान नही दोनों की ही समाज में हालत बत्तर हो गई हैं। इसको इस प्रकार लिखा है।

जल कौ प्रलय कहूं, अग्निकाण्ड होय कहूं,
भूमि कहूं कपै, होय जयत रुलाई है।
नारिन की लाज, सभ्ह्य जन कौ समाज लुटै,
अत्याचार, हत्याचार, यही तो कमाई है॥[118]

'राष्ट्रभाषा' में हिन्दी, को विविध लेखको ने एक नया आयाम दिया। उनको पुष्पों की संज्ञा देते हुए भाषा के महत्व को इस प्रकार दर्शाया है।

भारतेन्दु हिन्दी के प्रसार करिबे में आगै,
द्विवेदी नै हिन्दी-रूप सुद्दढ़ बनायौ है।
गुप्त नैं, प्रसाद नै, निराला, महादेवीजी नैं,
राष्ट्र अरू संस्कृति की महिमा कूं गायौ है।
प्रेमचन्द में है राष्ट्र-जन कौ विराट रूप,
पन्त में प्रकृति नैं सुरुप दरसायौ है।
हिन्दी के बगीचा में विविध पुष्प खिले भये,
रंग अरु गंध मनमोहक सवायौ है॥[119]

इस प्रकार पद्य को अपनी कलम से रच कर काव्य जगत में अपनी प्रतिभा को प्रस्तुत किया। दूसरी तरफ गद्य में भी 'बोलिबो' साथी, चरित्र, जीवन अरू मृत्यु, सम्यलोग, राजनीति, व्यवस्था, चिन्तन, हमारें बाबा कह्यौ करते, पाप-पुण्य, पुस्तक महिमा, संगति, आत्म प्रशंसा का है सकै, सान्ति जैसी रचनाओं को रच कर गद्य के भण्डार में वृद्धि की जिन के विषयों अमृत जैसे चरित्र, जीवन, मृत्यु, सभ्य, राजनीति, दार्शनिक, विवेचना प्रस्ततु की। ब्रजभाषा में रचना के साथ ही संस्कृत और अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया। गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा द्वारा ब्रजभाषा के भण्डार की दिन-प्रतिदिन वृद्धि की परम्परागत विषयों के अलावा आधुनिक विषयों समस्याओं को बहुत ही अच्छी तरह से प्रस्तुत किया।

15. श्री रामदास गुप्त

श्री रामदास गुप्त ने अपने समय में जो देखा वही बेधड़क लिख दिया। व्यंग्य के माध्यम से इन्होंने समाज में हो रही गतिविधियों को ब्रजभाषा में पिरकर बहुत ही

सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। देश की राजनैतिक शासन व्यवस्था, प्रशासन, भष्ट्राचारी पर व्यंग्य करते हुए लिखा है -

आजादी हम कौं मिलौ चपटी कहुं कहुं गोल।
आगे के कछु समै में, है जाय गोल मटोल॥
आजादी कौं पायकैं, सभी भये आजाद।
मजे मजे में लै रहे आजादी को स्वाद॥[120]

इसी प्रकार समाजवाद, नारी दशा, पश्चिमी सभ्यता, गुलामी जैसे विषयों परभी व्यंग्यात्मक रूप से रचना रची।

'सुलच्छना नारि' में नारी के विविध रूप अच्छे और बुरें दोनों रूपों का वर्णन किया। जैसे पापिन, आधुनिक कलहनी, कुलटा, आजकल की नारी पर व्यंग्य करते हुए लिखा है। उन्ही में से एक बानगी इस प्रकार है।

इक औरहु नारि सुसीला हुती,
घरबारी सुदामा की जानै सभी।
सहिबौई करी नित भूख मरी,
पति सौं न लरी औ फिरी न कभी।
पति कौं सुधि कृष्ण की बोलि कही,
दुख भोगौ वृथा पति जाहु अभी।
बड़ मित्र तिहारे करिंगे कृपा,
मिट जाएँ गरीबी के रोस सभी।[121]

* * *

अपने खूंटन पै सदा, मिलै न्यार अरू ज्वार।
सबके खूंटन पै कहाँ, हर्रेरिन को न्यार॥
हर्रेरिन कौ न्यार, स्वाद में अपनी सीठौ।
डोलिहिं दारहि द्वार, और कौ चारो मीठो॥
जैसी बनी सुभाव, देखती सुन्दर सपने।
भाजत डोलै रोज, त्याग कै खूंटन अपने॥ [122]

'ब्रज महिमा' में ब्रज की गाय, गोपी, जमुना आदि ब्रज की महिमाओं का बहुत ही सुन्दर ढ़ंग से वर्णन किया है। उदाहरण इस प्रकार :

महिमा मन भावन है ब्रज की,
छिति मंडल पै निति छायौ करै।
जमुना तट के तरु पुँज-निकुज,
सु राधे औ स्याम सुनायौ करै।
ब्रज बीथिन में बिहरै थिरकै,
अँग-अँघ सदा हससायो करै,
ब्रज कौ बसिवौ सब चाह्यौ करै,
नित आयो करै अरु जायौ करै।[123]

'ब्रज की संस्कृति' ब्रज की भाषा, ब्रज के वासी, और व्रजवनिता में ब्रज की संस्कृति, भाषा वासी, नारी का वर्णन किया हैं जिसमें गायों का चरना,दूध मख्खन खाना, नंद जसोदा का वात्सल्य वर्णन राधा-कृष्ण के रंग में रंगा काव्य जो कि कृष्ण के इर्द-गिर्द ही घूमता है। जिस का एक उदाहरण इस प्रकार हैं।

इनि लोक की लाज कौ मोह तजौ, नंदलाल की प्रेम पुजारी बनीं।
नित 'श्याम ही श्याम' पुकारो करै, 'कविदास' सुखारी-दुखारी बनीं।
भ्रमबौई करै ब्रज खोरिन में, सब भूलि गईं भ्रमवारी बनीं।
ब्रजराज के नेहनि नेमु पगी, बड़भागी सभी ब्रज नारी बनीं।[124]

श्रृंगारिक रचना में वियोग का वर्णन कर बांसूरी की धुन मात्र से कृष्ण के वियोग में पागलों की भांति, आँखो से अश्रु बह रहे हैं और कुछ सूझ नही रहा इस को ब्रजभाषा में सुन्दर रूप से चित्रत किया है।

झांकति हौ का झरोखा लगी, नित डारति हौ अँखियान सौं आँसुरी।
देह की सुझ रही न कछू नित, सूखत जात, ये हाड़ औ माँसुरी।
बावरी तोहि लखी न परी कछु, रोवति जाति भैरं यों उसाँसु री।
डारौ निकारि जि प्रेम की फाँसु, तौ बाँसु रहे, न बजै फिरि बाँसुरी।[125]

ऋतु के माध्यम से वियोग वर्णन करना काव्य की सुन्दरता रही है। इसी

सौदर्य को दर्शाते हुये नायिका की वियोग पीढ़ा का सुन्दर चित्रण इस बानगी में देखने को मिलता है।

अति वेगि ही आनि मिलौंगे प्रिये, कहिके यही आयु गये घर सौं।
मग जोवत नैन थके उसकौ, बहलावत बीत गई बरसौ।
नहिं आजु मिले, कढ़ि काल्हि गई, अरु यूँही निगोड़ी गई परसों।
बन बागनि बीच बसंत फरयौ, अरु खेतनि माँहि फरी सरसौं।[126]

इस प्रकार आधुनिक विषयों में भी लिखने की इन की रुचि रही। जिसमें भ्ष्ट्राचार, राजनीति कुर्सी के खेल को दर्शाया है। भ्रष्टाचार पर बानगी द्रष्टाव्य हैं।

यह सूखो परौ, यह सूखी परौ,
यह सोर चहूँ दिसि खूब भयो।
लए लूट ये कोस करोनन के,
'कविदास' ये चौरे में भोर भयौ।[127]

बढ़ती हुई जनंसख्या ने मँहगाई ने मध्यम वर्ग के लोगो की कमर तोड़ दी है।

इसी समस्या को कवित्त द्वारा दर्शाते हुए इस प्रकार लिखा हैं।

सदी बीस-इक्कीस में, अन्तर सबहि दिखाय।
रहै अधिक कछु और हूं, जो इक्कीस कहाय॥[128]

राजनीति ऐसा क्षेत्र है। जो हर कवि के लिए प्रिय विषय रहा है। इसी पर व्यंग्य करते हुए जनता के अधिकारों का हनन कर राजनीति के ऊपर व्यंग्य करते हुए इस प्रकार लिखा है।

हक नाहक ये कपिला जनता, अब कूर कसईयन पालै परी।
जन जीवन नाव थपेड़िन के, भकझोरि है छैल हवाले परी।
नहीं जीवन नाव सम्हाले परै, विधना की रची कब टाले परी।
जाई सास ते न्यारी भई जु हुती सोई सास निगोड़ी है पाले परी।[129]

* * *

आजाद भारत के रंग को भी इस प्रकार लिखा हैं।

आजादी हमकौ मिली, चपटी कहुँ-कहुँ गोल।

आगे के कछू समय में, है जाइ गोल-मटोल॥[130]

इस प्रकार से 'श्री रामदास गुप्ता' जी ने अपनी रचनाओं को व्यंग्यात्मक द्वारा प्रस्तुत किया है। जिनमें विभिन्न विषयों का समावेश किया है। जिन में अलंकारो, छन्दों का बहुत ही खूब ढ़ंग से उपयोग किया। और राजस्थान में रहकर ब्रजभाषा साहित्य कोश में वृद्धि की।

16. श्री रामदत्त शर्मा

ब्रजलोक संस्कृति और देश की संस्कृति को अपने भावों द्वारा ब्रजभाषा और संस्कृत में प्रस्तुत करने वाले 'श्री रामदत्त शर्मा' का जन्म 15 सितम्बर 1926 में भरतपुर में हुआ। शिक्षा के कार्य से सबन्धित होने के कारण इनका रुझान संस्कृत, ब्रजभाषा की ओर बढ़ गया इन्होंने गद्य और पद्य दोनों के ही भण्डारों में वृद्धि की।

रामदत्त जी मूलतः गद्य के लेखक रहे। ढ़हती सड़क, सदीन पुरानी मकान, ढूंढ, जवाहर बुर्ज, आमुख, मैं कोऊ, शीला, हरपरसाद, सकटुआ मास्टर फिरंगीलाल, ताऊ घासीराम, एडवोकेट हरीराम, जगन्नाथ जो जोसी सूरज नारायणा जी शास्त्री, डाक्टर गोपाल जैसे गद्य की रचना की।

पद्य में 'कविता कौ उद्देश्य' शीर्षक देकर कवि ने लोगों को अपने कतर्व्य की याद दिलाते हुए राष्ट्र की उन्नती के लिए आह्वान करते हुए भारत की दशा का वर्णन किया है कि देश पर संकट के बादल छा गए है। कोई विद्रोह नहीं कर पा रहा, परिश्रम करके भी लोंग भूखे हैं तो दूसरी ओर स्वार्थी लोग मुफ्त का माल खा रहें है। कथनी करनी में अन्तर आ गया हैं। लोगों को अपनें कतर्व्य की याद दिलाते हुए कहते हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

का लिये गीत मैं लिखौ करूं, का काजें कविता कियौ करूं।
जब राष्ट्र पै संकट मँडरावे, भावन में ज्वार नांय आवै।
इ संभव नाँय कबहुं होवै, जो मन विद्रोह न कर पावै।
फिर तुमहीं बताओ कैसे मैं, कछु बिना कहै ही रह जाऊँ।
जा लिये गीत मैं लिखौ करूं, जा काजे कविता कियौ करूं।
का लिये गीत मैं लिखौ करूं, क्यो कर मैं कविता....[131]

'नौकरी मंत्र' में नौकरी पर टीके रहना है तो अपने सहाब की हाँ में हाँ मिलाओ उस के विरुद्ध कुछ ना करो इसको व्यंग्यात्मक रूप से इस प्रकार लिखा है।

ऐटम के जुग के जे हाकिम, अधिकार कौ कौऊ पार नहीं।
एटम बम सदा साथ रक्खें, का तोकों जाकौ ध्यान नहीं।
जे रिपोर्ट कौनफीडेंशल है, तू जाए खूब समझ लीजो।
विस्फोट को खतरौ सिर पै है, रक्षा तू अपनी कर लीजो।
यदि तोय नौकरी करनी है हाकिम ते....[132]

'स्वागत वसन्त' में बसन्त के द्वारा राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए बहुत ही सुन्दर से प्रकृतिक सौदर्य के द्वारा राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया। जिसकी बानगी इस प्रकार हैं।

निज राष्ट्र पै मरवे मिटवे कौ, संकल्प आज हम कर लेवै।
है हममें अब साहस अनन्त, जे जीवन कौ साँचौ बसन्त।
हम भेद-भाव कौ करें अन्त, तौ प्रगटैगो रितुपति बसन्त।
स्वागत बसन्त, स्वागत बसन्त...[133]

'होरी कौ संदेसौ' द्वारा भारतीय संस्कृति का सुन्दर रूप में चित्रण किया। होली का त्यौहार आने पर किस प्रकार सभी अपने भेदभावों को भूल एकता के रंग में रंग जाते हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

होरी आई, होरी आई, है फाग संदेसौ संग लाई।
फूले हैं सबके अंग अंग, युगलन कूँ लखि के संग संग।
सूझै हैं अनकूं रागरंग, मानों राधा जू स्याम संग।
गोपी गौपन के संग आई, होरी आई, होरी आई।[134]

'व्यंग ई निष्ठुर समय कौ' में समय के साथ-साथ हो रहे बदलाव के कारण सांस्कृति और देश पर पड़ रहे बुरे प्रभाव को दिखाया हैं। 'तुम अब रूठै' इस में वेपरवाह जनता का वर्णन हैं। 'तब याद कोई की आवै है' 'क्यों मनुआ आजु उदास हैं' में अपने दर्द को सुन्दर भावों द्वारा वर्णित किया। 'आह्वान' में देश के नवयुवको को देश को बचाने का आह्वान करते हुए उन्हें देश के महान नेताओं की याद दिलातें हुए

उन्हें देश को बचाने और देश की लाज रखने को संदेश दे रहें हैं।

क्या याद नाँय वी भाई बन, औ पंचशील कौ राही बन
हम पै सीधो ही चढ़ बैठौ, धोके ते हमकूँ ठग बैठौ
जाते ना भरोसो अब करियो, मत वाकी बातन में अइयो
निज साथी के संग में जइयो, धोकौ तू अबकें मत खइयो,
चढ़ जइयो हिमगिरि चोटी पै, बढ़ चलियो शत्रु की बोटी पै।
दिख लइयो वाकूँ एक बार, वा राणा कौ पोरस अपार।
जो भूखो रहकें लड़तौ हौ, दुस्मन पै काबू करतौ हौ
हाथन में नगन खड्ग लैकें, जो समर सिन्धु कूँ भरतौ हो
अपनौ सब कछु न्योछावर कर, जो मातृभूमि पै मरतौ हौ,
है आज नाँय वी जीवित है, पर वाकी अमर कहानी है।
जो जुग-जुग तक प्रेरित करती, ऐसी बू अमिट निशानी है।[135]

इस प्रकार ब्रजभाषा में गद्य-पद्य की रचनाओं द्वारा अपनी प्रतिभा का झण्डा लहराया। राजस्थान ब्रज साहित्य समिती भरतपुर की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान देकर 1981 से 1990 तक मंत्री के पद पर रहे और ब्रजभाषा में साहित्य सृजन को प्रोत्साहित करते रहें।

17. श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी

बचपन से ही कविता लिखने का शौक रखने वालें 'श्री गजेन्द्र सिंह सोलंकी जी का जन्म 6 अगस्त 1923 को मध्यप्रदेश में हुआ. गद्य और पद दोनों ही क्षेत्र में अपने भावों विचारों को प्रस्तुत किया। इन की ज्यादातर रचनाएँ राष्ट्र को समर्पित रही इन्होंने राष्ट्रवादी कवि भी कहा जाता है। साथ ही भारत की संस्कृति और प्रकृति का भी संवेदनशील वर्णन किया।

ब्रज रचना माधुरी में राष्ट्रवंदना में इन्होंने हिमालय, के द्वारा राष्ट्र की वंदना की हैं उदाहरण द्रष्टाव्य हैं।

भव्य हिमाद्रिय भाल भव, निर्भय विमल उतुंग।
चिर अजेय गौरव युतः सैल सिरोमनि शृंग।।

सीस हिमालय सौ मुकुट, पाँव पखारत सिन्धु।

अटक–अटक की परिध लौं, बसै कहावै हिन्दु॥[136]

इसी प्रकार 'संस्कृति' के द्वारा भारतीय संस्कृति की सुकृति के साथ स्वतंत्रता का जन्मदाता माना हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

गुम्फित जीवन राष्ट्र कौ, नवयुग धारा लीन।

नूतनतम मम संस्कृति, सम्पुट प्रबल प्रवीन॥

भय आतुर हत विस्व कौं, निर्भय करन ललाम।

सबल निमल सुचि संहिता, ऋग अथर्व यजु साम॥ [137]

'राजस्थान' नामक रचना द्वारा राजस्थान की संस्कृति राजपूतों की वीरता का वर्णन किया हैं। उदाहरण इस प्रकार है।

अरावली अरु सतपुड़ा, पौरुष प्रबल प्रदत्त।

रग रग में बलिदान कौ, रजपूतानी रक्त॥

कन–कन सुचि अभियान जुत, रग रग भैया प्रेम।

बलिदानन की अमर यू, राजस्थानी क्षेत्र॥[138]

'षट ऋतु वर्णन' रचना द्वारा बसंत, होली, ग्रीष्म, बरखा, शरद, ऋतुओं का सजीव सुन्दर वर्णन किया हैं। ऋतु से प्राकृतिक सौदर्य में निखार आ जाता हैं पशु-पक्षियों में उमंग की लहर उठ पड़ती है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

नीलाम्बर निर्मल भयौ, निर्मल धरा सुहाय।

अंग–अंग उज्वल भयौ, निखरी नियति नहाय॥

हरिताँचल निझैर सरित, नियति छटा सुकुमार।

पहिनै नव परिधान ज्यौं, न्हाई धोई नार॥[139]

'काल वरनन' रचना द्वारा भोर, मध्याह, सांझ निशा द्वारा समय के चारों पहर की महत्ता का वर्णन किया। सांझ का उदाहरण इस प्रकार हैं।

भरै प्रतीची अंक में, अंचल मलय डुलात।

कलान्त मुखी सविता लसै, संझा गगन सुहात॥

अरुणारी आभा अकथ, क्षितिज समैटै गोद।

सांझा आभा सुलभ बन, सविता जडे समोद॥[140]

'सिंगार छवि' में वियोग श्रृंगार का सुन्दर चित्रण किया हैं प्रेमी के वियोग में प्रेमिका का वियोग उस की दशा का वर्णन हैं जैसे उदाहरण द्रष्टाव्य है।

अँसुवन डूबे नयन हिय, छलकत बिम्ब बनात।

ना तूली ना मसि कहूं, प्रतिमा बन बन जात॥[141]

करुणा, वेदंना, निराशा जैसी रचना द्वारा आपने भावों को बहुत ही सुन्दर शब्दो में करुणा, वेदंना, निराशा जैसे भावों का चित्रण किया।

आसा जरी, चिंता लपट, धधकत बे अरमान।

पाले पोसे मुदित है, ललक सँजाये मान॥

चिता चुनी अरमान की, साध जुटाए आज।

सोने के संसार पै, आन परी जो गाज॥[142]

युग दर्सन, आज कौ युवक, आज की नारी, परिवार कल्याण, युवक सौं, दुरदसा जैसी रचनाओं के द्वारा आज के युग का वर्णन 'युग दर्शन' में आधुनिक युग में विज्ञान का बढ़ता हुआ रूप प्रस्तुत किया। 'आज को युवक' में फैशन में फँस कर अपने पहनावे रिशतों को भूल गए। 'आज की नारी'में आधुनिक युग में नारी के बदलते रूप का वर्णन हैं 'युवक सौं' में युवक को राष्ट्र के नव निर्माण के लिए प्रेरित किया हैं। 'दूरदशा' में देश की दूर्दशा का वर्णन किया है कि अन्न वस्त्र से विहीन, देश का गौरव बढ़ाने वाले विदेश जा रहे हैं पूत कपूत होते जा रहे हैं। सत्य, अंहिसा का ह्रास होता जा रहा हैं। इस प्रकार के भावों को रचनाओं द्वारा प्रस्तुत किया।

प्रकृति को विभिन्न तरह से विभिन्न भावों द्वारा कवि ने अपने कौशल्य का परिचय दिया हैं राष्ट्रीय भावना से युक्त प्रकृति के रूपों को कवित्तो द्वारा इस प्रकार रचा हैं।

आओ होरी के रंग में, रंग जावे सिंग लोग,

और रंग दब जावै देस प्रेम चमकै।

कसमीरी केसर हिम श्रृंग कौ धवल रंग,

खेतन कौ धानी औ सिन्धु कौ दमकै।

गगन में उडावै गुलाल और औ अबीर ऐसौ,

फागुन में सावन कौ बदरा ज्यों झमकैं।

भीजैं भीजावै सरावोर होलै अन्तस तक,

गुंथ जावै ऐसे नहीं कहु कोऊ ठमके।

डांड गढ़्यौ होरी कौ, इत फूटै स्वर लहरी,

'लंगडियों' पै लावणी के फाग राग झूमैं।

चंग डफ झंझन पै एकता की थाप परै,

रात रात गामन में रंग रास लूमैं।

टूट से रहे हैं भाव खौरिन में जुड़वे के,

होरी कौ संदेस लैके घर घर में घूमैं।

बहुत सन चुके हम, धूल औ कीचड़ में,

आओ अब रस रंग भरी होरी में डूबे॥[143]

'कृष्ण तेरी बाँसुरी' कृष्ण की बाँसुरी की धुन से प्रकृति पर पड़ रहे प्रभाव को प्रस्तुत किया है। 'शरद पूर्णिमा' में शरद पुर्णिमा की रात के सौंदर्य को कवित्त में सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया।

रे रात है सलौनी बिधु अंक सौहै चाँदनी

नभ कौ परयन्क लौ आज मोद माँही है।

मंद मंद मलय पौन ढूरत हौलै होलै

उनींदी रे लाज भार पलों पै छाई है।

सुस्मित समोद सुप्त धरा देखे आँक खोल

झिलमिल सितारे सुहाग मांग लाई है।

आज केलि करत प्रियैसी नव चन्द्रिका कि

चन्द्र की लुनाई जाकै रोम रोम छाई है। [144]

इसी प्रकार अनुराग फाग, ग्रीष्म सवैया, ग्रीष्मी आतप, बरखा में भी सुन्दर रचना रची है। 'यौवन' में शृंगार वर्णन किया हैं, 'अंधेरे' में समस्यापूर्ति को दर्शाया हैं।

इस प्रकार 'सोलंकी'जी ने ब्रजभाषा में सवैया, कुण्डलियाँ भी रची इस के अलावा समर्पन, पंकज, कंचन, तीखे तीर, सुनसान, नीति नववरस को आगमन, झूम झूम रही छवी आन लहै हैं, हियौ हुलसै, बरखा, उत्कंठा, तुलसीदास जैसी रचनाओं द्वारा अपने भावों को प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार से कृतित्व से प्रभावित हो इन्हे अनेक सम्मान जैसे जिला प्रशासन कोटा, साहित्याकार मंदिर, हिन्दुस्तान समाचार, अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय विद्यालय जिला प्रतियोगिता, राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया।

18. श्री छुट्टन खां साहिल

सन् 1938 में कामा (भरतपुर) में जन्में श्री छुट्टन खां साहिल श्री मिश्रीलाल को अपना गुरु मानते हैं। सामान्य शिक्षा प्राप्त कर टेलरिंग का व्यवसाय करने वाले साहिल जी पर सरस्वति जी की अनूठी कृपा रही, उन्होंने ब्रजभाषा में काफी साहित्य की रचना कर ब्रजभाषा साहित्य भण्डार की वृद्धि की।

इन की भूल भाषा उर्दू होने के बावजूद इन्होंने ब्रजभाषा में रचना की। इन्होंने लगभग एक सौं ख्याल लिखे। जो विविध पत्र पत्रिका में मिलतें हैं जैसे रंगत तबील, रंगत शिकस्त, रंगत लगड़ी आदि।

रंगत शिकस्त–

सही है इन्होंने बुलबुलों का रोना, समझ में अब ये समझने वाले।
चमन की रंगी फिजां में अब भी, हजारों बैठे है नाग काले।।[145]

इसमें हिन्दी खड़ीबोली का प्रयोग किया हैं। इस प्रकार गजल भी यह लिखते रहे, समय के साथ-साथ लोगों के साथ सम्पर्क हुआ। ब्रजभाषा के मधुर कवि श्री मिश्रीलाल से मिले, उन्हें धर्म गुरु माना। ब्रजभाषा से प्रभावित हुए और श्री रामशरण पीतलिया और मुद्गल जी, से मार्गदर्शन पा कर ब्रजभाषा में भी लिखना प्रारम्भ किया। और ब्रजभाषा कवि सम्मेलन तथा अखिल भारतीय साहित्यकार परिषद में भी भागीदारी की।

इन्होंने समसमायिक समस्याओं दहेज, नारी शोषण, उत्पीड़न, विरह, प्रकृति, प्रेम और पर्यावरण, देशप्रेम, राष्ट्रीयता सांप्रदायिकता सद्भावना के गीत गजल आदि

विषय पर खड़ीबोली और ब्रज में लिखा हैं। जैसे ''समस्या सहवनौ है''

उमड़ी कजरारी घटा नभ में, उमग्यौ हिंयरा हुलसावनौ हैं।

बरसै बदरा सरसै बसुधा पिउ पी पपीहा पुलकावनौ है।[146]

दहेज की चिन्ता मां-बाप को लड़की के जन्म से ही सताने लगती है। लड़की का जन्म अभिशाप माना जाता हैं। यह समाज में व्याप्त बुराई की तरह हैं जो रिती-रीवाजों के नाम पर एक धब्बे की तरह हैं। जिस को साहिल जी ने बहुत सुन्दर ढ़ंग से प्रस्तुत किया।

मुख उदास, मन में निरास, विचरत है साँस, ढरती ज्वानी।

पीर लिये बैठी है बिटिया, आंगन आंगन में स्यानी॥[147]

प्रकृति प्रेम और पर्यावरण का ब्रजभाषा में सुन्दर वर्णन कर इस के माध्यम से मानव को वर्गभेद छोड़ सद्भावना का संदेश देने की कोशिश की है। जिस में खड़ीबोली और ब्रजभाषा दोनों ही भाषा का प्रयोग किया हैं।

ले लौ अपने मंदिर मस्जिद जीने दो।
धरती को बरसात का अमृत पीने दो।
सदियों से इसको जीना नहीं नसीब हुआ।
जुल्मों को सहकर भी देती रही दुआ।
इसके सीने पर ना तुम यूँ अंगार धरौ।
सौचौ करो विचार इसका उद्धार करो।[148]

मानव अपने कर्तव्यों को भूलता जा रहा हैं जिसे वह याद दिलातें हुए लिखतें हैं।

युद्धस्तर पर नगाड़े शंख फिर वजने लगे हैं।
राहु केतु कर रहे हैं, कामना अपनी विजय की।
क्रूर वाणों से मेरौ कर्त्तव्य घायल हो गया है।
देखकर शालीनता को यह अचम्भा हो रहा है।
क्यों गगन से गिर रहे हैं टूटकर झिलमिल सितारे।[149]

प्रेम विरह का भी सजीव वर्णन प्रस्तुत करते हुए। प्रेमी प्रेमिका का रूप हाव-

भाव, अधर, स्पंदन आदि के भाव को प्रस्तुत करते हुए। 'चार आँसू' में भी ब्रजबोली में विरह वेदना को दर्शाया हैं। संयोग शृंगार का प्रेयसी के रूप में सुन्दर चित्रण हैं एक कवित्त इस प्रकार है।

लाली अधरों पै है, कपोलन पै कारो तिल, ससि सम बिदिंया, चुनरिया में तारे हैं।
कंचन कमान कान कुंडल की कौन बात, नथ में नथौ है रूप लट नाग वारे हैं।
मुख की अनौखी छटा हाय राम मार गई, मन पै अचूक बान तान तान मारे हैं।
चित्रकार की चित्रकारी पै मैं बारी जाऊँ, कारे कजरारे गोरी नैन मतवारे हैं।[150]

देशप्रेम, राष्ट्रीयता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव को कवि ने अपनी लेखनी से रच कर मानव को अपने धर्म कतर्व्य की याद दिलाई हैं। दुपट्टा, चुनरिया, मल्हार द्वारा अपनी इसी भावना को प्रस्तुत किया जैसे।

लाय दे दुपट्टा केशरिया मोकूँ लायदे दुपट्टा केशरिया।
जामें धीरता की आन मेरौ देश को महान
मैऊ ओढ़ सिहाऊ मेरे सांवरिया।। लायदे....
राष्ट्रपिता गांधी बाबा कौ, ध्वज आदर्स भरौ फहराबै
मोतीलाल जवाहर चमकै भारत मां जिन देख सिहावै
तामैं लालबहादुर अपने सपनन कूँ साकार बनावै
इंदिरा जी की अमन एकता यामैं जगमग जोत जगावै
यामें चन्द्रमा समान चमकै भारती विधान होवे
नेह भरी रस गागरिया।। लायदे....[151]

'सरस्वती नंदना' और 'ब्रजवंदना' द्वारा अपने भक्ति भाव को प्रस्तुत किया हैं। 'हौरी' (गीतचंग), होरी (मेवाती) होरी जैसे शीर्षको पर लिखकर ब्रज की होली का वर्णन किया हैं। इसी तरह गीत, गज़लों द्वारा अपनी भावनाओं को प्रस्तुत किया हैं। इनको को विभिन्न सम्मान व पुरस्कार मिले है। जैसे

दिनांक	पुरस्कार विवरण
23-4-89	लोक उत्सव तिलौनिया,अजमेर
13-9-89	सेठ फूल चंद बाँठिया स्मृति ब्रज पुरस्कार, हाथरस

12-5-90 प्रेम भारती विद्यालय, डीग (भरतपुर) – अभिनंदन पत्र

20-5-92 राज्य संदर्भ केन्द्र प्रौढ़ शिक्षा, जयपुर – सम्मानपत्र

21-5-92 आदर्श जीवन शिक्षा संस्थान, कामा – सन्मान पत्र

2-4-94 सांस्कृतिक मण्डल, सीकर – प्रशस्ति पत्र

1994-95 सनातन धर्म सभा, गदरपुर, नैनीताल – प्रशस्ति पत्र

1994-95 राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर – प्रशस्ति पत्र

इस प्रकार छुट्टन खाँ साहिल जी ने ब्रजभाषा और खड़ीबोली दोनों भाषा का प्रयोग कर ब्रजभाषा साहित्य की रचना की। जिसमें उन्होंने अपनी प्रतिभा का खूब परिचय दिया और ब्रजभाषा प्रेम को व्यक्त किया।

19. श्री हरिप्रसाद शर्मा 'हरिदास'

गुन्सारा (कुम्हारें) राजस्थान में 28 अक्टूबर 1932 को जन्में 'हरिदास' जी बचपन से ही काव्य में रूचि रखते थे। बचपन से ही ब्रजभाषा के प्रति रुझान रहा हैं। पिता भी ब्रजभाषा के कवि थे। इनका भक्ति की तरफ ज्यादा झुकाव रहा हैं। पृष्टि सम्प्रदाय के कई ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद किया। तथा कृष्ण की विभिन्न लीलाओं को प्रस्तुत किया जैसे (राग देवगंधार) में कृष्ण को झूला झूला रहे नन्द कृष्ण के बाल रूप सौंदर्य वर्णन किया हैं।

नन्द नन्दन झूल रहे पलना।
कर गहि डोर झुलावत सब मिसि, गोकुल की ललना।
कोउ एक सखी फिरखी फिरावत कोउ बजावत झुनझुना।
कोटि मदन छबि 'हरि' की राजस निरख निरक मन चलना॥[152]

राग बिलावत, राग धनाश्री, रागमालव, राग विलावल, राग मालकोश, राग केदार राग काफी, रसिया, रागमल्हार, जैसे शीर्षको को लिख कर कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का वर्णन किया हैं। जिनमें मुख्य है दान, मान और होरी, दूध-दही बैंचने जा रही गोपीयों को बीच में रोक कर अपना दान माँगना कालिन्दी तट पर रास करना गोवर्धन लीला का महत्व, मकर संक्राति का महत्व, नवरात्री पूजन, ब्रज की होली, मुरगोट, फागून, सावन, ग्रीष्म ऋतु और शीत का वर्णन कर ब्रजभाषा में अपने भावो

को प्रस्तुत किया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं

रास रच्यौ कालिन्दी के तट।
तत थेई तत थेई ब्रज युवतिन के संग, नृत्य करत हैं श्री नागर नट॥
चाँदनी छिटक रही तहाँ चहुँ दिसि, धारन किए सबहिन श्वेत पट।
'हरिदास' यह शोभा निरखत थकित रह्यौ ज्यौं चन्द्र गगन घट॥[153]

* * *

श्याम श्याम जू भए।
छवि छबीले वस्त्र, पहिरिकें शृंगार नए॥
पूजत हुती गौर जहं राधे तह तत्काल गए।
निरखत मुदित भई तब प्यारी, 'हरि' उर लाइ लये॥[154]

महाप्रभु वल्लभाचार्य श्री विठ्ठलनाथजी जमुना जी से विंनती करते हुए इनकी कृपा से जीवन को सफल होता हैं। उसी प्रकार यह अपने पर कृपा बनाय रखने की विंनती कर रहे हैं।

श्री यमुने नंद नंदन प्यारी।
तुम्हरी कृपा बिन भानु की तनया, नहीं मिलि हैं गिरधर बनवारी॥
तुम तट क्रीडत नित प्रति मोहन, संग लिए ब्रज बधू दुलारी।
'श्री हरि जू' यह शोभा निरखत, तनमन धन कीनौं बलिहारी॥[155]

भोर की महत्ता, सुन्दरता का वर्णन किया है जिस को नंदालय में जगावे पद, निकुंज में जगावें पद, शीत रितु में जगावे पद, राग मल्हार,मंगल-निकुंज भावना जैसे शीर्षको द्वारा ब्रजभाषा में नंदकिशोर को जगाने के पदों की रचना की हैं। प्रातः काल होते ही कृष्ण को जगाते हुए पद लिखते हैं।

कौआ बोलन लागे। गोपाल लाल...
आए ग्वाल बाल सब घर ते, तुम अजहूं नहिं जागे॥
बछरा खूटि गए खूँटन ते, डोलत इत उत भागे।
इतनी सुनत 'हरि' उठि बैठे, माखन मिश्री माँगे॥[156]

'चीरहरण लीला मंगला' व्रतचर्या चीरहरन शीतकाल (पोषमास) में ब्रज

नारियों का यमुना के तट पर वस्त्रों का चुराने की लीला का मनमोहक चित्रण इस प्रकार किया हैं -

हरि यश गावत चली है ब्रज नारी श्री यमुना के तीर।
वस्त्र उतार नहान के कारण, घँसी श्री यमुना नीर॥
कर स्नान बाहर जु आई, तहाँ नहीं देखे चीर।
इतने में 'हरि' मुरली बजाई, सुन-सुन भई अधीर॥[157]

इसी प्रकार 'कलेऊ के पद' में शीतकाल में खण्डिता, मंगला, नंदालय में कलेऊ की भावना, निकुंज में राधा कृष्ण दोऊ कलेऊ करें जैसे शीर्षकों द्वारा कृष्ण की गुणगान किया हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

दिए गल बाँह बिराजत री।
करत कलेऊ उठत प्रातः ही, लेकर कौर खवावत री।
कौर देत ललना के मुख में, ललना मनहिं लजावत री।
चूमि चूमि मुख 'हरि' मुरली बजाई, सुन-सुन भई अधीर॥[158]

'मंगला दर्शन' के पद में निकुंज में दापत्य केलि की मंगला, मंगला, शीतऋतु में मंगला-प्रभु के सन्मुख जैसे शीर्षको के द्वारा राधा कृष्ण का वर्णन किया। उदाहरण इस प्रकार हैं ।

धरीहै अंगीठी पास, महल में.....
पर रहे रुई के परदा चहुं दिसि, पौष शित के मास॥
ओढ़े एक रजाई दोऊ मिलि, राजत सुख की रास।
पहुंची है सकल नायिका 'हरि की' पिय दरसन की आस॥[159]

इस प्रकार हरिदास जी ने भक्तिपरक ही पदों की ही रचना की हैं जिस में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। कृष्ण, राधा का वर्णन साथ ही विभिन्न लीलाओं का वर्णन हैं। जो पृष्ठिमार्गिय कवियों की परम्परा का निर्वाह किया हैं। और अपनी भक्ति भावना को प्रस्तुत किया है।

इन को शिल्प रतन, पृष्टिमर्मज, एवं अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया हैं।

20. श्री कमलाकर तैलंग 'कमल'

पद्माकर जी के वंशज 'कमलाकर तैलंग जी का जन्म 1971 को रेबई ग्वालियर में हुआ। इनको बचपन से ही कविता लिखने में रूचि थी। साठ बरस तक इन्होंने हिन्दी और ब्रजभाषा पढ़ाया अर्थात अपना पूरा जीवन ब्रजभाषा साहित्य के प्रति लगाव को अपनी रचनाओं के माध्यम से दर्शाया।

इन्होंने विभिन्न विषयों पर रचना रची। स्वतंत्रता संग्राम के समय पर अंग्रेजो को ललकारतें हुए 1937 में लम्बी कविताएं लिखी।

सुने विदेसी लोग, बात ये एक हमारी।
वापिस घर कौ करै जायबे की तैयारी।
हमतौ इहां सुतंत्र होइकै रहिबौ चाहत।
भारत अपनी सही हवा में बहिबौ चाहत।[160]

1951 में हिन्दी भाषा पर गर्व करते हुए सबसे अच्छी भाषा बतातें हुए अपनी राष्ट्रीय भाषा के लिए अपना प्रेम प्रस्तुत किया।

हिन्द हमारौ देस, हिन्द की भासा हिन्दी,
जितनै हिन्दी और अहिन्दी बे सब हिन्दी।
एक मंच पै एक हृदय है कै सब आमैं,
जनहितकारी मधुर गान हिन्दी कौ गामै॥[161]

'भीष्म-प्रतिज्ञा' में भारतीय परम्परा के सौष्ठ को प्रस्तुत करते हुए इस प्रकार लिखा हैं -

जोपे बल विक्रम को वारिध विशाल भीष्म।
शत्रुन को काल तोपै अर्जुन कौं ल्याऊं मैं॥
जेतौ पियो दूध दृढ़ माता कौ छटी के माँहि।
तेतो सुन सारौ छिन माँहि निकराऊँ मैं॥
अगन समान सुन याही के सरासन सौं।
याही कर तेरो आज, गरव गिराऊँ मैं॥[162]

'प्रबोधाष्टक' 'भारताष्टक' में भी भारतीय परम्परा, रीतविाजो और संस्कृति का

गुणगान करते हुए कर्म को महत्व देते हुआ लिखा हैं।

परम्परा ये भार रूपिणी नाहि भली है।
कबहु पुरातन रीति रूढ़ि में नाहिं चली हैं।।
उठहु लाल ! मन हरन चरन आगे बढ़िवे दो।
गौरव गिरि पै स्वयं चढहु सबकौ चढ़िवे दो।
बढ़कैं चढ़िकै सिखर पै देहु सवै संदेस सुभ।
करम छेत्र पै पुनि करहु गीता को उपदेस सुभ।।[163]

परम्परागत विषयों से हटकर आधुनिक समस्याओं को भी अपने काव्य द्वारा दर्शाया है। जैसे बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ बढ़ती हुई मँहगाई पर कटाक्ष करते हुए ब्रजभाषा में बहुत ही सुन्दर लिखा हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

कौन से जनम कौ निकारत न जाने बैर।
गैर जैलौ विधना कसाई करै चालीसी।।
हाल भयौ बेढब न ढाल रह्यौ, कोऊ कहूँ।
फैलगई बिपदा करै जनन पै जाल सी।।
उरझे परे है इहाँ, क्यों हूना सुरझि सके।
घेरत है करज उधेरत है खालसी।।
ज्यौई मनमोहन ने, हमसों बिदाई लई।
त्योंई मँहगाई मुंह फारै फिरै काल सी।।[164]

'हमारौ भारत' कविता में भारत पर गर्व करते हुए खेल, खलिहान, प्रकृति को सुन्दर वर्णित करते हुए सत्य, न्याय, पुरुषार्थ और शान्ति से रहने वालें देश को स्वर्ग की संज्ञा देते हुए इस प्रकार लिखा हैं।

विश्व शाँति कौ अग्रदूत जीवन को दाता।
अमर क्रान्ति कौ जनक जगत कौ भाग्य विधाता।।
रीति नीति कौ अतुल, प्रीति कौ धाम उजागर।
सब विधन कौ धनिक कला कौबिद गुन सागर।।[165]

भक्ति के क्षेत्र में भी इन्होंने उच्च कोटि के ब्रजभाषा साहित्य की सृजना की है।

इस के जीवंत उदाहरण 'सूरदास' और 'तुलसीदास' नामक कविता में सूरदास में कृष्ण भक्ति द्वारा कृष्ण प्रेम को वर्णित किया जिस में प्रकृति, गोपी, लीलाओं के द्वारा कृष्ण का वर्णन हैं वही दूसरी और राम के प्रति भी अपनी भक्ति को काव्य में दर्शाया उन के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

'सूरदास'

माखन चाखन चतुर, चारू चितवन सौं प्यारै।
मत सटकन की प्रकृति, धरौ तुम कान्ह ! हमारे ॥
अटकन मटकन बलित, ललित लटकन छवि धारे।
सब चाहत चख सेत स्याम रतनार तिहारे॥[166]

* * *

स्वाभाविक ज्ञान के प्रकाश कौ विकास करि,
भावना कौं शान्ति सुख साहस दिला गयौ।
पूरे जन मानस कौं स्वास्थ करिबे के काज,
मानस कौ राम रस सबकूं पिला गयौ॥[167]

'उद्धव शतक' नामक रचना में चार खण्डों में प्रस्तुत किया। जिसके अन्तर्गत प्रथम खण्ड में विंनती, समर्पण, मंगलाचरण, उद्धव के वचन, कृष्ण के वचन, कुब्जा के वचन को ब्रजभाषा में 28 छन्दों द्वारा वर्णित किया हैं।

द्वितीय खण्ड में उद्धव की स्थिती, उद्धव के वचन, गोपियों के वचन, को 32 छन्दों द्वारा प्रस्तुत किया।

तृतीय खण्ड में प्रकृति, श्री कृष्ण महिमा, ब्रजवासी, ब्रज की महलिाओं, राधिका के वचन, जसोदा नन्द बाबा का आशीर्वाद, उद्धव पर प्रभाव को 46 छन्दों के द्वारा प्रस्तुत किया हैं।

चतुर्थ खण्ड में मथुरा में उद्धव का आगमन उद्धव के वचन को 13 छन्दों द्वारा वर्णित किया।

इस प्रकार 'उद्धव शतक' द्वारा 119 छन्दों का समावेश कर गोपी की वियोग दशा का वर्णन किया है। जिस में प्रकृति प्रेम कृष्ण का वर्णन बहुत सुन्दर किया हैं।

जैसे -

कुंजन निकुंजन कौ, देखियौ दरद देत, बेलिन नवेलिन के, आंटे दुखदाई हैं।
कहै कमलाकर, कलिंद-गिरिनंदिनी के, कूल पै तरङ्गन के, चांटे दुखदाई हैं॥
पंथन पै पैर कौ, उठाइवौ कठिन भयौ, झाड़न पहाड़न के, घाटे दुखदाई हैं॥
ऊधौ ! कह दीजियो, हमारे ब्रजनंदन सौं, अब तो करीलन के, कांटे दुखदाई हैं॥[168]

* * *

सगुन सरुपके, अनूप छवि वारे स्याम, प्यारे अभिरम बड़े, काम के सुहात है।
कवि कमलाकर की, कामना के कल्पतरू, धाम-धाम आपनौ, बखानई करता हैं॥
वेद औ पुरान स्मृति-शास्त्र मत सम्मत है, ऐसे बतरात हैं, कि चित्त कौं चुरात हैं।
रात दिन सो तो सरसात हैं सरोज कैसे, ऊधौ ! हमैं दोज कैसे, चन्द्रमा दिखात हैं॥[169]

इस प्रकार 'तैंलग' जी ने अपनी प्रतिभा द्वारा ब्रजभाषा साहित्य में वृद्धि करते हुए भक्ति, विद्रोह प्रेम जैसें विभिन्न भावों को दर्शाया।

रीतिकालिन के पद्‌माकर के वंशज होने कारण इनके काव्य में रीतिकाल की छवि दिखाई देती हैं। रचना शिल्प में सरलता स्पष्टता और सक्षिप्तता पाई जाती हैं। छन्दों का तो इन्होंने बहुत सुन्दर रूप प्रस्तुत कियाहैं। जिस के कारण इन का नाम ब्रजभाषा कवियों में आदर से लिया जाता है।

21. श्री गोपाल प्रसाद मुद्‌गल

2 जुलाई 1931 को डीग भरतपुर में जन्म लेने वाले मुद्‌गल जी ने अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा समाज की कुरीतियों और राजनीति पर तीखा प्रहार कर लोगों को सही राह दिखाने का प्रयास किया।

ब्रजभाषा में इन्होंने गद्य-पद्य दोनों ही क्षेत्रों में अपनी प्रतीभा की पताका को लहराया। संस्कृति, परम्परा, प्रकृति, कृष्ण-राधा और ब्रज के विभिन्न त्यौहारों को तो प्रस्तुत किया साथ ही समाज की कुरीतियों, समस्याओं जैसे दहेज, मँहगाई आदि पर प्रकाश डाला। उदाहरण इस प्रकार हैं -

बंसुरी जु बजी उजरी-उजरी सुर गूंज उठे उजरे-उजरे।
सुनि बेनु जुरीं उजरी-उजरी रस भाव उठे उजरे-उजरे।

बतियाँ रस की उजरी उजरी सिंगार भये उजरे-उजरे।

बिजुरी सी भई गुजरी-उजरी घनश्याम भये उजरे-उजरे।।[170]

रचना 31-12-66 के द्वारा ब्रज की सुन्दरता का चित्रण किया हैं।

ब्रज के अँगना सु सिंगार किये, नित नूतन रूप दिखायौ करैं।

नंद नन्दन नेह अनन्द मयी, सबके मन मंजु लुभायौ करैं।

जग जीवन ज्योति दिखायौ करै, समता ममता उम गायौ करै।

हुलसायौ करै सिगरे जग कौं, ब्रजलोक कला जस गायौ करै।।[171]

इसी प्रकार रचना 31-12-66 रचना 29-1-67, रचना 14-2-67 रचना 25-3-67, रचना 28-8-67 रचना 9-10-67 रचना 20-12-67 इन विभिन्न रचनाओं को ब्रजमाधुरी रचना में रच कर ब्रज की संस्कृति, परम्परा, कृष्ण राधा और प्रकृति का सुन्दर मनोहर चित्रण किया है। बानगी द्रष्टाव्य हैं।

लागत असाढ़ घन घिरे हैं पहाड़ जैसे, जुत्थन के जुत्थ मानौं पूँजी हौ अनन्त की।

बार-बार आवैं बार-बार बरसावैं वारि, पावै नही पार जाके आदि की न अन्त की।

धुआँधार जलधार जल प्रलय सी देंख, लागत है ठानी जड़ जीवन हनन्त की।

करनी में घनन न नैकहु कसर छोड़ी, तो हू नहिं रुक पाई लहर बसन्त की।।[172]

चन्द्रावली लीली इनकी परम्परागत रचनाओं में से एक हैं। जिसमें राधा कृष्ण सौदर्य को सुन्दर रूप से वर्णित किया हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

कजरा दृग, माँगि सिंदुर सजा, मनमोहनि रूप बना सगर।

लहँगा नव, ओढ़नि ओंढ़ि नई, हरुबा हिय, हाथन में गजरा।

नटनागर नारि बने नर सौं, तन गूगरि रूप लियौ बगुरा।

लखि आप हँसे, कछु नैन हँसे, कछु नैनन बीच हँस्यौ कजरा।। [173]

इसी प्रकार बांसूरी, उधौ सौं स्याम कौ अनुरोध उधौ गोपी सम्बाद, उधौं कौ स्याम सौं निवेदन नंद कौ लाल, मीठी ब्रजभाषा जैसे शीर्षक देकर रची गई रचनाओं में ब्रज की ही झलक हैं। अपने परम्परागत रूप के साथ मानव जीवन के साथ पनप रही विभिन्न समस्याओं पर भी प्रकाश डाला हैं।

दहेज जो समाज को खोखला कर रहा हैं। कोई भी वर्ग हो सब जगह यह

दीमक की तरह फैला हुआ हैं। जिसके कारण लड़की को बोझ समझा जाता हैं माँ-बाप की नींद उड़ा देनेवाले दहेज को समाज से हटाने का प्रयास करने के लिए इन्होंने यह रचना की हैं।

एक ओर बिटिया सयानी दिन दूनी होत, दूजी ओर गाँठ माँहि कौड़ी है न पाई है।
घर माँहि घरबारी, पोटुआन माँस नौंचै, बाहर हमारे दीन, बेस की हँसाई है।
पाटन के बीच हम, रात द्यौस फँस रहे, आफत में आई जान आंखिन में आई है।
हम दुविधा में परे, भैया कित माऊँ जाएँ, इत माऊँ कुआ अरू उत माऊँ खाई है॥[174]

राजनीति नेता पर भी कटाक्ष करते हुए भी अपने विचारों को दर्शाया हैं। मानहानि विधेयक पारित हेबे पैं, मानहानि विधेयक वापिस लेबे के पीछै राजनीति जैसी कविताओं में मुदगल जी ने राजनेताओं का समाज के प्रति रूख पर कटाक्ष किया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

हमनै जिताए फिर, गादी पै बिठाय दिए, सेवा कर जाइंगे तौ, सीस पै चढ़ाइंगे।
अपने ही अपने जु, पेटन मल्हते रहे, जनता की नजरन, बेगि गिरि जाइंगे।
जोड़ तोड़ मेंई कहूं, समै कूं बिताते रहे, एक दूसरे की टांग, खीच जो सिहाइंगे।
फूलदान जे सजाए, कूड़े दान डारे जाँय, पाँच साल बाद फिर, लौटिकैं न आइंगे॥[175]

इस के अलावा देश की समस्याओं गरीबी, मँहगाई, भ्रष्टाचार आदि पर लिखा हैं। कि देश स्वतंत्र होने के बाद भी समस्याओं का अन्त नही हुआ है चारों और कुछ न कुछ समस्या जरूर हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

पावस के बदरा बनिकै, नब रूप धरौ सुमनै कजरारौ।
अम्बर में तुम खूब उड़े, अब तौ अबनी तल पै पग धारौ।
लूमत-झूमत आवत हौ, इतरावत हौ करिकैं अँधियारौ।
हेरत-हेरत हार गये अब, सूख गये सब हार निहारौ॥[176]

* * *

देस सुतंत्र भयौ अपनौ, नहि भाग अबै तक हू जग पायौ।
ओढ़न कू, न मिल्यौ कबहु, हमकूं न बिछावन कूँ जुर पायौ।
ना भरपेट मिल्यौ हमकूं, नहिं पेट की आग बुझावन पायौ।

ना कुटिया कूं मिली खटिया, नांहि साबुत बान न साबुत पायौ॥[177]

इस प्रकार से कवित्त, सवैंये छन्द के साथ गीत, नवगीत भी लिखे है। स्वतंत्र भारत का चित्र प्रस्तुत करते हुए यह नवगीत का उदाहरण प्रस्तुत है

''जब सौं सत रंगनि किरनन सौं बन मह क्यौ,
जब सौं इन बाहन उजियारौ आयौ है।
तब सौं अपने पौयन नैं पैंग भरे हैं,
हमने थोरे दिन में यौवन पायौ है।''[178]

गद्य में कहानी एकांकी, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, संस्मरण, डायरी, उपन्यास, साहित्यक विधाओं की रचना की हैं। ''राम राम सबन कू'' निन्यानवे के फेरे कल्ल की कल्ल देखी जाएगी, भैंस कौ खन्ना, मन चंगा तौ खटौती, में गंगा, दर्जन ऊपर दगो, हरया म्हारौ, पौगा पंच, कजखारों काका, पिसन वारे मुसीजी, कि सोरी पंडित, पन्ना-चौकीदार, मुकन्दी आदि गद्य रचनाओं द्वारा समाज के विभिन्न, विषयों समस्याओं को प्रस्तुत किया हैं व्यंग्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया।

इस प्रकार ब्रजभाषा में इन्होंने काफी उच्च कोटि के काव्य की रचना की। 1978 में ब्रजभाषा साहित्याकर पुरस्कार से अलकृत भी किया गया।

22. श्री राधा कृष्ण ''कृष्ण''

नन्दकुमार जी के मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और सान्धिय में ब्रजभाषा में रचना करनेवाले राधाकृष्ण जी का जन्म 14 जुलाई 1928 को भरतपुर में हुआ।

गुलाम देश की समस्याओं, परिस्थितियों और आजादी के लिए संघर्ष कर रहे वीरों को उनके साहस को देखा महसूस किया और कविधर्म का पालन करते हुए उन्ही का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत कर दिया।

अपने हृदय में स्थित भक्ति भावना को ''श्री कृष्ण नृत्य अमृत ध्वनि'' में कृष्ण सौदर्य को दर्शाया है। अमृत ध्वनि, भ्रमरगीत, उद्धव-गोपी प्रकरण, उद्धव द्वारा श्री कृष्ण का उत्तर, श्री राम दरबार और अमृत ध्वनि जैसे शीर्षक दें कर लिखी गई कविताओं में अपने भक्तिभाव को वर्णित किया हैं। श्री राधा गोपीनाथ परिचय, काव्यशतक, काव्य कलश इन के प्रकाशित ग्रन्थ हैं. ब्रजरचना माधुरी में इन विभिन्न

शीर्षकों के माध्यम द्वारा इस प्रकार लिखा हैं।

बम बम हर हर होत स्वर डम डम डमरू बज्र।
सुकवि कृष्ण कैलास गिरि शिवशंकर छवि छज्र।
शिव शंकर छवि छज्रज्रत् सिर सज्रज्रत ससि।
गज्रज्रत गिरि गंग अनंगहु लज्रज्रत लसि ।
रज्रज्रत अरधंग उमा लखि तज्रज्रत जम।
धज्रज्रत खल भज्रज्रत जन बोल ब्बम बम।।[179]

* * *

जानै हौ पहिलैं ही गोपिन की गति मति मैं अति कौ कियौ ऊधम मोते महाराज है।
कृष्ण कवि करनी में कसर न राखी नैंक गारी दई भारी तज नारी लोक लाज है।
ब्रह्म ज्ञान उपदेस मेरौ तौ बिगर गयौ बावरौ बनायौ आयौ ज्यों त्यों कर भाज है।
भोग लियो भाग लिख्यौ सोंह स्याम सुन्दर की जर गयौ वियोग में योग कौ जहाज है।[180]

इस के अलावा ब्रजरचना माधूरी में समाज की विभिन्न समस्याओं पर भी अपने विचार प्रस्तुत किए है। ''अन्न-जल समस्या'' में पानी और अन्न की समस्या पर प्रकाश डाला हैं। इस के अलावा बजट, न्याय व्यवस्था, भष्ट्राचार, चमचा, दहेज, हिंद-पाक युद्ध 1971, सत्य अहिंसा कलयुग, पाप-पुन्य, शिक्षा जैसे शीर्षकों द्वारा समाज की न्याय व्यवस्था जो गरीबों के शोषण की वजह हैं भष्ट्राचार चमचागिरी को बढ़ाया धनी लोगों के हथकंडों से प्रभावित हो देश प्रगति नही कर पा रहा हैं राष्ट्रीय एकता पर अलगाववाद के काले बादल छा रहे हैं जो एक व्यक्ति से दूसरें व्यक्ति में धृणा को जन्म दे रहे हैं। इन्ही सब को ब्रजभाषा में पीरों कर इन समस्याओं की तरफ लोगों का ध्यान आकृष्ट किया हैं इस के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

भष्ट्राचार :

भ्रष्टाचार बतात हैं भारत में सब लोग।
मूक बने से सह रहे है असाध्य यह रोग।
है असाद्य यह रोग खाद्य सामग्री सारी।
भरी भ्रष्टता सौं असली में नकली डारी।

कहै कृष्णा कवि चल रही या ही सों सरकार।

सहस बाहु सम व्याप्त है व्यापक भ्रष्टाचार।[181]

दहेज :

भारत में भारी या दहेज की प्रथा की कथा, कहते कही जात ना जियरा जरात है।
कृष्ण कवि देख केख सुन-सुन मरे जात, दीन हीन कन्या दुखी जीवन बितात है।
प्यार कौ बनायौ व्यापार धनिक लोगन नें, भष्ट्राचार अत्याचार कौ ना पार पात है।
कै तौ या कुरीत कौ उन्मूलन सपूल करौ, ना तौ वरदान अभिशाप बन्यौ जात है॥[182]

शिक्षा :

शिक्षा सों भिक्षा भली या कलयुग के माँहि।
भिक्षा सों भोजन मिलै शिक्षा सौं भटकाहि।
शिक्षा सों भटकाँहि स्वान धौबी सम डोलैं।
भिक्षा वारे नाम राम कौ तौ मुख बोलै।
कहै कृष्ण कवि धन के बिन ही पावै भिक्षा।
किंतु बिना धरनी पै ना संभव शिक्षा॥[183]

इस के अलावा देश में चल रहे आंदोलनों में वीर साहसी सपूतों के बलिदान साहस का गुणगान करते हुए वीरों को प्रोत्साहीत किया जिससे काव्य में अलग ही चेतना भर दी। जिसमें निम्न हैं राष्ट्रीय पिता-महात्मागांधी, मेजर सोमनाथ परम-वीर चक्र 1947, लैफ्टीनैन्ट कर्नल किशन सिंह राठौड़ महावीर चक्र हिन्द पाक-1948, लासं नायक लादूराम वीरचक्र हिंद-पाक युद्ध 1948, राइफिल चालक रावत सिंह वीरचक्र हिंद-पाक युद्ध 1948,सूबेदार-साँवल रणधीर सिंह वीरचक्र हिंद-पाक युद्ध 1948, सैकिन्ड लैफ्टीनैट रामस्वरूप वीर हिंद पाक युद्ध 1948, जमादार प्रभाती सिंह वीरचक्र हिंद-पाक युद्ध 1948, सूबेदार आनरेरी कप्तान बसन्त राम - वीरचक्र हिंद-पाक युद्ध 1948, जमादार छोटू सिंह - वीरचक्र हिंद-पाक युद्ध 1948, सूबेदार मेजर आनेरेरी कप्तान गोपाल राम वीरचक्र हिंद-पाक युद्ध 1948 आदि वीरों की विरता का वर्णन करते हुए लिखा है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

जैसलमेर सीमा पै मेजर पूरन सिंह पूरण प्रण पार पाक सेना निकारी है।
कृष्ण कवि आक्रमण शाहगढ़ पै करकें पाँच दिना युद्ध कियौ शत्रु सैन हारी है।
मारी पुनि मार चढ़ चौकी सादिवाला औट अंत में तनोट पै घायल भयौ भारी है।
पैंसठ के वीरन ने ऐसौ बहादूर वीर हुआ है न हौनौ जैसौ वीर चक्र धारी है।।[184]

इस प्रकार कृष्ण जी ने अपनी प्रतिभा द्वारा भक्ति, राजनीति, सामाजिक समस्या, वीरों का प्रशंसा एकता के लिए विभिन्न छन्दों की रचना कर ब्रजभाषा साहित्य के भण्डार की दिनप्रतिदिन वृद्धि में अपना योगदान दिया। इन्हें भरतपुर, डीग, हिडौन, करौली, धौलपुरी, जयपुर, श्रीनगर और बंबई से पुरस्कारों द्वारा अलंकृत किया गया।

23. श्रीमती विद्यारानी

राजस्थान की ब्रजभाषा कवियत्रीयों में विद्यारानी मीरा की भांति साहित्य के लिए अपना जीवन पूर्ण रूप से समर्पित कर दिया। ब्रजभाषा में इन्होंने कवित्त, सवैया, और पद लिखे है। बचपन में इन्होंने जितना भी पढ़ना लिखना सीखा वह सब अपने चाचा से घर में ही सीखा क्योंकि उस समय लड़कियों को पढ़ाया नही जाता था। इस के बावजूद इतने सुन्दर ढ़ंग से रचना कर इन्होंने काव्य के भण्डार को सुशोभित किया। नौं वर्ष की उम्र से ही ब्रजभाषा में रचना करना प्रारंभ कर दिया।

इन की 1936 की रचना ''शिव महिम्नास्त्रोत'' में सिव महिमा के श्लोकों का ब्रज में अनुवाद किया।

''शिव सरन सतक'' नामक रचना में अपनी भक्ति भावना को प्रस्तुत किया हैं शिव के प्रति अपने प्रेम भाव, निश्चल (निश्छल) भावना को ब्रजभाषा में इस प्रकार रचा हैं -

अब नहिं नाथ अधिक तरसेयै,
अगुहड़ सहे सहत जे अजहू दुख असह न सहेयै।
हम सम के प्रति रहनि रहे जों सोईं अजहुं रहेयै।
दीन बन्धु सरणागत रक्षक जो कहवाये कहेयै।
मोसे आपति ग्रसित चरण तें त्यागि काह प्रभु पेयै।[185]

''मेरे प्रभु और कमनीय कुसुम'' संग्रह में भक्त हृदय की छटपटाहट ईश्वर के

दर्शन की अभिलाषा वियोग की स्थिति का वर्णन है। तो दूसरी और समसमायिक संबधित कई कविता का संग्रह हैं। इस में ब्रजभाषा और हिंदी की मिली जुली रचनाए है। बानगी द्रष्टाव्य हैं।

जीवन गमैया मत हार पीठ फेर अइयो,
जोपे जाये हो हमारी कोख के सपूत वीर।
रहियो अटल टारे टरियो अतंक के न
बीसो बिसे ईस बिसबास उर धारे धीर।
फोरि-फोरि मुण्ड अरि झुंड कुंड काल माँहि,
होमि-होमि भारत की हरियो तृषित वीर।
छेदि-छेदि बेरिन को रक्त के फुहारन सों,
दीजो रंग हर्षित ह्वै स्वजै पताका चीर॥[186]

इस प्रकार भक्ति के भाव से परिपूर्ण रचनाओं कों इस प्रकार से प्रस्तुत किया कि इन्हें मीरा कहा जा सकता हैं। इस के अलावा ब्रज रचना माधुरी में ''श्री दुर्गेश नन्दनी विनय पत्र, भजन, जैसे शीर्षक देकर लिखे गए। भजन, विधा जी की भक्ति भावना को दर्शाति हैं।

इस के अलावा ब्रजरचना माधुरी में समसमायिक, समस्याओं पर भी लिखा हैं ''तमाखू के दोस'' नामक शीर्षक लिखकर तमाखू के दोषों को बताया और नौजवानौ से आग्रह किया है कि-

खाँसी करै हृद जोर हरै अफरा दम महि दया बिहरै।
खेद धृणा मन ह्वै तिन के पुनि सोच तिन्हेंन बनै बिगरै।
सेवी तमाखू के चाहे कहे नित हुक्का के फुक्का फरै फहरै।
लाज पै गाज परै किन आज समाज को ताज बने बहरै॥[187]

इसी प्रकार समस्या राज की, समस्या ते समस्या-माल हैं, समस्या तुलसी, समस्या मतवारें हैं समस्या-नीकी समस्या रन में जैसे शीर्षको द्वारा विभिन्न समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ठ किया। और अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय देतें हुए ब्रजभाषा के प्रति अपने प्रेम को दर्शाया।

24. श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

बचपन से ही काव्य में रूचि रखनेवाली इन्दिरा जी का जन्म 4 जनवरी 1933 को कानपुर में हुआ। इस में परिवार का पूर्ण रूप से सहयोग मिला। भक्ति और समस्यांओं को इन्होंने ब्रजभाषा काव्य के माध्यम से बहुत ही रोचकता से वार्णित किया। साथ ही अनुवादन कला में निपुणता दिखाई।

'ब्रजरचना माधुरी' में ''भारत की नारी'' में नारी की समस्या को प्रस्तुत किया है, कि लड़की का जन्म माँ-बाप की खुशी को गम में बदल देता है। पराया धन, धीरज की मूर्ति जैसे नारी रूपों की रचना की है।

पूत पाइ गदगद, भये अति मातु पितु,
उझके उछाह सौं उमंग अति भारी है।
कांसे के बजे हैं धार, लड्डुअन भोज उड़े,
बहन बुआन मिललि, आरती उतारी है।
कन्या की जनम मानो, विधि को जुलम भयो,
बेटी संग लाई मानो, विपति पिटारी है।
हुलस्यो न कोई कहूँ, बाजत बधाई नाहि,
पच्छपात की सताई, भारत की नारी है।[188]

इसी प्रकार बिगड़े पूत पर भी लिखा है, कि लड़के आज आधुनिकता के रंग में सिगरेट और शराब में डूबते जा रहे हैं। शीर्षक है ''विगरैल''

ऊँचाई कैं काँध, चढ़ाइ कै भौंह, गोलाइ कैं होट गिटापिट बोलैं।
बाल कौं लागत लाज न नैंकुबनी बिगरै इने उत डोलै।
सिगरेट के फूंकन औ मदिरान के घूंटन में मरजाद कुं धौलै।
मेरी माय कहा भई, हाय सुदेस की बेटी कुभेस में डोलै।[189]

ड्रग्स नशा जो समाज को अन्दर ही अन्दर खोखला बनाता जा रहा है नवयुवकों को गलत रास्ते पर ले जा रहा है। इस को दोहे के रूप में इस प्रकार लिखा है।

ड्रग सौ कबहूँ न सेइये, ये हैं बिस बिकराल।

नागदंस सौं हूँ बिकट, अति कराल यह काल॥[190]

पश्चिमी सभ्यता के रंग में भारत की नारी भी अपना धर्म भूल गई हैं। इस पर भी कटाक्ष करते हुए इन्होंने सुदेस की बेटी में लिखा है।

उंचाय कै काँध, चढ़ाइ कै भौंह, गुलाय कै होंठ गिटापिट बोलै।
बाल कौ लागत लाज न नैंकु बनी बिगरैल इने उत डोलै।
सिगरेट के फूंकन ओ मदिरान के घूंटन मे मरजाद कूं घोलै।
अब मेरी माय कहा भई हाय, सुदेस की बेटी कुभेस में डोलैं॥[191]

बढ़ती हुई आधुनिकता जिंदगी ने जहाँ मानव को बहुत सी सुविधाएं प्रदान की है वही बहुत सी चीजों को भंग भी कर रहा है। विज्ञान चमत्कार रूप माना जाता है, जो मानव की प्रगति का मूल हैं उसीके कारण पर्यावरण प्रदूषण से मानव स्वास्थ क्षमता दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है, उसीको ध्यान में रखते हुए इस प्रकार लिखा है **''पर्यावरण''**

सूखन रूख लगे चहुँ ओर भयौ अति सोर सबैं बिललाने।
पसु पच्छी डरे चहुँ ओर मरे नर नारी और बाल फिरैं बितलाने।
बिनु पानी कहौ कैसे जीव धरैं हहरैं हियरे मन मैं बिचलाने,
अकाल तौ लीलि गयौ सिगरौ उजरयौ जब बाग तौ का पछिताने।[192]

दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही जनसंख्या से विभिन्न समस्याएं जन्म ले रही हैं जैसे गरीबी, बेरोजगारी, मँगहाई आदि इसका कारण बड़ा परिवार ज्यादा लोग हैं इस पर भी इन्दिरा जी, इस प्रकार लिखती हैं।

बड़ौ परिवार

कबौं आटौ चुक्की कबौं दार चुकी दधि दूध मिठाई कहूँन दिखाते,
कबौं पोथी नहीं कबौं बस्ती नहीं कबौं फीस नहीं सौ रहैं खिसियाने।
घर बारी है रारि मचाय रही कैसे कीजै गुजारौ घरै नहिं दाने,
संतान की भीर भरी घर मैं तब चूंकि गये अब का पछिताने।[193]

''आज कौ युवक'' में लिखा है। कि आजकल युवक फजुल खर्च ज्यादा करते हैं इसी बात को ध्यान में रखते हुए संचेत किया है।

आज के युवक

कौमिक कौ पढ़िबो दिन रैन सुनैं किरकेट कमेन्ट्रि सिहाने
हर साँझ न छोड़ैं सिनेमा कौ देखिबौ लाल भये विडियो के दिवाने।
सिगरेट न छूटैं कबौं कर सौं औ चढ़ाई हसीस चढ़े असमाने,
तन छीन भये दुतिहीन भये मतिहीन भये अब का पछिताने।[194]

इस प्रकार आधुनिक युग में पनप रही समस्याओं को इन्दिरा जी ने ब्रजभाषा में लोगों के द्वारा पहुँचाया।

इस के अलावा प्रकृति चित्रण भी इनकी रचनाओं की शान रही है। होली पावस द्वारा विभिन्न छन्दों द्वारा प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है।

बसन्त का वर्णन करते हुए इस प्रकार लिखा है।

सरसौं सरसै चहुं ओर लसै, हरियारि बसंत छटा सरसै।
बगुला कहुं सारस डोलत हैं, कहुं मोरन को परिवार लसै।
कहुं घूंघट बारी गंवारी बधू, कहुं साँवर-गौर किसोर दिसै।
ब्रज मंडल मंडन कारज आज, समेत समाज बसंत लसै।[195]

* * *

होरी तौ हौत है नाह के नेह सौं रंग गुलाल अबीर सौं नाहीं,
जैसी सुधा बरसै मधु बैंनन सो रस छपान व्यंजन नाहीं।
नैन के सैन सनेह पगे छलकै मदिरा जो छकी कहुँ नाहीं,
प्रीत की रीत निर्भे दुहूँ और (तौ) अपार अनंद या होरी में आही।[196]

'होरी' में ब्रज की होली का सटीक वर्णन हैं। भाषा के माधुर्य ने जिसमें माधुर्य रस भर दिया है।

इन्होंने अनुवाद भी किया, कवि शैक्सपीयर की 'सांचौ सनेह (True love)'मिल्टन की ईस कृपा (On His Blinclness)वर्डसवर्थ जगती जंजाल बीच (The World is Too much with us) शैल की बादल (Soldier Drem) हापनिकन्स की प्रभु, की रीत (Then Art Just my lord) डैबीजकी फुरसतें के दिन (LEH sure) और टी. एस एलियर की जराजीरन में (Geronhan) जिस के

उदहारण हैं।

प्रीति की गैल, प्रतीति भरी तहँ बाधन कौ कछु काज सरै नहिं।
नेन सौ साँचौ वही कहिये जो असाँचे पिया सौं सनेह हरै नहिं।[197]

***

खचिबे कमैबे बीच, बहुबिध परपंच बीच,
जगती जंजाल बीच, फंसे सुख मानैं हम।
माय रूप धाय रूप, ज्ञान गुन दानि रूप,
प्रकृति सनेहिनी न नैंकु पहिचानैं हम।
स्वारथ मैं बूड़यौ मन, उवै न उदात भाव,
बयस नसावैं परमारथ न जानैं हम।
सहराती जीवन की, कीच बीच ऐसे फँसे,
गाँव कौ अपनपै न नैंकु उर आनैं हम।[198]

इस प्रकार इन्दिरा जी ने ब्रजभाषा में विभिन्न विषयों पर लिखने के साथ-साथ अनुवाद भी किया जो कि सराहनीय हैं। अपने छन्द, कवित्त, सवैयों से उन्होंने ब्रजभाषा काव्य के वृद्धि तो की साथ ही अपनी प्रतिभा से पाठकों को आन्नदित किया।

25. श्री वरुण-चतुर्वेदी

हास्य व्यंग्य से अपनी रचनाओं द्वारा लोगों को मोहित करने वाले तरुण चतुर्वेदी जी का जन्म 16 फरवरी 1951 को भरतपुर में हुआ। ग्यारवीं कक्षा से कविता लिखना शुरू कर दिया था। सर्वप्रथम ब्रजभाषा और हिन्दी मिली जुली भाषा में समस्या ''भारत निराला हैं'' में समस्या पुर्ति करते हुए हिन्दी साहित्य सम्मेलन में प्रस्तुत की जिसके बोल इस प्रकार हैं।

एक दिन भोर भए भनक परी है कान, भज्यौ भगवान औ सँभार्‌यौ कर भाला है।
भक्त है भवानी कौ भैरवी करैगौ नृत्य, भोले सौ भंगडी भुजंगन की माला है।
भाजि कैं मिल्यौ जो जाइ, भाजि गए सत्रु कह, भूलि गई मैया भमक उठी ज्वाला है।[199]

इन्होंने हंसी-हंसी में देश की समस्याओं को रच कर पाठको को हँसायाँ वही दूसरी ओर सोचने पर भी मजबूर किया इन के विषय आधुनिकता से जुड़े राजनीति,

नेता गरीबी, बेकारी, मँहगाई आदि रहें। साथ ही पैरोड़ी की रचना भी इनका शौक रहा।

''ब्रज रचना माधुरी'' में ''सरिता'' नामक शीर्षक दे कर कुछ सवैयों की रचना की हैं। जिस में कृष्ण, राधा, और गोपियों के माध्मय द्वारा ब्रजवर्णन करते हुए भक्ति को रचा।

री सखि तोसौं कहूं मन की, मन मेरे समाय रह्यौ दुख भारौ।
भोरहिं ते मैं मिलै चहौं मोहन, जान कै जाय छुप्यौ बजमारौ।।
ढूँढत ढूँढत पांय पिराने है, पै न मिल्यौ मन को उजियारौ।
मोहिनी डार गयौ मन मोहन, नन्द की धेनु चरावन बारौ।।[200]

वही देश के वीरों को प्रोत्साहित करते हुए उन के बलिदान को महान मानते हुए डरपोक नौजवानो पर व्यंग्य किया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं

देख कैं संकट देस पै जो नर, केवल एक पुकार में आवें।
जान हथेरी पै लैकैं चलैं, जो कहौ पल में तौ पहार ढहावें।
भारत मात की लाज बचाइबे, वीर जो लोहू पै लोहू बहाबें।
ऐसे सुबीरन की करनी लखि, रीझत हैं सुर सीस झुकावें।।[201]

''कविता कुसुमांजलि'' में ब्रजभाषा में गंगा, यमुना जैसे पवित्र स्थलों की महिमा द्वारा पाप पुण्य और साथ ही कृष्ण की बाल लीला का वर्णन करते हुए असत्य पर सत्य की विजय को दर्शाया हैं।

'ब्रज रचना माधुरी' में 'गीत मंजरी' के माध्यम से नेताओं पर कटाक्ष करते हुए नेताओं की पोल खोली हैं

''नेतागीरी कौं चक्कर''

नेतागिरी के चक्कर में मेरे यार मार दये पत्थर ते।
घरबारी रही है ताने मार निखट्टू निकर घर ते।।
जबते मैं चुनाव में हारौ डोलूं मारौ मारौ।
या चुनाव नैं धोबी कौ कुत्ता मोकूं कर डारौ।।
भैया नांय मिली ता दिन ते घर में दरिया-दार।

मार दये पत्थर ते....[202]

''शीतऋतु'' के द्वारा एक तरफ शीत की ठंडक दूसरी ओर आधुनिकता वैज्ञानिकता के कारण बदल रहे लोगों पर कटाक्ष किया हैं जैसे कपकँपी

मचि रयौ सीत रितू कौ सोर सब कँपैं रसिया।
बलवान अरु कमजोर सब काँपैं रसिया।[203]

''समय बड़ौं बलवान''में समय की बदलती हुई चाल का जीवन पर प्रभाव बताया हैं पल में राजा पल में रंक जैसा समय बदलता जा रहा है। इस के माध्यम से बदलते जमाने में बदलते रिशते रीति-रिवाजों, मान्यताओं की ओर ध्यान खींचा बानगी द्रष्टाव्य हैं।

काँव काँव कागा जब बोलै, कांकर मार भजावत हैं।
एक समै ऐसौ आवत है ताकूं टेर बुलावत हैं।
बखत परे पै करत निरादर बखत परे सम्मान रे।
भैया सब जग जानैं......[204]

''कलयुगी नातौ'' इस शीर्षक को देते हुए कवि ने कलयुग में माँ-बाप से संतानों के रिशतों में आ रही दूरी पर व्यग्यात्मक ढ़ंग से लिखा हैं-

कान्हा काफी पीवे आ जइयौ तू संजा कूं घर पै।
तू संजा कूं घर पै मम्मी पापा ते मत डरपै॥
गरम गरम तोकूं काफी पिलाउंगी।
ऊपर ते नमकीन खवाऊँगी॥[205]

''अरदास एक गंजे की'' में लोग पहले भगवान से सुख शान्ति माँगते थे। किन्तु आजकल कलयुग में स्वार्थी भक्तों की सख्या बढ़ गई हैं जो खुद के बारें में सोचते हैं दूसरों को भी कष्ट देते है। इन्ही पर व्यंग्य करते हुए इस प्रकार लिखा हैं

प्रभु मेरौ एक काम तौ करौ।
मैं हू भगत तिहारौ गंजौ मेरो कष्ट हरौ।
कैऊ साल सूखा में बीते कर देउ हरौ भरौ॥[206]

'पैसा'में धन की महत्ता को दर्शाया है कि धन ही आज भगवान हैं जिस के

पास धन है उसे लोग पूजतें और चापलूसी करते हैं इस को व्यंग्यात्म रूप से इस प्रकार लिखा हैं,

जब तक पैसा रह्यौ पास में तब तक सबनें प्रीत निभाई।
पैसा खतम भयौ मानव नैं शैतानी सूरत हू दिखाई॥[207]

बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्यां पर व्यंग्य करते हुए मँहगाई को भी दर्शाया है। उदाहरण इस प्रकार हैं

पैदा करि करि कैं सन्तान बलम तैनै फौज बनाई है।
फौज बनाई है, देखि कितनी महंगाई है॥
बना लई तैनैं दर्जन डेढ़, करी अपनी और मेरी रेड़।
तनखा तेरी नैंक सी ज्यौं सागर में बूंद।
सोय रह्यौ तू चैन सौं फिर हु अँखिया मूँद॥
फिर हु आँखियाँ मूंद मौत क्यों पास बुलाई है।
पैदा करि करि कैं....॥[208]

शिक्षा को महत्व देते हुए ''जो पढ़ै सौं बढ़ै'' रचना द्वारा घरकी लाज के लिए शिक्षा को महत्व देते हुए इस प्रकार लिखा है -

हमकूं अ आ इ ई की कीताब लै अइयौ देबरिया।
लइयौ देबरिया हाट लै जइयौ देबरिया॥
घर सौं कोऊ पाती आवै हम पै पढी न जाय।
काऊ और ते जो पढवाऊँ सबइ भेद खुल जाय॥
हमें पढजइकैं घर की लाज बचइयौ देबरिया।
हमकूं अ आ इ ई....॥[209]

इस प्रकार वरूण चतुर्वेदी जी ने 'कहानी कलम की' तिरंगा, सद्भावना गीत, हमारौ देश जैसी रचनाओं द्वारा राष्ट्रीय भावना को प्रस्तुत किया। इनका अपनी रचनाओं को दर्शाने का ढ़ग अनूठाँ है। जो व्यंग्यात्मक होने का कारण पाठको का लुभाता है।

26. श्री माधौप्रसाद 'माधव'

14 जनवरी 1921 को लखनपुर तहसील नंदबई, भरतपुर में श्री माधौप्रसाद यादव का जन्म हुआ। सीधे सादे स्नेही स्वभाव के इन कवि ने वीर रस पर ज्यादा जोर दिया। इन के काव्य में देशभक्ति, राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी होती थी। इन्होंने करीब 500-600 छन्दों की रचना की। इन के विषय राधाकृष्ण, त्यौहार, वर्गभेद, नेता, गरीबी आदि रहें।

'माधव' जी ने प्रकृति का सुन्दर वर्णन करतें हुए जीवन की पीड़ाओं को प्रस्तुत किया।

पेड़न की डारिन में कोंपल
धरती पै चहुं दिस है हलचल॥[210]

'ब्रजरचना माधुरी' में माधव जी ने विभिन्न शीर्षकों के माध्यम से रचना कर विभिन्न विषयों को प्रस्तुत किए है 'कवि की अभिलाषा' में ब्रजभाषा की उन्नति की अभिलाषा व्यक्त की हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

ब्रजभाषा भाषान में, कान्हा की है दैन।
रस पीयौ रसखान ने, सूरा पायौ चैन॥
सूरा पायौ चैन, कृष्ण गुन मीरा गाये।
सुन सुन पियौ पीयूष प्रेम गंगा में न्हाये॥
डूबे धन आनन्द हरी तुलसी जन त्रासा।
जन जन की प्रिय होय, करै उन्नति ब्रजभाषा॥[211]

'कवि और कविता' में सच बोलने वाले निर्भीक कवि की भावना को वर्णित किया हैं जिसका काव्य देश का दर्पण होता हैं जो सच को प्रकट करता हैं

कवि होता निर्भीक, चापलूसी का जानै।
साँचे बोलै बोल, काहु की धौस न मानै॥
सच्चा कवि है वही, समय का मूल्य बतावै।
हो समाज गुमराह, सोध कर राह दिखावै॥
कवि दर्पन है देसका, भला बुरा करके मनन।

सदाचार सद्भाव का, जन मन में करता सृजन॥[212]

'कवि नगरी परिचय' में भरपुर लोहगढ़ के शूरवीरों का गुणगान किया हैं जिन्होंने हमलें का डट कर सामना किया। ओजपूर्ण भाषा में वर्णन किया गया हैं उदाहरण इस प्रकार हैं-

कैसे थे अडंगी जंगी वीर लोहा गढ मांहि, सूर वीरता की जिन सुनी ये कहानी है।
दिल्ली चढ़ धाये रन लोहा बजाये छाये, मुगलन छकाये करी काट-काट घानी है॥
'माधव' महान वीर मानी अँगरेज हार, सत्तर वार जिनकूँ पिवायौ खूब पानी है।
चिन्ह वीरता के ठोक छाती कह रहे आज, अष्टधातु के किवार जीत की निसानी है॥[213]

'बेरोजगारी' में देश की समस्या पर अपना विचार प्रकट करते हुए नौकरी के तलाश में भटकते युवक की मनःस्थिती को इस प्रकार लिखा है-

फिर्‍यौ करूं तेली कौ बैल बन घानी में नित्य, इतने पैऊ मिलें ना रोटी पेट भरकैं।
झूठ साँच बोलूं औ डोलत हूं वौरान भयौ, ढोवत हूँ बोझ भार सुनौ इमि खर कै।
मेरे पाप दापन कौ मैंही भोगूंगौं भोग, सुत सुता द्वारा सब साथी यार जरकैं।
सौ सौ कोस ढूंड आयौ काम कछु मिलै नाहि, बिना रोजगारी रोज गारी देते घरकैं॥[214]

'नेतान कौ आगमन' में नेताओं के बारे में रावण राम जैसे राजाओं की तुलना करते हुए आज के नेता की तस्वीर को खींचा हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

सतजुग में हिरण्याक्ष हिरण्य कश्यप सौं, दुखित मही थी धर्म ग्रंथन बताये हैं।
त्रेता में रावन अहिरावन अजीत भये, हा हा कार भारी ऋषि मुनि हू सताये है।
द्वापर में जरासंध कंस बलसाली बड़े, अमित अनीत करीं धर्म किले ढाये हैं।
राम जानें वे ही मिल दलबल जोर अब, धार अवतार सभी नेता बन आये हैं।[215]

'कलम कहे कान में' कवि ने घूसखोर, भष्ट्राचार की पोल खोलने वाली चाबी बताया हैं, उदाहरण इस प्रकार हैं -

मेरी ही कृपा सौं आज प्राप्त कियौ मंत्रीपद,
भूल्यौ है असली रूप, भूल गयौ सान में।
भाई बिरादरी कूं गिनै नांहि नैकउ अब,
कुर्सी की खातिर घुस बैठ्यौ चमचान में।

मोरी की ईंट मेन गेट पर लगाय दई,

मांगत है टूक कछू रही नहीं ध्यान में।

जाली जालसाजी की बात लिख मोसौ नित्य,

है है मुख कारौ तै कलम कहै कान में।[216]

टी.वी. आधुनिकता का ऐसा यंत्र हैं जो पाश्चात्य संस्कृति को दिनप्रति दिन बढ़ावा दे रहा है, बदलते युग में बदलती नारी पर इस के प्रभाव को इस प्रकार लिखा हैं

लाज ढ़की अजलों सुनौ, जब लौं दर्सन दूर।

पुत्र वधू बेटी सभी, नाच रहीं इमि हूर॥

नाच रही इमि हूर, सभ्यतदा लुप्त भई है।

वे सरमाई ओढ़, देस नें आज लई है॥

टी. वी. ने टी. वी. करी, ठप्प हुये सब काज।

अर्ध नग्न अवयव लखौ, कैसे बचिहै लाज॥[217]

'जन-सक्ति' में माधव जी ने जनता का अपनी शक्ति पहचानने को कह रहे हैं साथ ही अहंकार को त्याग कर प्रगति के मार्ग पर बढ़ा जा सकता है, अहंकार से वापस उसी रास्ते पर पहुँच जाओगें। इसलिए सही शक्ति को पहचान कर उन का उपयोग करने को कह रहे हैं- उदहारण इस प्रकार है -

सक्ती जनता की लखौ, पहुँचा दई अकास।

अहंकार कौ चूर कर, बुला लई फिर पास॥

बुला लई फिर पास, अकल बाकूँ सिखलाई।

दैकैं गहरी चोट, पुनः सत्ता में लाई॥

त्रिया हठ कूं त्याग, दिखा जन अपनी भक्ती।

सत्ता मद सौ अधिक, सक्तिसाली जन सक्ती॥[218]

इसी प्रकार सामाजिक कार्य सेवा, नश्वर जीवन, ताऊ पै अभिमान, पर कवित्त सवैयों, छन्दों की रचना की और कलयुग पर एक गीत लिखा। भष्ट्राचार कौ एलान आजादी दीवानेन की कहानी इसी प्रकार की रचना हैं

उधौ सों गोपीन कौ कहनै, राधा कौं उधौ सौं कहनो, अगंद के समझाइबे पैं

रावन ने कहा कही, राधा छवि और हनुमान भी इनकी रचना हैं जिस में भक्ति रुप प्रस्तुत किया हैं।

इस प्रकार 'माधव' जी ने कवित्त छन्द, सवैये और गीत की ब्रजभाषा में रचना कर अपनी ओजपूर्ण प्रतिभा का परिचय दिया हैं इन्होंने सच को सामने लाने में बहुत बड़ा योगदान दिया। इसलिए इन्हें 'रामशरण पीतलिया' जी ने सच बोलने वाला कवि कहा है जो समाज को दर्पण की तरह अपनी कविता में उतारते हैं इन्हें राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर, हिन्दी साहित्य समिति भरतपुर जिला पुस्तकालय द्वारा सम्मानित भी किया गया।

27. श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी

बचपन से ही साहित्य संगीत और शिक्षा के माहौल में रहने वाले श्री रमेशचन्द्र चतुर्वेदी जी का जन्म श्रावण कृष्ण तीज विक्रम संवत् 1986 में सांतरूक तहसील कुम्हरे भरतपुर में हुआ। बापू के आदर्शो पर चलनेवाले सीधे सादे व्यक्ति हैं। इन्होंने कक्षा दूसरी, तीसरी से ही कविता लिखना शुरू कर दिया था। जिसमें रसिया, आल्हा, ढ़ोला, रांझा लिखते थे। पाँचवी छट्ठी कक्षा में राझौं और ढ़ोला छन्द में कविता लिखनी शुरू कर दी।

इन्होंने 'ब्रजरचना माधुरी' में 'मंगलाचरण' में भारत देश की आजादी, गांधी जी का निधन, आपसी झगड़ों अग्रेजों की दोषपूर्ण नीति और विविध योजनाओं पर लिखा हैं उदाहरण इस प्रकार -

प्रथमहिं गुरु गनेस मनाऊँ, बुध बलकौ दाता।
बारह मासी लिखूँ, किसानन की जामें बात।
भयौ देस आजाद, भए आजाद आज सबई।
कहा कहा कीयौ कांग्रेस नै, कहा करें अबई।।
कांग्रेस नैं कहा कियौ, मैं तुमकूँ बतलाऊँ।।[219]

'भारत की प्रधानता आवश्यकता'नामक शीर्षक द्वारा कवित्त चतुष्पदी, दोहा और कुण्डलियाँ लिखी है। जिस में भारत माता को सत्य और अहिंसा के पुजारी की आवश्यकता है। और मातृभाषा का महत्व दर्शाया हैं उदाहरण इस प्रकार हैं ।

नाँहि है जरूरत भारत माता कूं आज,

बड़ी-बड़ी तोप बन्दूक अरू तरवारों की।

नाँहि है जरूरत भारत माता कूँ आज,

किसी खर्चा के लिए सोने-चाँदी के पहारों की॥

नांहि है जरूरत भारत माता कूं आज,

बड़े-बड़े कवि अरू लेखक हुसियारों की।

कहे कवि चन्द्र बस जरूरत है माँ कू आज,

सत्य अरु अहिंसा के भक्त बेशुमारों की॥[220]

'ब्रज की महिमा' शीर्षक द्वारा ब्रजभाषा का गुणगान किया हैं जिसे कवित्त कुण्डली के रूप में लिखा हैं बानगी द्रष्टाव्य हैं।

जिन्ना के झिन्ना उड़े, मारे गए अयूब।

याह्या जैसे बेह्या, आज पिट रहे खूब॥

आज पिट रहे खूब, मचि रही अल्लाई अल्ला।

ले लियो बंगलादेश, अभी तो हैं विस्मिल्ला।

कहत चन्द्र कविराय ये सपना होय न झुट्टा।

चन्द दिनों में कटे चन्द्र भुट्टो का भुटा॥[221]

'सांस्कृतिक रचना कुण्डली' में टोपी, कुर्ता, राष्ट्रीयगीत, ऋतुवर्णन, गीता, महातम जैसे शीर्षकों द्वारा विभिन्न भावों को दर्शाया है जिस में राष्ट्रीय, प्राकृतिक भाव विशेष रूप से लक्षित होते हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

कुर्ता में गुन बहुत हैं, सदा धारिए अंग।

बड़े-बड़े नेतान के जि बैठावै संग॥

जि बैठावै संग तुम्ह हू बन जाओ नेता।

नेता जो कहु लेई सबई कुर्ता को देता॥

कहत चन्द्र कविराय सभी जन पहरो कुर्ता।

कुर्ता कवच कठोर करे, कटुअन को भुर्ता॥[222]

इसी प्रकार गोकुल गमन में गीत, सवैयों द्वारा नाम की महिमा, स्याम सौरभ,

बाँसुरी वैभव, लिलहारी, चोरी जगन्यारी, ऋतुवर्णन, शृंगार रस, हास्य कवि सौं जैसे शीर्षकों द्वारा अपनें भक्ति भाव को प्रस्तुत किया है जिस में कृष्ण नाम की महिमा, स्याम रंग, बाँसुरी, माखन चोरी की लीला, ऋतु वर्णन द्वारा ब्रजभाषा में बहुत ही सुन्दर ढ़ग से भक्तिभाव को प्रस्तुत किया हैं। उदाहरण के लिए 'चोरी'

सुख सागर नन्द किशोर जू हैं,
गुन आगर है बृसभानु किसोरी॥
कह लौं बखान करौं गुन रूप को,
कैसीं बनी हरि राधिका जोरी।
चोरन के घर चोरी भई,
ले गई मन मोहन कौ मन चोरी॥ [223]

इस प्रकार चतुर्वेदी जी राष्ट्रभक्ति के साथ राधा कृष्ण भक्ति भी की। साथ ही समाज सुधार, साक्षरता प्रचार, नशाबन्दी, स्वदेशी प्रचार, ग्राम विकास, खादी महिमा, पंचवर्षीय योजना, मानवता, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रभाषा, ब्रजभाषा जैसे विषयों पर भी लिखकर अपर दूरदर्शिता का प्रयोग किया। इन की कविताएँ तत्कालीन पत्रिका ग्रामोदय और नवयुग सन्देश दैनिक अमर इजाला, सैनिक पत्रों में छपी।

इस प्रकार राष्ट्रीय, सामाजिक शृंगार भक्ति और हास्य से सबन्धित ब्रजभाषा में काव्य रच कर अपने कौशल्य का प्रमाण दिया और ब्रजभाषा साहित्य कोश की वृद्धि की।

28. पं. रमेशचन्द्र भट्ट 'चन्देश'

ब्रजभाषा के महारथी 'चन्देश' जी का जन्म श्रावण 24 अप्रैल 1939 को नीमघटा मौहल्ले डींग भरतपुर में हुआ। इन्होंने ब्रजभाषा में गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों के साहित्य भण्डार में वृद्धि की। इन्होंने समाज की कुरीति, वर्गभेद, शोषण का सजीव चित्रण किया। ब्रजभांषा गद्य में इन्होंने ललित निबन्ध, कहानी, रेडियो रुपक, लघुनाटक, रेखा-चित्र, विनोद संस्रमण और उपन्यास लिखे। 'लाग्यौं रे बिन्दावन नीकौ' ब्रजभाषा में लिखा उपन्यास हैं जिस में ग्वाल संस्कृति और बदलतें परिवेश का सजीव चित्रण हैं। 'लिलार कौ लिकौं नाय मिटैं, पचूं काका, चौधरी ठनठनपाल,

मास्टर लाल बुझक्कड़, भौंइराम शास्त्री, डॉ. चमचादास बटलोंई, बाबू चवन्नी, प्रसाद खटमलिया, लाला खझरपट नाथ वर्मा, पत्नीदास पाडेय टचुगलीचन्द्र महाराथी गप्पीलाल, पालिस वाला, मिस्टर बगड़ानन्द, इनके प्रसिद्ध रेखाचित्र हैं।' इन्होंने ब्रजभाषा गद्य में देशभक्ति और गांधीवादी विचाराधारा का प्रभाव दिखाई पड़ता है और बेवाक भाषा में लिखा हैं।

ब्रजभाषा काव्य की ओर दृष्टि दे तो इन्होंने एक तरफ समाज में फैंले भ्रष्ट्राचार और दूसरी तरफ राधा-कृष्ण, ऋतु-प्रकृति का भी वर्णन किया। इन की कविताओं को चार भागों में बांटा जा सकता है पहला बाल उपयोगी और व्यंग्य विनोद, दूसरी भक्ति, पवोत्सव और तीर्थ, तीसरी समाज सुधार और देशप्रेम चौथी आधुनिक भावबोध की छंद मुक्त रचना हास्य परिहास, पत्नी और दाढ़ी संवाद, पत्नी का सुझाव जैसे शीर्षक द्वारा ब्रजरचना माधुरी में व्यंग्य को प्रस्तुत किया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

ना कही प्रिय सकुन्तले इती निपूती मोय
सुसंस्कृति की रक्षक हुं मानवी ताप ते।
देखत ही भय खात दानव मति मंद अंध
मिट जात धुंध द्वंद मेरे सिर छापते॥
कहें चन्द्रेश वेश आर्यावर्त की हूं मैं इति
मरदों की जननी भाषी रवि के प्रताप ते।
बांध्यौ हो माथ्यौ हो जटा जूटन की नेति कर
दाड़ी मरदों की मैं डरती न पापीन के पापते॥[224]

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, डॉ. जाकिर हुसैंन, डॉ. राधाकृष्णन, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक आदि पर लिखे गए छन्द बाल उपयोगी है। जिस में वीर सपूतों का सुन्दर ब्रजभाषा में गौरवगान किया। उदाहरण इस प्रकार हैं -

'डॉ. जाकिर हुसैन'

सांचौ सेनानी दानी जाकिर हुसैन जूहि
असह प्रहार देखि होई है पुरन्दरा।
हों तों मुसलमान जान गबरू करून धार

साहसी अडिग और काटन कूं खजरा ॥[225]

इसी प्रकार ईश भक्ति दोहें, स्वभाव परक दोहें, पाखण्ड विघटन परक दोहें, समाज परक दोहे, नीति परक दोहे, अन्योक्ति परक दोहें की रचना जिस में एक तरफ इश्वर भक्ति के सच्चे रूप की झलक मिलती वही दूसरी ओर भक्ति का झूठा दिखावा करनेवाले, ईश्वर का झूठा नाम लेकर पाखंड करनेवाले समाज में शराब, झूठ टोना, टोटका, अन्याय, आतंकवाद मँहगाई, गरीबी जैसी सामाजिक समस्यआओं को वर्णित किया हैं।

अंधों की अंधी सत्ता में, अंधे आंखन राख भलै।
दल दलों की दलाद दली में चन्द्रेश अजोधा क्यूं जलै।[226]

भक्ति के भावों को पद-बोलो कृष्ण बोलो राम, पद-राम ते कहियों जाइ रे, होरी में कन्हैयाँ जैसे शीर्षकों द्वारा स्वछन्द भक्ति भाव को दर्शाया है उदाहरण इस प्रकार हैं -

भज मन राम चरण अरजेण्ट।
आनौ जानौ लग्यौ निरंतर, ना रहबौ परमानेंट॥
हत्या पाप दुराचार के यहाँ चलते रैस्टोरेंट।
निस दिन भगतों के होते हैं बाजारों में एकसीडेंट॥
आज लगे आतंवाद के, गुरुद्वारों में टैण्ट॥
सांस साँस जीवन जीवन पै खूब लगौ है रैण्ट॥
आओ बेग मेरे सतगुरु चन्द्रेश बनौ मरचेन्ट।
कोऊ धनी ना धोरी कोई ना, कोई पेरैण्ट॥[227]

इसके अलावा ब्रजरचना माधुरी में हिन्दी और ब्रजभाषा, भाषाओं के सौष्ठ को अपनी रचना द्वारा प्रकट किया हैं। गीत जय-जय ब्रजभूमि सुनौरी मेरों ब्रजवानी कौ गान, जय-जय ब्रजधाम की रचनाओं द्वारा ब्रज के प्रेम को दर्शाया।

राजनीति, हांसी के, डिस्कों का सिंगार, आरक्षण कौ नतीजा, नई पीढ़ी की इच्छा, परस, भोर की तलाश जैसी रचनाओं द्वारा आधुनिक युग में पनप रहें भष्ट्राचार के प्रति अपना विभिन्न द्रष्टिकोण को प्रस्तुत किया हैं। इस प्रकार चन्देश जी ने अपने

काव्य द्वारा चारों तरफ नजर रख हर द्रष्टिकोण को वर्णित किया है। कवित्त सवैया पद कुण्डलियाँ, गीत विभिन्न रूपों द्वारा ब्रजभाषा में उच्चकोटि के काव्य की रचना की।

29. श्री बालकृष्ण थोलम्बिया

मैथिलीशरण और घनानन्द की भाषा शुद्धता से प्रभावित हो ब्रजभाषा में काव्य रचने वाले 'बालकृष्ण' जी का जन्म सम्वत् 1962 को सराय राजस्थान कोटा में हुआ। इन के माता-पिता कृष्ण भक्त थे। जिस से इन के काव्यों में परम्परागत रूप देखने को मिलता हैं जिसमें श्रीकृष्ण बाललीला, राधा-कृष्ण प्रेम प्रंसग, सयोंग-वियोग वर्णन, कालिन्दी, वंसीवट तमाल, जुन्हाई आदि इन के काव्य में बहुत ही सुन्दर रूप से ब्रजभाषा में वर्णित हैं जिसे 'ब्रज रचना मधुरी', ब्रजविभव पाती, शृंगार, ब्रजविलास, जैसे शीर्षक देकर लिखा गया हैं जिस के अन्तर्गत कृष्ण की विभिन्न लीलाओं के साथ प्रकृति वर्णन भी मनोहर किया गया हैं। उदाहरण इस प्रकार है

जुगल तटन बीच श्यामल शलाका जैसी,
आँजि देत अंजन तू श्याम रूप वारी है।
नैन खुल जावै अरु पावै दिव्य दृष्टि तभी,
रास रचि जायै भव्य भाव लोक वारो है।
रस बरसाने बरसाने वारीलागै त्यों ही,
पाँसुरी जगावै पीर बाँसुरी जुवारो है।
साथ घनश्याम पेखि बीजुरी सी रेख राधे,
नाचि उठै मन को मयूर मतवारो है। [228]

इसी प्रकार प्रकृति वर्णन का भी बहुत सुन्दर वर्णन किया हैं जिसमें प्रकृति, विभिन्न ऋतुओं का सुन्दर सजीव वर्णन हैं जिनमें बसन्त ऋतु में प्राकृतिक सुन्दरता, शरद ऋतु में रात्री की सुन्दरता का संजीव चित्रण किया है उदाहरण इस प्रकार हैं -

सरनि सुहाने अल गुंजित सकुंज पुंज,
उडन पराग लागै पौन महकाने हैं।
सीस पै रसालन के मंजरी मनोज जुरी,
कोकिला के कण्डनि में कूक हुलसाने हैं।[229]

इसी प्रकार प्रकृति और परम्परागत रूप के अलावा समसमायिक समस्याओं पर भी लिखा हैं। विभिन्न सम्प्रदायों के कारण लोगों के स्वार्थीपन के कारण साम्प्रदायिक झगड़े बढ़ते जा रहे हैं।

साथ ही बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण महँगाई और मँहगाई के कारण भ्रष्टचार, घोटालों की सख्या की बढ़ोत्तरी हो रही हैं 'चिकोटियाँ' नामक शीर्षक देकर ऐसी समस्याओं को दर्शाया हैं उदहारण इस प्रकार हैं।

पानी के बिन है रहे, नेता बिना नकाब।
प्यासौ राजस्थान है, जलतौ है पंजाब।
जलतौ है पंजाब असम भी सुलगौ जातौ।
तथा आज गुजरात रक्त की फाग मनातौ।
'प्रियहरि' कृश हो गयी इन्दिरा है कल्याणी।
देश छाँडि परदेश घूमिये ढूँढ़ै पानी।।[230]

'नवकिसान' में भारतीय किसान द्वारा राजनीति पर व्यंग्य करते हुए। नेताओं पर लिखा हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

खेती बाड़ी छोड़ बन, संसद के मेहमान।
बातन की खेती करै, नव किसान मतिमान।।
नव किसान मतिमान दाँव पर गाँव लगावै।
भरि किसान को स्वाँग आपुनी साख जमावै।
प्रियहरि रक्षक चले पिछाड़ी और अगाड़ी।
हम कूली को नाम न जानै खेती बाड़ी।।[231]

'कौमी एकता' रचना द्वारा एकता का संदेश देते हुए सभी धर्म, जाति, संप्रदाय, को मिलजुल कर रहने का संदेश देते है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

दैर हरम के जाल में, उलझै पंडित शेख।
कण-कण में तू देश की बाकी मूरत देख।
वाकी मूरत देख दुई के पटल हटा दे।
घट घट में वह रमा वाहि की अलख जगा दे।

प्रियहरि ज्योतित ज्योति जगत यह वाहि परम की।

सोभित सोभा एक वाहि तें देर हरम की॥[232]

'नेता' नामक पद में नेताओ की पोल खोलते हुए चमचा और कपटी बताया हैं।

कपट करेजे भरि रहै, अधरन धरि मुसकान।

कस असि मारै निकट बसि, नेता की पहचान॥[233]

'आरक्षण' नामक काव्य में आधुनिक युग के लायक नौजवानौं के कदमों को रोकने वाले अवसरों को छिनने वाले, वर्गभेद को जन्म देने वाली समस्या को दर्शाया है।

वर्ग भेद को मानते जब सब विधि अभिशाप।

फिर क्यों ढ़ोते जा रहै, आरक्षण का पाप॥ [234]

स्वतंत्रता प्राप्त होने पर भी आधुनिकता के गुलाम जनता के संजीव चित्रण करते हुए 'आधुनिकात काटन पै चलती स्वतंत्रता या आई' में दर्शाया हैं।

सिर पर हैट लगा ऐठि ऐठि जावै अरू,

इन नैक टाई नाक चसमा चढावै है।

कोट पैट डाट बूट डासन सजावै पग,

मूँछ मुंडवाइ मैन मंकी बनि जावै।

मिस के लियों की स्वीट टेस्ट करिबै के लाय,

सनडे की वेट में विचारै गम खावै है।

पारक में जावै गर्ल फ्रेन्ड अपनायें कोऊ,

त्यौरी चढ़ी मिस पाँय परिकै मनावे है॥[235]

इन्होंने सूर के पद 'मै नाही माखन खायौ' की छाया पर पैरोड़ी की रचना की हैं।

इस प्रकार बालकृष्णजी ने पद, दोंहा, सवैया और छन्दों की रचना की है। जिन की भाषा ब्रज हैं किन्तु कही-कही पर अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग किया हैं, इन्हें अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है जैसे भारतेन्दु समीति (1970) जिला

प्रशासन (1975), अखिल भारतयी साहित्य परिषद, ज्ञानभारती (1988), शिक्षक संघ (1985), राष्ट्रभाषा प्रचार समीति कोटा आदि। इस प्रकार इन्होंने ब्रजभाषा साहित्य के कोष में वृद्धि की हैं।

30. मुँशी मटोलसिंह

हास्य और व्यंग्य के चतुर चितरे मुंशी मटोल सिंह जी का जन्म1 जुलाई 1927 को हुआ। इन की रचना ऐतिहासिक, पौराणिक और धार्मिक होने के साथ-साथ सामाजिक, राष्ट्रीय भी हैं जिसमें समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना के भावों को प्रस्तुत किया हैं इन्होंने अब तक 108 छोटी बड़ी पुस्तक लिखी हैं जिसमें से 82 तो प्रकाशित हैं। और 26 अप्रकाशित है।

इन के काव्य को तीन रूप में बाँटा जा सकता हैं (1) ढ़ोला (2) पौराणिक और मुक्तक रचना ब्रज रचना माधुरी में इन्होंने ब्रजभाषा में कई विषयों पर लिखा हैं जैसे 'जन्मभूमि परिचै' नामक रचना में जन्मभूमि 'कामवन'की प्रशंसा की हैं उदाहरण

पर्वत के नीचै बसै, एक घमारी गाँम।
नन्दराय कौ धन चरयौ, याते है ई नाम॥ [236]

'बुढ़ापौ' में व्यक्ति की शारारिक, सामाजिक, भावात्मक स्थिती का मार्मिक चित्रण करते हुए शारारिक, सामाजिक रूप से उस में कमियाँ आती है। मगर ममता, स्नेह के भाव में कमी नही होती इसे सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया हैं।

तन के बस की ना रही, मन की गई न ऐंठ।
बत्तीसी कौ खोज ना, चल्यौ देखिबे पैंठ॥
चल्यौ देखिबे पैंठ, उभ्झकतौ इत उत डोलै।
जो हँस-हँस बपतरात, आज, ना म्हौं ते बोलै।[237]

'नीति की बात' में कर्म मित्रता आदि दोहों की रचना की हैं जिसे भले बुरे एक जैसे हैं कर्म के द्वारा ही पहचान सकते हैं कर्मों को महत्व देते हुए इस प्रकार लिखा हैं -

भले-बुरे किन कूँ कहैं, दोऊ एक समान।
भले-बुरे की होत है, कर्मन ते पहचान॥[238]

इस के अलावा भजन एक भरौसौ एक बल समस्या 'निहारौ' भरमायौं हैं जैसे शीर्षक देकर ब्रजभाषा में सुन्दर लिखा हैं जिसमें आधुनिक युग से संबधित समस्या जैसे छुआछुत निर्वारिण दहेज, परिवार कल्याण जैसे विषयों पर बहुत ही अच्छी लिखा है। जिसमें से जनसंख्या को दर्शाते हुए यह उदाहरण है।

सुनौ लगाकें ध्यान धनी सन्तान नफा नांय बाने में।
है जाश्री बदनाम जमाने में।।
हम मरे जायं याही डर में,
का खेत करिंगे अम्बर में।
है घुस्यौ रहै सब दिन घर में, मैया के रहै बहकाने में।।
है जाऔ बदनाम जमाने में।।[239]

व्यंग्यात्मक रचना में भी इनकी रुचि रही। फलस्वरूप 'ईसर की भूल' में कवि ने सपूत और कपूत पर व्यंग्य किया है। उदाहरण इस प्रकार हैं -

रचना में कर गयौ कैसी भूल सो स्वामी मेरे -
रचना में कर गयौ कैसी भूल।
चौमुख चतुर ज्ञानी ब्रह्मा कूं बतावे वेद।
करतब निहार जाके हीये में भयौ ना खेद।।
गुन अवगु न न देखे शकल में कियौ भेद।
ज्ञानी अज्ञानीत की जांच कैसै परै-
झूंठ सांच देखबे कूं हात पै अंगार धरै।
शायर सपूत सूर इनकी जांच कौन करै-
रच दिये एक ही तूल।।[240]

'डांवाडोल चेला' में पण्डित, मुल्लओं पर व्यंग्य किया जो ईश्वर की खोज में दिखावा करते है।

कर्‌यौ ना जानै ईसुर पै बिसवास।
इक भगत चल्यौ अपने घर ते ईसुर की करुँ खोज भाई।
जब घूम रयौ भूल्यो भटकौ, इक साधू की धूनी पाई।।

महाराज मोय कर लेऔ चेला, हरि के दरसन देऔ करवाई।

न्यौ मथुरादास संत बोले, तो में बढ़िया बुद्धी आई।

सो बारह बरस में हरि मिल झाएंगे आ जाय तेरे पास।। [241]

'भगत बकरीदास' में पति पत्नी के ससुराल और मायकें के माध्यम से व्यंग्यात्मक रचना की हैं।

जब करयौ भगत जी, घरवारी नैं तंग।

पीहर में जायकं बैठ गई, अरु आवै कौ ना नाम लियौ।

कैई बेर विचारौ डोल्यायौं, बाकी मैया ने फटकार दियौ।।

अबकै रिस खायकै चल दीनो अरु बज्जर कौ कर लियौ हियौ।।

रस्ता में मन्दिर देवी कौ, उत बैठ गयौ आराम कियौ।।

चार चोर घुस रहे मन्दिर में, बैठघोट रये भंग।।[242]

'दरौगा कौ नौंकर' में धन का महत्व बताते हुए और 'चार चतुर यार'में लगड़ा अन्धा, काणा, बहरा बताते हुए अत्यवस्था पर व्यंग्य किया है। इस के अलावा भसखरा नै बादर कारें, बूरें की विदा, अभिमन्यु वध जैसी व्यंग्य रचनाएँ भी लिखी।

इस प्रकार से मुंशी मटोलसिंह जी ने परम्परागत, सामाजिक जैसे विषयों पर लिखा हैं। छन्द सौरठा, सवैया, गीतिका, भजन, बहर, बहारहमासी, लावनी, रसिया कब्बाली आदि लिखी हैं। साथ ही ह्रास परिहास भी प्रस्तुत किया हैं। और अपनी अनूठी प्रतिभा का परिचय दिया।

31. श्री नत्थूलाल चतुर्वेदी

अपने विभिन्न भावों को प्रकट कर लोगों को प्रेरणा देनेवाले नत्थूलाल चतुर्वेदी जी का जन्म 11 मार्च 1911 को सिकन्दरपुर खास तहसील कायम गन्ज जिला फतहगढ़ में हुआ। हिन्दी, अंग्रेजी और ब्रजभाषा का इन्हें पूर्ण ज्ञान हैं कृष्ण भक्ति, देश भक्ति, एकता और आध्यात्म को अपने काव्य द्वारा प्रस्तुत करनेवाले नत्थुलाल कला और भाव दोनों पक्षों में सफल सिद्ध हुए। 'ब्रज रचना माधुरी' में इन्होंने विषयों पर लिखा है। जिसमें इन्होंने गणेश स्तुति श्री गोस्वामी तुलसीदास की आरती में कवि ने गणेशजी वंदना की जिसके अन्तगर्त विभिन्न रूपों का वर्णन किया। उदाहरण इस प्रकार

है।

नमामि यस्स आनन करी पाण्डव करी,

सुधड़ सलोने सुत सुता सैल के जो,

संकट विमोचन दुःख भंजक गणेश,

आराध्य देव, देवन एक दल जो।

मंगल मय जिन दर्श, सुफल देनहार,

बुद्धि के अधीश्वर, कर मोदक सम्हारे जो।[243]

कृष्ण जन्म, कान्ह तू तो अति उत्पाती, कान्ह करत रहत बरजोरी, बरजि रही मन मोहन सो मोर जैसी रचना में कृष्ण का सौन्दर्य वर्णन, लीला, जन्म का मनोहर चित्र खींचा हैं।

कान्हा करत रहत बरजोरी,

लै सब वस्त्र कदम्ब चढ़ि बैठे,

हम जल मांहि उधारी।

करहुं चिरौरीर तऊं न मानै,

नन्द लला अति ढीढ अनारी।[244]

ब्रज के प्रिय त्यौहार का वर्णन ब्रजभाषा काव्य में ना हो तो वह अधूरा हैं। इन्होंने इस को पूर्ण करते हुए होली पर ब्रज होरी कै रंग सौ आज रंग्यौ री होरी की धूम मची, होरी-सी मचाय दे जैसे शीर्षक दे कर लिखी गई रचना ने होली की सुन्दरता का वर्णन तो ही साथ ही कृष्ण गोपी, राधा का भी सुन्दर वर्णन हैं। उदाहरण इस प्रकार है।

नंदगामहि होरी की धूम मची।

अबिर गुलाल के बदरा छाये।

पिचकारी सौं रंगन बूंदपरीं।

छहरत ढोल लगैं बदरा सम,

पिच चिपकारिन कीच रची। नंदगामहि... [245]

'विरहरी राधा', 'राधा विलाप' रचना में राधा का वियोग का वर्णन किया हैं

जिसमें राधा कृष्ण के वियोग की तड़प को ब्रजभाषा के मध्यम से प्रस्तुत किया है -

छबि छटा त्रिभंगी की न्यारी, अरु मुरली का वो अधर घरन।
त्रैलोक्य बिहारी की चितवन, रचि रास महारस में थिरकन।
बरबस मन उद्वेलित होता, नूपुर का सुन झनन झनन।
उत्थित भुज दण्ड में री सखि सुनु, रव करता कंकण कक्णन कक्णन।[246]

कृष्ण के मथुरा जाने पर ब्रजभूमि के विषाद को बहुत ही सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया हैं। 'आऔ ब्रज राज दुलारे'

मधुवन सूनो वृन्दावन सूनो, सूनी ब्रज की गलियाँ।
तव दरसन कौं नयना तरसै, रोवत नन्द विचारे॥
आओ ब्रज राज दुलारे।
मलिन ज्योत्सना आज भई है तरु तमाल कुम्हिलाने।
कालिन्दी के फूल उदासे, कब खेलैंगे अंक हुमारे॥
आवौ ब्रज राज दुलारे॥[247]

'ए री भारती पुनीत' में एकता का संदेश देते हुए ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा हैं -

अग्नि अरु सोम दोउ, आपस में पूरक हैं,
इनके विज्ञान से तू जीवन जगाय दै।
अँगुरिन में छोटी-बड़ी, प्रकृति ने बनाय हैं,
शक्ति को प्रतीक कह्यौ, विश्व कौं सिखाय दै।[248]

'नीति वचन' में शिक्षा आडम्बर पर लिखा हैं कि आडम्बरों को छोड़कर ही जीवन सफल होगा। उदाहरण इस प्रकार हैं -

आडम्बर सब छांड़ि दै, जीवन को यह रोग।
अन्त समय पछिताउंगे, खूब भुगावै भोग॥[249]

** * *

रे बबुआ तू जानि ले, जग तरिबे की रीत।
बूढ़े सुख की खान हैं, उनसे करिये प्रीति॥[250]

'यह कैसौ स्वराज हैं?' में कवि ने आज के नेता, समाज और नागरिकों को दर्पण दिखाना चाहा है। और प्रश्न किया है। कि क्या हम ऐसा स्वराज्य चाहते हैं। उदाहरण इस प्रकार -

ढांकिवे को वस्त्र नहीं, न रहिबे कौ ठौर कहूं,
कूदि रहे चूहा, न पेट कौ अनाज हैं।
मोटी-मोटी तोंद वारे, बातन के महाधानी,
उलटी पढ़ावै पाटी नाहिं लगे लाज हैं।
देश की तरक्की में भाग लै वढ़ावौ हाथ
सेवक तिहारे हम, तैंने लयौ राज हैं,
आपु न फरी फोरै, मोहिवे वढ़ाय रहे,
वे तो विरागी मानौ, सारो मेरो काज है।[251]

इन्होंने छंन्द के बन्धनों को छोड़कर भावना को अत्याधिक महत्व दिया हैं। जिससे यह अपने भावों को सुन्दर रुप से प्रस्तुत कर सके। जयपुर ब्रजभाषा अकादमी के प्रति अपने आदर भावों को इस प्रकार लिखा हैं।

अवलोकन करि तोष वंध्यो तेरे शतदल तै,
सविनय डंडौत करौ सिगरे हिय तल तै।[252]

इस प्रकार से नत्थुलाल जी ने ब्रजभाषा में अपने भावो, विचारों, भक्ति को प्रस्तुत कर ब्रजभाषा साहित्य भण्डार की वृद्धि कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

32. श्री धनेश फक्कड़

मंचीय कवि के रुप में पहचाने जाने वालें श्री धनेश फक्कड़ का जन्म 23 अप्रैल 1946 को भरतपुर में हुआ। इन की कविताओं में गाँवों की सुन्दरता देश प्रेम, जनभावना देखने को मिलती हैं साथ ही हस्य व्यंग्य भी हैं। 'ब्रजरचना माधुरी' में इन्होंने विभिन्न विषयों का समावेश किया हैं जैसे 'प्रभु तुम कौन देश के बासी'में व्यंग्यात्मक रूप से लिख कर देश की दशा का वर्णन किया है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

प्रभु तुम कौन देश के वासी।

जेताई दीखै या धरती पै तेतांई सब चर जासी।

न तौ तुमकुं दस्त लगै, न कब्ज होय न खांसी।

रोटी रोजगार औ रौनक, सबकी पूरन मासी।।[253]

'वय-सन्धि' में नारी की उम्र में हो रहे बदलाव से भावों में आ रहे परिवर्तनों को दर्शाया है कि बचपन से खेल खेलना, चौदह बरस में अटखेलियाँ करना, सोलह बरस में सपनें देखना फिर शादी के बाद परदेश चले जाना। इस को काव्य के रूप में सुन्दर ढ़ग से रचा हैं -

अभई निक दो दिन ठहर गुजरिया,

रस की धार बताय दिंगे।

रसधार बताय दिंगे, रसकी धार बताय दिंगे।

अभई निक... ।।[254]

'गोरी ने लूट लिये गाम रसिया' में कवि ने नारी के यौवन और गांव के रसिया के माध्यम से नारी के सौदर्य की रचना करी है। उदाहरण इस प्रकार हैं -

रचे महावर ते पाम रसिया।

गोरी नें लूट लिये गाम रसिया।।

जीवन की गागर से यौवन कौ रस।

छिरकत फिरै है ठाँव ठाँव रसियाँ।[255]

इसी प्रकार से फक्कड़ जी ने देश के सौदर्य धरती की सुन्दरता को 'मेरों देश मेरी धरती महान रसिया' में देशकी उन्नति को दर्शाया हैं।

जहाँ विधि कौ अनौखो हैं विधान रसिया,

मेरो देस मेरी धरती महान रसिया।

या धरती में सोनों उपजै, चन्दा उपजै तारौ,

हीरा उगलै पन्ना उगले, ऐसौ देश हमारौ।

ठौर ठौर नौनिहाल गांधी और जवाहर लाल,

ऐसी अनौखी ज्याकी ज्ञान रसिया।। मेरौ देश मेरी धरती...[256]

'मँहगाई में कनागत' में पति-पत्नि के माध्यम से मँहगाई पर व्यंग्य किया है।

माथे पै आश्वासन चिपकें, मुँह पै चिपके नारे।
कंधन पै सिगरौ घर चिपक्यौ, मरे बोझ कें मारे॥
अच्छे खसम भये जनता के नेता खादी बारे।
हम तौ जानें कारे कारे सबहि बाप के सारे॥[257]

''कलजुग कौ कृष्ण''में देश में हो रहे भष्ट्राचार पर से पर्दा उठाया है मिलावट, झूठ जैसे हथकंडों को अपना कर मानव भ्रष्ट हो गया हैं।

माखन मिसरी खातौ चल, गलियन रार मचातौ चल,
बन कलयुग कौ कृष्ण कन्हैया, डटकर लूट मंचातौ चल।[258]

बढ़ती हुई जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए लोगों में जागृती उत्पन्न करने के लिए व्यंग्यात्मक रूप से समझाने का प्रयत्न किया हैं।

मेरी धन्नो चालौ कैम्प में,
या घर में बालक बाढ़े री।
घर में बालक बाढ़े री,
ये सुआ पालक बाढ़े।
मेरी धन्नो चालौ कैम्प में॥[259]

''पत्नी-पुराण'' में हास्य-व्यंग्य रूप में बढ़ती मँहगाई से व्यक्ति की स्थीत को वर्णित किया हैं उदाहरण इस प्रकार है -

टी.वी ने घौषित करी, मानसून की डेट।
सूधी कमरा में घुसी बीबी हैवी वेट॥
बीबी हैवौ वेट किवाड़न में दैं धक्का।
बोली जो कछु अबकें घर की छत चुचाई॥[260]

राजनीति पर भी व्यंग्यात्मक रूप प्रस्तुत किया है जिस में नेता, पार्टी पर व्यंग्य किया है। जैसे अरी ओ दिल्ली रानी कुण्डली -कंज नामक काव्य में इस प्रकार लिखा हैं -

काँग्रेस के टिकिट अब बन गये पिण्ड खजूर।
नेता गण करने लगे उछर कूद भरपूर॥
उछर कूद भरपूर, कमैटी नाच नचावै।
जो ऊपर कूँ चढ़ैं गिरै आँधे मुँह आवै॥
कह ''फक्कड़'' खेंचा तानी में, फट गये अस्तर।
कछु राजी करि दिये, कछुन के बंधि गये बिस्तर॥[261]

* * *

तू क्यों इतरावै आज, अरी औ दिल्ली रानी।
इकली इकली मति खाय, देस की गुरधानी॥
आजादी ते अब तक तेंने कितने जुलम गुजारे।
कव तक मूंग दरें छाती पै, तेरे खसम पियारे॥
भयौ ऐ तू रजधानी॥[262]

इसी प्रकार 'हास्य-नृत्य नाटिका' पर गीत भी लिखा है जो व्यंग्यात्मक रूप से दर्शाया है।

इस प्रकार से फक्कड़ जी हर विषय चाहे वह सामाजिक, राजनैतिक हो उस को व्यंग्य रूप में प्रस्तुत कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। ब्रजभाषा के साथ-साथ मुहावरों, उर्दू अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया हैं उपमा, रूपक उत्प्रेक्षा आदि अलंकारो का अनायस प्रयोग भी किया। इन को 1992 राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित भी किया गया है। इस प्रकार फक्कड़ जी ने ब्रजभाषा साहित्यकारों में अपना अनूँठा स्थान बनाया।

33. कविराज नन्दकिशोर ब्रजदास

भाव और सौंदर्य के कवि कविराज नन्दकिशोर जी का जन्म 01 जनवरी 1944 को राजस्थान के पूर्वाचल (बिशनपुरा) में हुआ। दास्यभाव की भक्ति इन के काव्य की विशेषता रही। 'ब्रजरचना माधुरी' में 'हरिनाम शतक' में दस पदों की रचना की हैं। जिसके अन्तर्गत अपने भक्तिभाव को दर्शाया हैं। हृदय के बीच बसनें वाले हरिचन्द्र की तरह चमक, हरि नाम अनंत उपकारी जैसे उपमानों का प्रयोग कर हरि

नाम की महत्ता को दर्शाया है उदाहरण इस प्रकार हैं।

नाम है सब साधन को सार।
जोई-जोई नाम नाव में बैठे, सोई-सोई उतरे पार॥
छाँड़ि प्रमाद त्यागि सब साधन, लगि रहैं हर बार।
जो छिन-छिन हरिनाम कमावत, सोई साधक हुशियार॥[263]

'विनय' श्री हरिलीलाशतक में किशोर जी ने भगवान की लीला, साधना, शरणगती, विनय, प्रेम और विविध पदों की रचना कर भक्ति भावना को वर्णित किया है। उदाहरण इस प्रकार है।

'शरणगति'

को पै अभिवादन कूँ जइये।
हरि शरणागति जब पा लीन्ही, को त्यौहार मनइये॥
कासौं प्रेम, प्रीत हो कासौं, कासौं नेह जतइये।
हरिदासन कौ संग छाँड़ि के, को राजा पै जइये॥[264]

'मानसिक आरती' में दस पदों के माध्यम से हरि की भक्ति की हैं गुरू के रूप में उन्हें पूजा और प्रस्तुत किया हैं। दर्शन मणी के समान, हरि नाम पुष्पमाला, प्रेम कपूर, हृदय थाल में प्रेम रूपी बाती द्वारा हरि की आरती की है। उदाहरण इस प्रकार हैं -

आरती गुरु-गोविन्द की करिये।
दर्शन रूपी सुखद मणिन सौं, नैनन झोली भरिये॥
नाम-पुष्प की माला गुँधि के, जा ग्रीवा पै धरिये।
अगर-कपूर-नेह को लाकै, गेह सुगन्धित करिये॥[265]

श्री निताई-गौरी शतक, सन्त महिमा स्तुति, पद (उद्धव-संवाद) विरह, परहित पश्चाताद, उपालम्ब पर पदों की रचना की साथ ही पहेली और विनय की भी रचना की।

इस प्रकार इन की रचनाएँ भक्ति से ओतप्रोत रही। जिस में इन्होंने अपनी कला-सौंदर्य, शब्द सौदर्य, वाक्य सौंदर्य और नाद-सौदर्य को प्रस्तुत किया हैं।

अनुप्रास,रूपक, उपमा आदि अर्थालंकार, शब्दालंकार आदि का प्रयोग किया है।

इस प्रकार भक्ति के निकट है किन्तु आधुनिकता का पुट नही है। प्रकृति के भी ज्यादा निकट नही है। फिर भी जीतना भी काव्य है। उस के द्वारा इन्होंने ब्रजभाषा के कवियों में अपना स्थान बना लिया है। भारती-मन्दिर साहित्य-निधि की उपाधि दी गई। और 1995-96 जोधपुर में 'राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया।

34. श्रीमती शान्ति 'साधिका'

श्रीमती शान्ति 'साधिका'जी का जन्म झालारापाटन में उसाढ़ कृष्ण पक्ष की पड़वा सं 1971 वि. (सन् 1914 ई.) को हुआ। यह बचपन से ही दृढ़ विचारों वाली थी इन्होंने कृष्ण जी की आराधना अधिकतर की हैं। उन के बचपन के खेल, अटखेलियां, बासूंरी, गायों को चराना, वात्सल्य प्रेम आदि वर्णन कर अपनी भक्ति और कृष्ण प्रेम को प्रस्तुत किया। वात्सल्य प्रेम का उदाहरण इस प्रकार हैं।

तेरे विनु तौ सलौना! कल ना परै रे!
अरे ! मेरे सुन्दर बाल-गोपाल !
तेरे बिनु तो कान्हूड़ा! मोहे कल नहीं रे।
दिन ही कटे न सुधन ! मेरी रैन ही रे।
अरे ! मेरी पल-पल बिलखत जाय॥[266]

'ब्रजमाधुरी' में इन्होंने 'प्रकटीकरण' में कृष्ण के जन्म का वर्णन हैं मथुरा में कृष्ण के जन्म से हर घर में आनंद छा गया हैं। इस को ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा हैं-

प्रकट भये प्रभुवर यदु राई
तारन, तरन त्रिलोक उबारन।
परमानन्द, सदय, हरिराई॥
प्रकट भये....[267]

'पलना' में कृष्ण के बाल्य रूप का वर्णन किया हैं। कि झूल रहें कृष्ण सोने

के पलने में अति शोभनिय है। मात-पिता द्वारा वात्सल्य को भी दर्शाया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

सोने कौ पलना, मोतियन की डोरी।
फूलन कौ पलना, रेसम की डोरी।
झूले नन्द-नन्द, झुलावै नन्द गोरी॥
सोने को पलना रे.....[268]

इस के अलावा घुटनों के बल चलना, बाल लीला, जैसे वस्त्रधारण किए हुए सुन्दर कृष्ण आंगन में दौड़ रहे, तुतलाना, सौदर्यवर्णन, गौवर्धन लीलाओं का सुन्दर सजीव वर्णन किया हैं 'बाल-हठ' में कृष्ण की जिद् को बताया हैं जिसमें चन्द्र, खिलौना,दूध नहीं पीना, माखन के हठ, बलदेव की शिकायात आदि को ब्रजभाषा में सुन्दर वर्णन है उदाहरण इस प्रकार है।

अँगनवाँ में कैसौ मचलि रह्यौ कान्हाँ।
गोद में कैसौ खेल रह्यौ कान्हाँ।
बारहि बार आकाश दिखावै। -2
उँगरी उठाय चन्दा कूँ बतावै। -2
मोहे वाही खिलौना है पाना।
अँगनवाँ में कैसौ.....[269]

'उपालंभ-लीला' में कृष्ण गोपी के उपालंभ का वर्णन हैं। जिसमें गोपी कृष्ण को हठीले, झूठ, चोर, कपटी जैसे उपालंभ गोपी दे रही हैं। कपड़े चुराना, मटकी फौड़ना, होली खेलना आदि का वर्णन सुन्दर किया हैं। कृष्ण के हरएक लीला का 'साधिका' जीने सुन्दर रूप से वर्णित किया है।

जारे ! जारे ! हठीले-कान्हाँ ! माखन के चोर।-2
कान्हाँ ! माखन के चोर ! झूँठे नवल किसोर। -2
जारे ! जारे! हठीले...[270]

* * *

मैया ! री! तेरौ कान्हाँ तो बड़ौ ही कुदाई।

ओ भैया ! तेरौ कान्हाँ तौ बड़ौ ही कुदाई।

जित जाऊँ उत सँग लग्यौ आवै।

बहुत हि करत ढिठाई।

मैया री ! तैरौ....[271]

इसी प्रकार गीतिकाएँ भी लिखी हैं 'अभिलाषा' चिन्ता, स्मरन, गुनकथन, उद्वेग, प्रलाप, व्याधि, उन्माद, जड़ता मूर्छा मरन से युक्त गीतिकाए लिखी।

इन्होंने पद्य के साथ गद्य भी रचा है। ब्रजभाषा के साथ खड़ीबोली में भी रचनाएं लिखी हैं। इन को राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर द्वारा सम्मानित किया गया है इन की रचनाएँ कृष्ण की भक्ति से ओतप्रोत हैं। जिस में साधिका रूप देखने को मिलता है। इस प्रकार ब्रजभाषा के कवियों में अपना अनूंठा स्थान बनाकर पाठको को हर्षित किया।

35. श्री भँवरलाल तिवारी

श्री भँवरलाल का जन्म 07 सितम्बर 1911 को हुआ। इन को बचपन से ही कविता लिखने शुरुआत कर दी थी। गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं के साहित्य में अपनी लेखनी की प्रतिभा को दर्शाया । इन्होंने धार्मिक, प्राकृतिक और देशकाल परिस्थिति के अनुरूप लिखा हैं शृंगार, वियोग, वंदना की भी रचना की हैं 'ब्रजमाधुरी में' इन सभी का सुन्दर रूप देखने को मिलता हैं।

गणपति, शारदा, शंकर, कृष्ण वंदना, माँ-दुर्गा, जय-जय, शिवतांडव, रामायण में अपनी भक्ति भावना का परिचय दिया हैं शारदा को ज्ञान देनेवाली शंकर शक्ति का रूप, कृष्ण सब के प्रिय, माँ-दुर्गा को जन संचालिक आदि रूपों के रूप में भगवान की वन्दना की हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

उर में अविवेक भर्‌यो तम है तुम ज्ञान प्रदीप जलाती रहो।

वरदो भरदो गुन लेखनि में कवि में नव भाव सजाती रहो।

कछु छन्द बनाय सुनाऊँ तुम्हें तुम अंब सितार बजाती रहो।

इस शुष्क मरुस्थल अंचल में कविता सरिता सरसाती रहो।[272]

प्राकृतिक रचना में विभिन्न ऋतुओं के माध्यम से प्रकृति सुन्दरता का वर्णन किया है जिस में बसन्त, ग्रीष्म, पावस, शीत जैसे शीर्षक देकर प्रकृति का सुन्दर वर्णन किया हैं -

फूलि उठे पलास फूल आम्र बौर झूलि उठे,
अंग-अंग शूल उटे रंग छा रह्यौ री अलि।
आयौ मधुमास पास भास मधु सूदन ना,
जीवन निरास करि जुल्म ढा रह्यौ री अलि।
कुलटा कुचाली क्रूर कोकिल कलापती है,[273]

उद्धव-गोपिका संवाद, मानिनी नायिका, वचन विदग्धा नायिका, काग (आगतपतिका नायिका) परकीय अन्य संभोग दुःखिता नायिका, दृग, स्वकीया खंडिता नायिका, अज्ञात यौवन नायिका रूप गर्वित नायिका, प्रेमगर्विता नायिका श्रृंगार परक दोहे, सिंगार, विरहनी जैसे शीर्षको द्वारा इन्होंने अत्यंत सुन्दर श्रृंगारिक और वियोग वर्णन हैं। जिसमें कान्ह प्रिय के रूप और गोपी नायिका के रूप में है। जिसका उदाहरण इस प्रकार हैं -

तीखे कठिन कठोर कुच, निकसे निज उर फारि।
ते पर हृदय बिदारिवे, काहे करत विचारि।।[274]

* * *

कब मिलि हैं पिउ आनि कैं, गल बाहिन गल डार।
कब भुज भरिकैं बेंटिहैं, कब करिहैं बहुप्यार।।[275]

इन्होंने दोहा, सौरठा, सवैया कवित्त की रचनाएँ की है जिस से उन की प्रतिभा का परिचय मिलता है इस के अलावा राजनीति के क्षेत्र पर भी इन्होंने नेताओं की पोल खोलते हुए जनता को अपने अधिकारों की प्रति जागृत किया हैं।

नेता सौं डरियौं सदा, बिपनके अनुपम ढंग।
जो चाहौ कल्यान निज, पकरौं बाकौसंग
पकरौ बाकौ संग मुख्य मंत्री बनवादे।
यदि बिगार हो जाय, रसातलकौं पहुँचादे

लाख टके की सीख, सुनौ मैं तुमकौं देता,
करौ बेगि दंडौत, कहूं मिलि जाए नेता।।[276]

'भूलि गये अब लोक भलाई' मिलिगौ स्वराज पै सुराज में भी राजनेता पर व्यंग्य किया है कि वोट पाने के लिए पग से चलकर वादा करेंगे मगर संसद पर बैठने पर आँख मिलाने को भी तैयार नही होते। उदाहरण इस प्रकार हैं।

नेता जन जनता को टूटि-टूटि लूटि रहे,
नीति गत कोउ देस देस काज सुरझायौ ना।
सीमा पै उछालैं हैं कुचालें रिपु बार बार,
पाक नाक तोरिबे कौ पाथर उठायौ ना।
कूपन तैं यानन तैं पाइ रहे अस्त्र-शस्त्र,
हिंसा क्रूरता कौ उग्रता कौ अंत आयौ ना।
गौण ह्वै गयौ है गण-तंत्र हू सुतंत्र भयौ,
मिलिगौ स्वराज पै सुराज मिलि पायौ ना।[277]

इस प्रकार 'तिवारी' जी ने हर ओर अपनी द्रष्टि रख हर सुन्दरता को ब्रजभाषा के द्वारा प्रस्तुत किया। नई पीढ़ी को संदेश भी दिया। छन्द कुण्डलियों, कवित्त की रचना कर काव्य के क्षेत्र में वृद्धि की साथ ही गद्य की भी रचना ब्रज भाषा के साथ-साथ हिन्दी और उर्दू भाषा में गजल भी लिखी।

गद्य रचना में 'छोटे-छोटे लेख जैसे बलिदान को बकरा, युवको उठो, पिता-पुत्र के कतर्व्य, गाड़ी चली गई, पिंजरा व तोता, ब्राह्मणों की दशा, प्रकाश कौं स्वागत विधाता, कृष्ण कौ उपालंभ आदि लिखे।

इस प्रकार तिवारी जी ने ब्रजभाषा साहित्यकारों में अपना एक अलग स्थान बनाया और अपनी प्रतिभा के कलरव द्वारा रंग दिया।

36. श्रीा गौरीशंकर आर्य

अपने काव्य में प्राकृतिक हास्य के तीखे तेवर प्रकट करने वाले ''श्री गौरीशंकर आर्य का जन्म 21 अगस्त 1921 को हुआ। इन्होंने अपने काव्य में सौंदर्य को उद्दीपन के रूपमें प्रस्तुत किया है नायिका के सौदर्य प्राकृतिक वातावरण राधा-

कृष्ण गोपीयों को सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया हैं संयोग-सिंगार उपालम्भ आलिंग्न, हास-विलास, रास आदि का चित्रण किया हैं। जैसे

सीतल सुहानी धाम कोकिल की कूक सुनी,
लागी हूक देखें फूल फूलि उपवन में।
आयौ ऋतुराज आज साज साजि आली जनु,
साजति सिंगार सेज सुंदर सदन में।
सती-सौं सिराती सी-सी सीत्कार करती बाम,
पौढ़ पर्यंक कंत अंक भरि भवन में।
हाँही करि नाँहि करि मुस्काया मरोरी लेत,
मारै जियावै जू तिरछौंही चितवन में॥[278]

सावन बसन्त और ग्रीष्म ऋतुओं के माध्यम से नायिका के सुख-दुख संयोग-वियोग को प्रभावित कर रहा है। जैसे बसन्त का वर्णन करते हुए नायक नायिक के उद्दीपन रूप प्रस्तुत किया जिसमें प्रकृति की तरह प्रियतम का मन भी उल्लासित हो रहा है। दूसरी तरफ ग्रीष्म का ताप विहरणी नायिका को जला रहा हैं। बानगी द्रष्टाव्य हैं-

आली बसंत कंत छोरि करि सिधारे दूर,
भई जिंदगानी मानौं करून कहानी सी।
रोम रोम रोवैं दिन दावा सम देत दाह,
जावै जवानी बही पसीने मिस पानी-सी॥
झांकौ झुकि झरोखा सौं नेंकु चैंन पावे हेतु,
आवै लगाती ाग लूएं नंदरानी-सी।
जेठ जानौ जेठ जी सौं राखै सास परदा मैंह
तन मन तपावै दोपहरी जेठानी-सी॥ [279]

'ब्रज-रज-कन' में नीति की विभिन्न विषयों से सम्बन्धित कवित्त, सवैया पद मिलते हैं। 4-7-1942 को 'अछूतोद्धार' में इन्होंने धर्म को विरोध कर छूत-अछूत की दीवार खड़ी करनेवाला को सोचने पर मजबूर किया हैं। जैसे-

भारत बसुन्धरा में, अब का धरौ है नाथ,
पावैं कहाँते लावैं हम विवेक बोध कौं।
जानैं हैं मन माँहि, सब आर्य बन्धु मानैं हैं।
आज के उपेच्छित जन के अनुरोध कौं॥
तिनके उद्धार हेतु, बैठें मिल सोचैं कछु,
लड़िबे को धावै आवैं, लैकैं प्रतिसोध कौं।
कैसैं हौं अछूत के, उद्धार की चलावौं बात
नाम धर्मवीर खड़े, धर्म के विरोध कौ॥[280]

स्त्री शिक्षा पर जोर देते हुए लिखा हैं। पौराणिक भीष्म का उदाहरण देते हुए आधुनिक युग में अनपढ़ महिला को कमजोर बताया हैं।

कैसे भीष्म भीम होंय, कैसैं हौ प्रतापी वीर,
कैसैं कहौ देस मेरौ फिरि सौं सुखारी हो।
बनैगौ शिवासौ पुत्र कैसैं यह राष्ट्र महा,
नारी की सुसिक्षा जब, मन ते बिसारी हो॥
घर-घर महिमा सौं मंडित हौ घरवारौ,
घर-घर अनपढ जहाँ घरवारी हो।
कैसैं यूं बनेगी बात, समता के या युग में,
पढ़े लिखे घर में जो, अनपढ़ नारी हो। [281]

'तकनिकी तालीम'में कबीर, रहीम, बिहारी के दोहें को पैरोड़ी रूप में प्रस्तुत कर टूयश्न, नोटस भेट, नकल, परीक्षा, सर्टीफिकेट पर इस प्रकार लिखा है।

गुरु गोविन्द दोनो खड़े, काकूँ भेंट चढाँय।
बलिहारी गुरु शून्य के, दस दस दिये बनाय॥[282]

*** * ***

रहिमन वे नर मर चुके, जो ट्यूसन न कैराहिं।
उनसे पहले वे मरे, पच पच सिस्य पढ़ा हैं॥[283]

रक्षाबंधन, जन्माष्टमी पर्व, होरी कौ रंग जैसी रचनाओं द्वारा पर्व की महत्ता को

दर्शाया है -

जन्माष्टमी पर्व

जाने नूप रूप सबहिं आई दिखराये,
राध ! अरु गोपिन के प्रेम कौ भिखारी है।
नाचैओ नचावै , रास बन में बजावै बेणु,
छोटौ पै छिगुनी पै गोर्वधन धारी है।।
जे नित पलोटे पॉय राधा बृषभानुजा के,
तउ जो कहात है 'मोह न' ब्रह्मचारी है।
नाहिं पार पावैं ध्यान, मुनिज नलगावैं पै,
आज वा कन्हैया की बरसगांठ प्यारी है।।[284]

'बसन्त को राम गीत' में कान्ह, गोपी के रमधुर रास का वर्णन कर सुन्दर रूप से ब्रजभाषा में वर्णित किया हैं-

उदाहरण इस प्रकार हैं -

कुञ्ज-कुञ्ज पुञ्ज मंजु मुरलिया बजाई कान्ह
रणत नूपूर रुनक-झुनक
चमकि छमकि छम्म छम्म-चन्द्रमुखी आई कान्ह
कुञ्ज्कुञ्ज पुञ्ज मंजु.... ।[285]

'समस्यापूर्ति' में कवि ने कत्तर्व्य, अभिलाषा, ज्योतिष, न्याय-तुला जैसे विषयों पर लिखा हैं उदाहरण इस प्रकार है-

'कत्तर्व्य हमारे'

पूर्न जुवा जब हौं हम हे प्रबु सत्य अहिंसा को व्रत धारे।
वीर बने, रनधीर बने नहिं सत्रुन के सम्मुख हम हारे।।
राखि दया पुरसारथ के सँग दीनन के सब दुक्ख निवारे।
त्याग रहे मन में जन के हित यों निबहैं कर्त्तव्य हमारे।[286]

* * *

'न्याय-तुला के निमित्त आसंका'

अन्तर की ऑखिन की गुहार कों नकारि जबै
पट्टिका उधारि देखि सत्य डरि जावेगौ।
पापनि पहिचानि जानि पूर प्रमान मानि
जो विधान पापिन कौ मान करि जावैगो॥[287]

इस प्रकार 'गौरी शंकरआर्य'ने भक्ति प्रकृति के साथ आधुनिक समस्याओं पर लिखा हैं गरीबी, बेरोजगारी, दहेज, नशा, मुकदमा, जुआ आदि समस्याओं को कवित्त सवैया दोहा पेरौड़ियों के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। विद्यार्थी शिक्षक, परीक्षार्थी नकल ट्यूशन पर पैरोड़ी लिख तीखा प्रहार किया हैं इस प्रकार ब्रजभाषा साहित्याकरों में अपना नाम रोशन किया।

37. श्री बनवारी लाल सोनी

हास्य व्यंग्य के तीखे प्रहार कर आधुनिक समस्याओं को प्रस्तुत करनेवाले सोनी जी का जन्म 14 जनवरी 1944 को अटूस जिला आगरा उ.प्र. में हुआ। इन्होंने कवित्त, सवैंया, कुण्डलियाँ और मुक्त छंदो की रचना की है जिस में भक्ति भाव और आधुनिक समस्याओं को उजागर किया हैं। भक्ति रचनाओं में ज्यादातर रामायण से सम्बन्धित हैं।

'ब्रजरचना माधुरी' में ब्रज गोर्वधन, वृन्दावन, राधा, मुरली, सावरियाँ, उद्धव, श्री हनुमान प्रार्थना हनुमान महिमा असोक वन, मीरा, शबरी, रामचरित-मानस, जैसे शीर्षको और भक्ति छन्दो में शिव बारात धनुष यज्ञ, कैकयी का वरदान माँगना, श्री राम कौशल्या वार्तालाप, रामवन गमन, अत्रि ऋषिः पत्नी, अनुसुइया का सीता को उपदेश, जयंत संवाद सीता हरण जैसे आदि शीर्षक पर भक्ति परक रचना की हैं। इस में ब्रजभाषा का प्रयोगकर भाषा के माधुर्य को भी दर्शाया है।

ठौर-ठौर झारै औ बुहारै घर आँगन कूँ,
चाखि-चाखि बेरनि सौं भरि ली छबरिया।
प्रीति की प्रतीति तौ न कही जाति शब्दनि में,
पूजा औ भजन में ही काटी है उमरिया॥

दशरथ नन्दन पधार आज जंगल में,
फूली ना समाबै वही सुनिकैं खबरिया।
दर्श पायबे की आस सुधि-बुधि भूलि गई,
राति में हू खोलिरखै घर की किबरिया॥[288]

*** * ***

तुलसी हू गायौ कछु भक्त हू रिझायौ और,
कछू नैं तौ बांधि लयौ प्रेम ही की डोर ते।
गीध मुक्ति पाई, नाव केवट मँगाई और,
सबरी कूँ तारि दयौ करुना की कोर ते॥[289]

इसी प्रकार से आधुनिक युग की समस्याओं को दर्शाते हुए भी लिखा हैं। व्यक्ति को समय परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए धीरज से काम करना चाहिए कर्म करते -करते रहना चाहिए फल की आशा नही करनी चाहिए किन्तु आज व्यक्ति धन सौहरत के पीछे भाग रहा हैं। अपनी जिम्मेदारी से विमुख हो करम पर ध्यान नही दे रहा हैं। जिससे समाज में भ्रष्ट्राचार अत्याचार, बढ़ता जा रहा है। इन की 'धीरज, अहंकार, करम, समय,धन, पैसा, माटी, माता, विधा, सुख, बाबू नेता, जग, शादी बिन बुलाए आदि इसी प्रकार की रचना हैं। अस्पताल के दोहें, दफ्तर के दोहें, मँहगाई, रेल आदि दोहें में व्यगंयात्मक रूप से आज के समाज परिस्थतियों को प्रस्तुत किया हैं। कि व्यक्ति, कितना अपनी जिम्मेदारी से दब गया हैं। कि उसके पास अपनी कुछ नही हैं। जैसे दफ्तर के दोहें में बाबू, अपने से ऊँचे औहदे पर रहने वाले व्यक्तियों से दब कर रह रहा हैं। रिश्वत ले रहा हैं । सिर्फ रूपयों के लिए वह मशीन की तरह काम करता हैं।

अस्पताल के दोहें में भी भष्ट्राचार की पोल खोली है। कि मँहगाई की मार के कारण बिना रूपया ले घूस ले कोई काम नही करता। उदाहरण इस प्रकार हैं

कम्पोडर औ नर्स कूँ,
जब तक मिलैं न दाम।
तब तक रोगी कूँ सखा,

मिलै नहीं नहीं आराम॥[290]

इस प्रकार 'श्री बनवारी लाल सोनी' जी ने अपने कौशल्य द्वारा ब्रजसाहित्य में दिनप्रतिदिन वृद्धि की। लोगों को अपनी भक्ति-भावना से भाव विभोर भी किया। कृष्ण के साथ राम की भी उपासना की साथ ही आधुनिक युगा में धीरे-धीरे बढ़ रहे भष्ट्राचार को भी व्यंग्यात्मक रूप से प्रस्तुत किया।

38. श्री शंकर लाल शर्मा 'दीपक'

मिश्रित भाषा से काव्य रचना प्रारंभ करनेवाले और बाद में ब्रजभाषा के प्रसिद्ध कवि 'दीपक' जी का जन्म 1939 कामा (भरतपुर) में हुआ। इन्हें बचपन से ही कविता लिखने का शौक रहा हैं यह 1978 से राजकीय सेवा में कार्यरत हैं। और कविता भी लिखते रहें। 'ब्रजरचना माधुरी' में इन्होंने विभिन्न विषयों का समावेश किया हैं। जिस में सरस्वती वन्दना, गणेश वन्दना और विविध सवैयों की रचना की। विभिन्न शीर्षक देकर लिखी गई रचनाओं में इन की भक्ति भावना देखने को मिलती हैं इस सवैया में शंकर जी का वर्णन किया हैं -

शीश जटा शशि गंग छटा, शुभ भाल त्रिपुण्ड सुहावत है।
गात भभूत उमापति के, गल हार भुजंगन राजत है।
कानन में छवि कुण्डल की, कर कंज त्रिशूल सु धारत है।
दीनन कौ हित कारक है, भव सागर पार उतारत है।[291]

'किरीट' में आठ भ गण 24 वर्ण हैं इस सवैया में नारद सोते-जागते, न्हाते-धोते नाचते-गाते, खेलते-कुदते हर पल हरि नाम जपते रहते हैं इस को ब्रजभाषा में बहुत ही मनोहर ढंग से इस प्रकार लिखा हैं -

खाबत-पीबत, जागत-सोबत, न्हाबत-धोबत आबत-जाबत।
खेलत-कूदत, नाचत-गाबत, सेबत-पूजत देवत लाबत।
नारद-शारद, शंकर चौमुख, ध्याबत हारत नामन जापत।
दीनन-हीनन, तारत राखत, 'दीपक' हेरत टेरत गाबत।[292]

इस प्रकार 18 सवैयों की रचना की है कवित्त, मन्हरण छन्द (धनाक्षरी) विभिन्न विषयों पर कवित्त की रचना की हैं, जिसमें विभिन्न ऋतुओं बसंत, शीत, का

सुन्दर चित्रण किया हैं-

औढ़नी बसन्ती और घाघरौ बसन्ती जाकौ,
चोलनी पै तार चारु, बसन्ती खिचन्त है।
हार हु बसन्ती नथ, नाक है, बसन्ती कान,
कुण्डल बसन्ती भाल बिंदिया लसन्त है।
जूड़ौ ऊ बसन्ती जाके केसन में साज रह्यौ,
फूल है बसन्ती सीस माँग दमकन्त है।
बसन्ती सिंगार मात भारती बसन्ती भई,
ठाढौ हाथ जोर वाकौ लाडलौ बसन्त है। [293]

बुढ़ापें में व्यक्ति की बुरी स्थिती हो जाती हैं वह शारारिक रूप से तो कमजोर होता हैं इस पर छोटों द्वारा उसका अपमान होने से उस की मन स्थिती को प्रस्तुत किया तो दूसरी ओर 'हमारौ भारत' में भारत की चारों दिशाओं की सुन्दरता, संस्कृति का गुण गान किया हैं - विभिन्न धर्म के बावजूद एकता तो बनाएँ रखने के लिए और उस के सौदर्य को दशार्या है। उदाहरण इस प्रकार हैं -

सत्य औ अहिंसा कौ, जग में प्रचार कियौ,
विश्व बन्धु भाव जानैं, दीयौ नीक नारौ है।
धर्म भिन्न-भिन्न जामें, जाति हू अनके रहैं,
बेस-भूषा, बाणी-भाषा, खान-पान न्यारौ है।
मन्दिर औ मसजिद, गिर्जाघर सोहत हैं
बाग औ तड़ागन कौ, भावनौ नजारौ है।
एकता विविधता में, अनूठी कलाकौ धनी
वीरन कौ देश बैया, भारत हमारौ है।[294]

'गरीबी' नामक शीर्षक देकर भारत के गरीबों को चरित्र-चित्रण, विवशताओं को प्रस्तुत किया हैं। कि ओढ़ने के लिए आसमान, तन पर वस्त्र नही, छुआरे की तरह शरीर सूख गया हैं और नेता इसी का फयादा उठा कर उन्हें सपनें दिखाते हुए लूट रहे हैं, उदाहरण इस प्रकार है -

ऐसे हाल हू में बाकी खाल खीचैं नेता लोग,

बाबा दीजौ वोट मोकूँ तेरौ ही सहारौ है।

पकर-पकर नेता आपस में खैंच रहे,

जैसे स्वान खींचै कोई पुतला गिरारौ है।

जानत है बू ही कहा रीह बापै आज

देख आर्य पुत्र हीय सोच करै भारौ है।

'दीपक' जपत बन्दनीय माता भारती कूँ,

जानै कब होय इन दीनन सकारौ है।[295]

इसी प्रकार इन्होंने किसान, प्रतिज्ञा सपूत पर लिखा हैं। तो दूसरी और ग्वाल, होली, फूल सिंगार जैसे विषयों पर भी लिखा हैं।

इसी प्रकार 'शंकरलाल' जी ने विविध दोहावली कुण्डलियाँ छन्दों की रचना की जिस में अपनी बहुयामी प्रतिभा को दर्शाया हैं भारतीय, राजनैतिक, सामाजिक, उपदेशात्मक भक्तिभाव, शृंगार, हास्य-व्यंग्य प्राकृतिक, सौदर्य, ऋतु-वर्णन सभी तरह से अपने भावों को प्रकट किया। और लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर लाने का प्रयास किया।

39. श्रीमती प्रमिला गगंल

क्रान्तिकारी विचारधारावाली श्रीमती प्रमिला जी का जन्म 02 जून 1942 को ग्राम मुड़िया पँवार, जिला शहजहापुर उ.प्र. में हुआ। इनके काव्य में ओज हास्य, व्यंग्य, विरह-विथा, फागुन की मस्ती देश में पनप रही समस्याएं जैसे दहेज भष्ट्राचार, मँहगाई, आंतकवाद आदि का वर्णन मिलता हैं।

'ब्रजरचना माधुरी' में बारहों महीना होरी शीर्षक देकर रचना में आतंकवाद की समस्या को प्रस्तुत किया हैं। कि चारों और खून की होली खेली जा रही है। मां, बहन के मांग का लाल रंग बिखर जा रहा हैं चारों ओर करूणा रूदन हैं।

दूसरी तरफ इसी में राजनीति पर भी लिखा हैं कि इसने सब के प्रेम भाईचारों की भावना छीन ली है जैसे -

च्यों फागुन की बाट निहारौ,

अब तौ बारहो महीना होरी।।
कौन सौ नगर प्रान्त ऐसौ छुट्यौ
जा में रोज नि होवै ना होरी।.
च्यों............................... ।
रह्यौ ठिठुरतौ बारहो महीना
वा कश्मीर पजर रई होरी।
गोरी के बोल गोलिन में छन गये,
थाप की ठौर सुने बम गोली।
खून के बोल गोलिन में छन गये,
थाप की ठौर सुने बम गोली।
खून के छींटा देख शरम ते,
बरफ पिघल गई है गई होरी।।[296]

शिक्षा का महत्व बताते हुए 'मल्हार' में बहुत सुन्दर रूप से लिखा हैं। कि शिक्षा के बिना जीवन अधूरा हैं उदाहरण इस प्रकार-

जीवन शिक्षा बिना चौ रहैं जी,
एजी कोई गामन हम्बे कोई गामन खुले स्कूल। जीवन...
राज परायौ भैना ना रह्यौ जी
एजी कोई अपनौ ही, हम्बे कोई अपनौ ही राज भरपूर।
जीवन शिक्षा............[297]

'दादी ने मोकू दई गारी' में नारी उत्पीड़न को प्रकट किया है कि लड़की का जन्म लेने पर माँ-बाप का बोझ समझना उस पर बाल विवाह कर देने से नारी की विभिन्न समस्याओं का भी पनपना, बचपन छीन का विभिन्न जिम्मेदारी के बोझ को दर्शाया है। उदाहरण इस प्रकार है।

मैया बोझ बनूँगी नाँय तोपै।
अब जीनौ परैगौ अपने बूते।
मैया जान परायौ धन मोकूँ

दरकाय दई जनम तेई पैलैं।
मेरौ छीन लियौ है बालकपन,
मैया पाप गठरिया भौत भारी
मैया दादी ने मोकूँ दई गारी॥[298]

✻ ✻ ✻

जो दै न सकौ छीनौ काहे?
ना समझ उमरि ब्याही काहे?
मोकूँ फूलनदार घघरिया नाँहै
पहरिया दिये धवल वसन काहे?
मैं सात बरस में साठ की भई
याकी कौन पै है जिम्मेदारी ?
मैया दादी ने मोकूं दई गारी॥[299]

'खेल और देस की महिमा' में देश की राजनीति और नेताओं पर व्यंग्य किया हैं। जैसे उदाहरण इस प्रकार हैं।

बोफोर्स पै फोर्स परयौ, पर तोप चली नाँय एक।
जब खुली जैन की डायरी, बचौ न एकहु नेक।
सब चेहरन कौ उतरौ पानी, रह्यौ न पानीवारौ।
मेरों देस सकन ने न्यारौ, मेरौ देस घुटालिनवारौ॥[300]

✻ ✻ ✻

धमर जाति के नाम पै कीचड़ अंजुरी भरि-भरि डार।
कीचड़ भी शरमावै इनके करतब अणुदार
हल्ला-गुल्ला, लुट-खसोटी, चलें रात दिन सेल।
गजब कौ नेता खेलै रे॥[301]

इस प्रकार प्रमिलाजी ने ब्रजभाषा में यर्थाथवादी सटीक रचनाएँ रची जिस में शिक्षा, भष्ट्राचार, राजनीति, मँहगाई आदि सभी विषयों पर अपनी प्रतिभा द्वारा प्रस्तुत किया।

40. डॉ. त्रिभुवन नाथ चतुर्वेदी

अपनी हास्य रचनाओं द्वारा बड़ी से बड़ी समस्याओं को प्रस्तुत कर पाठकों को रुझाने वाले डॉ. त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी जी का जन्म कोटा 18 सितम्बर 1928 में हुआ। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों ही विधाओं में लिखा हैं।

ब्रजरचना माधुरी में 'दुहाई' हैं में कवि ने मानव के अहम तृष्णा और माया जैसी भावनाओं के आधीन हो जीवन का नाश करते हैं और अपने समय को नष्ट करते है। इस को ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा हैं-

देख देख जरे जात, अहम सौं बरे जात,
कोऊ ना सुहात, भई ऐसी मनुजाई है।
मानव मानव कौं खात, झूठे आँसू बहात,
दूर दूर देखें नाँय दिखे सरलाई है।।
कोऊ तन सौं दुखी, कोऊ मन धन सौं दुखी,
सर्व सुखी कोऊ नाँय, पर्यौ दिखाई है।
सहकैं जग के प्रहार, आयौ हों तेरे द्वार,
दीनन के नाथ मेरे तेरे नाम की दुहाई है।।[302]

''सुनो युधिष्ठर'' में देश की विभिनन समस्याओं जैसे भ्रष्ट्राचार जातिवाद, प्रांतवाद, घूसखोरी, मिलावट, मँहगाई, झूठ, पांखड, आदि सभी का वर्णन करते हुए दुशासन का राज्य की संज्ञा दी हैं जहाँ प्रजा की हालत दिन प्रति दिन खराब होती जा रही हैं मंत्री, नेता, स्वार्थी होकर लूट रहे हैं, संस्कृति परम्परा नष्ट हो रही हैं। इसी को ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा हैं -

चहुँ ओर दबदबौ, घूस औ सिफारिस कौ,
शासन कौं जाति और, कुनबे से भरि रहे।
राष्ट्र के अभिमान कौं, त्याग चाटुकार बने,
परदेसी सेठन के पिछलग्गू बन रहे।।
वोट की नीति सौं, सुनीति की राह तज जे,
कुर्सी की खातिरन अनीति सब करि रहे।

राष्ट के अनिष्ट कौ, दोष दूसरे पै गढ़
घड़ियाली आँसू भर, देसभक्त बनि रहे॥[303]

'चिर कुमारी' में ऐसी नारी की व्यथा का वर्णन किया है जो पुत्र की जिम्मेंदारी को निभाते हुए अपनी खुशियों का गला घोट जीवन बिता रही हैं उसने अपने प्रेम से अपने घर को प्रकाशित किया हुआ है। उदाहरण इस प्रकार हैं -

बाप कौ न कहौ मान, कमाई करिबौ ठान,
अहम की पुतरिया, पिसती कमाती रही॥
घर न बसायौ नांहि, संतान सुख पायौ,
भाई भतीजे खिलाय मन घट लाती रही॥
सेज कौ न पायौ सुख, दमित वासना दुःख,
इतै उतै मौंह मार, काम वो चलाती रही॥
वय दालै कौन यार, भाभी नैं दिखायौ द्वार,
खंडर में स्नेह हीन, दीप सी जलाती रही॥[304]

''वीर'' में देशके वीर सपूतों का नमन किया हैं जो निःस्वार्थ भावना से देशकी रक्षा करते हैं और दूसरी ओर उन नेताओं को धिक्कारा हैं जो स्वार्थता से देश को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहे हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

देश, धर्म, सम्मान हित, जो भिड़ जाबै वीर
आपुनि चिंता बिन किए युद्ध करै रणधीर,
बालक अबला वृद्धन पै नहिं हाथ उठावै,
युद्ध करैं रणधीर, निबल कों नाँय सतावै,
लड़ियन कौ दल देखिकैं लड़ै सिंह सो वीर
दल बल हुंकारे भरै, थे काहे के वीर?[305]

''नौकरी'' में आजकल जिस में काबलियत हैं उसे नौकरी न मिलकर ऐसे लोग है जो सिफारिश और घूस खिलाकर कुर्सी पर बैठें हैं। अफसर की चापलुसी करना, स्वाभिमान, को ताक पर रख कर नौकरी कर रहे हैं। इसी पर व्यंग्य करते हुए लिखा हैं।

नौकरी माँहि सफलता पाबे कौ मूलमंत्र,
भक्त सिरोमनि जैसौ नाम कछु रखाइये।
साहब नामधारी के झुक कैं पूजौ चरन,
अफसर नामधारी के आगैं झुक जाइये॥
साहब की मैडम की, कुंवरि कुँवरन की
हाजरी लगाइये अरु हुकम बजाइये॥
साहब जब हँसकै गुड वैरी गुड कहैं,
खीसें निपोरि 'किरपा आपकी' बताइये॥[306]

इस प्रकार त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी जी अपने विचारों भावों ब्रजभाषा में प्रस्तुत किया और आधुनिक समस्याओ को प्रस्तुत कर अपनी प्रगतिवादी विचारधारा को प्रकट किया। इन को ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मान भी किया गया।

41. डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'जी का जन्म 05 जुलाई सिधावली त. बाह. जि. आगरा में हुआ। इन की कविताओं से संवेदना सहदयता जैसा व्यक्तित्व दिखाई पड़ता हैं उदयपुर में इन्होंने ''राजस्थान भाषिकी अनुसंधान अकादमी'' की स्थापना कर भाषा को फलने फूलने का अवसर दिया। बचपन सेही काव्य में रूचि रखते थे।

इन की ''ब्रजरचना माधुरी'' रचना में विभिन्न विषयों का समावेश किया हैं। 'कामना' में दिनेशजी ने कृष्ण राधा और गोपियों का जमुना के किनारे, और दही माखन चुराने वाले कृष्ण का वर्णन बड़ी सुन्दरता से किया।

जमुना-तीर करीलन-कुँजनि
गोपिन के सँग राधा।
नाचति-गावति रही चरावति
गाएँ, सही न बाधा।
जहाँ बजी बंसी कान्हा की
पथ-रज सीस धरौ।
प्रभुगुन बानी मधुर करौ॥[307]

''कलिजुग कंस अनेक भए'' कविता में कलयुग के कंस का वर्णन किया हैं। जो अपनी ऊँची कुर्सी के नशे में अपने कतर्व्य, धर्म, नैतिकता को भूलकर सर्प की तरह हो गए हैं। उदाहरण इस प्रकार है-

द्वापर कंस हतौ इक कान्हा !
कलिजुग कंस अनेक भए।
कुल-मर्जादा लाँधि रहे सब
बहिन-भानजी को समझै अब
कुर्सी के मद में मतवारे
सब नैतिकता भूलि गए।
कलिजुग कंस अनेक भए ![308]

''एक बार लै चलै'' में शहर को एक जंगल की तरह बताया है जहाँ हत्या, डकैती जैसे गुनाह हैं रोग का घर हैं तो दूसरी तरफ गाँव में कृष्ण की बाँसुरी, नदी तट और संस्कृति का घर हैं। वही कवि ब्रज गाँव चाहते हैं उदाहरण इस प्रकार है-

जा शहर रोज-रोज
रोग हैं
विहाग हैं
दौड़-धूप
लूटमार! हाय-हाय!
वृन्दावन ऐसौ जहाँ
छप्पर के छेदनि सौं
राति-दिन छनत कान्ह!
जीवन रस-धार है।
लै चलौ
मोहि बेगि लै चलौ
जमुना के तीर
गाँव-वही

मेरौ रस-धाम है। [309]

''सूरज मै देखी हैं'' में कवि ने माँ के रूप को वर्णित किया हैं जो सुबह से ही सेवा में लग जाती हैं अपनी दर्द भूल दूसरों को खुशियाँ देती है माँ का सुन्दर चित्रण करते हुए इस प्रकार लिखा हैं।

तुमनें दे देखी है माँ?
सूरज नैं सबसौं पैलैं
देखौ है बाकौं
गायनि की सेवा में
चकिया पै
चौका में [310]

''मदिराए कूप'' कविता में कवि ने शीत की धूप की सुन्दरता का वर्णन किया है- उदाहरण इस प्रकार हैं -

सहमी सी आवति है
आँगन में धूप।
छतनि के मुँढेरन सौं
छप्पर के छेदन तानूँ
अलसाई लेटी है
जमुहाती शीत।
बिगरौ है कुहरे में
गोरौ-सौ रूप।
आँगन में धूप।[311]

'ऐसे तुम नेता भए' 'माँगत हैं मत एक मिली है कुर्सीष में' कवि ने नेता राजनीति का कच्चा चिट्ठा प्रस्तुत किया हैं कि नेता इलेक्शन पर वोट पाने के लिए झूठे वादे करते हैं। भेद-भाव की आग लगाते हैं, और जीतने के बाद कुर्सी का गलत फायदा उठा कर अपनी जेब भरते हैं राजनीति को कवि ने सबसे गंदा क्षेत्र कहा हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं-

भीड़ देखि भेड़िन-सी भाषण बड़ौ सौ देत
एकता-अखंडता कौ नारौ हू लगात हौ।
खुर्सी देखि कागन-सी काँव-काँव करि-किर।[312]

'को मंजिल तक जावैगौ''सूरज कैसौं आवैगौं' कविता में कवि ने अपने आशावादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है वह कहते है कि जनता के सभी दुःख कभी तो दूर होगें. कोई तो जनहीत कार्य करेगा कोई तो अंधेरें में मशाल जलायगा कोई तो देश को उन्नति की ओर ले जायगा। इस प्रकार आशावादी दृष्टिकोण को दर्शाया हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

तिनकनि तक कौं खाबति है।
बूँद-बूँद संवेदन सूखौ
कष्ठ काहि दुहरावैगौ?
कौन आँधियाँ चीर रोशनी
मंजिल तक लै जाबैगौ।।[313]

इस प्रकार डॉ. रामगोपाल जी ने अपने नजरिए को ब्रजभाषा में रच कर अपने कौशल्य का परिचय दिया। इन्हों राजस्थान साहित्य अकादमी ने पुरुस्कृत किया गया। उत्तरप्रदेश सरकार ने भी विशेष 'तुलसी' पुरुस्कार दिया। इस प्रकार ब्रजभाषा साहित्य कोश में वृद्धि करते रहें।

42. श्री रत्नगर्भ तैलंग

भक्ति और शृंगार के कवि 'श्री रत्नगर्भ तैलंग' जी का जन्म 13 नवम्बर 1914 को जहाँनाबाद में हुआ।

'ब्रजमाधुरी' ने विभिन्न रसो को दर्शाया है। जिस की आरम्भ गणेश वंदना और सरस्वती वंदना से की हैं। जिस का उदाहरण इस प्रकार हैं-

लंबोदर गज बदन अलि, चार भुजा एक दंत।
आउ चलै पूजन करैं, बहुरि रह्यौ हेमन्त।।[314]

मंगला, सिंगार, ग्वाल दरसन की भावना में कृष्ण भगवान के रूप, शृंगार का वर्णन किया हैं। साथ ही अपनी भक्ति भावना को दर्शाया हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

अधर धरे मधु बांसुरी, रूप सुरुप अपार।
राधेजू कौ आज तौ, करत कृष्ण सिंगार॥[315]

'गोस्वामी विट्ठलनाथ जी की जयन्ती पै' तैलंग जी ने विट्ठलनाथ जी के गुणगान करते हुए ब्रजभाषा में सुन्दर दोहो की रचना की उदाहरण इस प्रकार हैं -

लक्ष्मी सुत, पदमापती, श्री विट्ठल गिरिराय,
लीला अद्भूत आपकी, लखि सन्देह नसाय॥[316]

'तुलसी' में तुलसी का महत्व बताया हैं कि बिना तुलसी के भोग का कोई महत्व नहीं भगवान की प्रिय तुलसी हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं।

तुलसी जग पाप नसावन है
त्रय ताप निवार है तुलसी॥
तुलसी भव फंद बिनासि सबै
हरिधाम दिवावति है तुलसी॥
तुलसी गति है तुलसी मति है
पत राखनहार अहो तुलसी॥
तुलसी हरि कौ ऐती प्रिय है
नहिं भोग लगाबै बिना तुलसी॥[317]

'पन्द्रह अगस्त' में कवि ने अगस्त को गुलामी से आजाद कराने वाला बताया हैं

इस प्रकार तैलंग जी ने अपनी ज्यादातर रचनाएँ भक्तिपरक ही लिखी हैं राम, शिव, कृष्ण, विट्ठलनाथ, तुलसी और सरस्वती आदि की आराधना की हैं। जिस में ब्रजभाषा का उपयोग किया हैं अलंकार का भी प्रयोग किया साथ ही विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लिखा भी हैं।

43. श्री आनन्दीलाल गोरव 'आनन्द'

लोक साहित्य में ख्याति प्राप्त 'श्री आनन्दी लालजी' का जन्म 18 सितम्बर 1922 को नाथद्वारा जिला राजसमन्द में हुआ। इन्होंने समस्याओं से धीरे देश की जनता की आँखो को खोलने का काम किया। इन्होंने ज्यादातर मँहगाई गरीबी,

जनसंख्या आदि समस्याओं पर लिखा हैं।

'ब्रजरचना मधुरी' में इन्होंने विभिन्न समस्याओं पर लिखा हैं। मँहगाई से त्रस्त जनता अपना पेट भरने के लिए ही कमा खा ले बहूत हैं। इस पर पानी बिजली का बिल कैसे भरे इस बिम्डबना को ब्रजभाषा में इस प्रकार लिखा है-

बिजली न मिलै नहिं पानी जुरै,
कठिनाई है गैस जुटावन की।
महँगाई भई है सिंगारन की।
उद्घाटन, भासन, चाटन में,
नित भीड़ बढ़ी मेहमानन की।
गुमराह करैं नहीं नेंकु डरैं,
अब कौन सुनैं बतियां बिनकी॥[318]

नेता जो गरीबों को हक छीनकर अपना पेट भरतें हैं। मगर जब वोट चाहिए तो गरीब की तरह हो जाते हैं. विभिन्न चिह्नों को सहारा ले विश्वास जीतना चाहते हैं। और विभिन्न वादा करते हैं मगर कुर्सी मिलने पर रंग बदल जाता है। इसी बदलते रंग को इस प्रकार लिखा है-

कोऊ हाथ कौ पंजा दिखावत है,
कोऊ छाप दिखावत मुरगिन की।
कोऊ पद्म को पुष्प बताय रह्यौ,
कोरु हँसिया धार कटारिन की।
कोऊ घोड़ा चढ़े, कोऊ हाथिन पै,
कोऊ देत दुहाई किसानन की।
सब कुर्सिन काजैं दीन बने,[319]

इसके दूसरी तरफ ऐसे नेताओं को भी याद किया हैं । जिन्होंने जान पर लड़ कर देश को आजाद करवाया। जैसे सुभाषचन्द्र, जवाहर,गाँधी आदी। उनमें से ही एक का उदाहरण इस प्रकार है-

ऐसे विचारन काम चले, नहिं

जान हथेरी लै आगैं बढ़ौ।
जिहि भाँति अड़े हे सुभाष जहावर
ता विधि भारत कूँ पकड़ौ।
भग जाऔ कहो अंगरेजन सौं,
अरे हिन्दी के बांकुरे वीर अड़ौ।
जब लौं न स्वराज मिले हमकूँ,
तब लौं तुम देस के ताहिं लड़ौ।[320]

गरीबों की पीड़ा को समझकर उन के दर्द को समझकर अपनी लेखनी द्वारा ब्रजभाषा में अपने भावों को इस प्रकार प्रकट किया।

दूध बिना पूत उतै गोद में विलाप करै,
इते पदपान मतवारौ भयौ आदमी।
सुनत ना, उतै कोऊ आह ही गरीबन की,
इतै हाँ हजूर की हजूरी करै आदमी।
भूखौ अरू प्यासौ है किसान-मजदूर उतै,
इत करै हाकिम हकूमत सौं आदमी।
हाय परे आनन्द के दिन-रात रोने उतै,
कासौं कहें, कौन सूनै बहरौ भयौ आदमी॥[321]

कृष्ण राधा गोपी विहार कर रहे हैं। जिस के कारण प्रकृति की सुन्दरता और बढ़ गई है हवा, फूल-पत्ते, पशु-पक्षी सभी कृष्ण राधा के मधुर रंग में रंग गए हैं जिस का उदाहरण इस प्रकार है-

बाँके बिहारी बिहार करैं राधा संग,
गोप-ग्वाल संग लिये आनन्द मन भाई है।
चहूँ ओर बासन्ती फैल रही बगियन में,
भौरन की कुँज माँहि भन्न भन्न छाई है।
अम्बा की डारिन पै कोयल करैं कुहू-कुहू,
मयूरा-पपिहरा की बोली सुखदाई है।

फूलन की फुलवारी चहुँ ओर महक रही,
मीठी सी मधुर कैसी गंध महकाई है।[322]

'रसिया' में होली फागुन की मस्ती रंग का वर्णन किया है-

सन् 1992 में 25 फरवरी को द्वारकेश में राष्ट्रीय साहित्य परिषद काँकरोली में ब्रजभाषा कवि सम्मेलन में इन्होंने सभी कवियों के सम्मान में ब्रजभाषा में कवित्त सुनाया, जिसमें उन की इस प्रतिभा के दर्शन मिलते है। उदाहरण इस प्रकार हैं -

दाख औ छूँआरे, कारी मिर्च औ मसालेदार,
बिजिया बादाम सिला-लोरी पै घुटाय दैं।
दूध संग साफी हू सफेद स्वच्छ मित्र मेरे,
गुलकन्द डारि स्नेह सौरभ मिलाय दैं।
काँकरोली द्वारकेश द्वारिका पुरी में आ,
ब्रज के समाज बीच कविता सुनाय दैं।
आनन्द अनोखा या बसन्त सुभ औसर पै
भर भर लोटा भंग कविन छकाय दैं॥[323]

इस प्रकार इन्होंने भक्ति के साथ देशके नेता और आम व्यक्ति के रूप को प्रस्तुत किया और दूसरी तरफ राधा, कृष्ण ब्रज की सुन्दरता का भी वर्णन किया। इनको राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित भी किया गया। इस प्रकार ब्रजभाषा के फलने फूलने में इनका अमूल्य योगदान रहा।

44. मेवाराम कटारा

लेखक, समीक्षक और कवि बहुयामी प्रतिभा के धनी 'मेवा राम कटारा' का जन्म 08 मई 1939 को लखनपुर ता. नदबई भरतपुर में हुआ।

'ब्रजरचना माधुरी' में विभिन्न विषयों की रचना की हैं। जिस में सर्वप्रथम 'कुण्डलियाँ' में अंग्रेजी भाषा पर व्यंग्य करते हुए उसे चिरंजीव कहा हैं भारत में सब हिन्दी भूलकर अंग्रेजी को ज्यादा महत्व देते हैं ।-

चिरजीबौ इंगलिश मदर, पढ़िबौ हौ गम्भीर।
नेता है सेवक सभी, हम बिनकी तस्वीर॥

हम बिनकी तसबीर कि 'मैडम' बन गई देबी ॥

पापा 'डैडी' बने बन गइ मुन्नी बेबी ॥

कर स्टडी 'राजा(जी)' ने चौं लड़ते लोग अजीबो।

ब्रिटेन भले छोड़ो हिन्दी में तुम चिर जीबौ ॥[324]

इसी प्रकार गांधी जी से देश की लाज बचाने और अंग्रेज भारत की बुनियाद को भष्ट्रकर रहे हैं, पश्चिमी सभ्यता भारत के गौरव को कम कर रही है। तो वह गांधी से उसे बचाने के लिए आग्रह करते है।

दूसरी तरफ 'मैयामैया' में कवि ने गाय जिसका दूध सब पीते हैं। उसी गाय की दुर्दशा आज बुरी हो गई हैं जिसे हम पूजते है आज वही उस की सेवा करने में शर्म करते हैं। आजकल जिसमें खाते उसी में छेद करते हैं। इन्ही भावों को प्रस्तुत किया हैं उदाहरण इस प्रकार हैं-

बात सुनत लज्ञा लगै, होत घनेरौ खेद।

ज्या हँडिया में खात हैं, करैं ताहि में छेद ॥

करै ताहि में छेद, कि जाकौ दधि घ्रत खाबत।

पीवन मीठौ दूध, और बछड़ा हू पाबत ॥

सन्त कहै मति मन्द तुम बन्द करौ गौधात।

लाभ-हानि सब देखि के मानों नीकी बात ॥[325]

'दीमक' में कवि ने देश में फैल रहे भष्ट्राचार और जो देश को अन्दर ही अन्दर खोखला करता जा रहा हैं ऐसे शैक्षिणक, औद्योगिक, राजनैतिक, सरकारी सब जगह यह फैले हुए भ्रष्टाचार को इसे अपनी इस कविता में बहुत सुन्दर रूप से ब्रजभाषा में लिखा हैं उदाहरण इस प्रकार हैं -

दीमक

न जानें कब-तब

घुस जाय घरन में

चुपकें चुपकें

एकते अनेक है जाय

ब्रझ की नाई अनन्त

साँची पूछौ तो दीमक सब जगह होय

दफ्तरन में चाटै फाइल [326]

'सब सुपनौ हैं गयौ' कविता में कवि ने गाँव जहाँ मनोहर प्रकृति सीधा-सादा सुन्दर जीवन होता हैं आज वह खो गया हैं आधुनिकता ने गाँव की सुन्दरता नष्ट कर दी हैं। सुन्दर भारत का सपना खो गया हैं चारों तरफ ऊँची-ऊँची इमारते, कारखानों की आवाज, प्रदूषण ने सुन्दरता पर ग्रहण लगा दिया हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

हरे-भरे खेतन के बीच

एक ल्हौरौ सौ गाँव

दगरे की बगलमें

ऊंची सी अथांई पै

गुमटीदार नीमकी छाँव

नीम के बौर की मुसकान [327]

'पावस-यामिनी'में कवि ने बहुत ही सुन्दर ढ़ग से प्रकृति सुन्दरता का वर्णन किया हैं। उन्होंने लिखा है। बदरा के काजल लगा कर बिजली का गजरा पहने चन्दा की बिंदियाँ कर पावन-यामिनी आई है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

बदरा कौ कजरा औ गजरा बिजुरिया कौ,

चन्दा की बिन्दिया जानै माथे पै लगाई है।

नैनन में नींद कौ नसा सौ ज्याकें छाप रह्यौ,

कामिनी-सी पावस की यामिनी सुहाई है।।[328]

इस प्रकार मेवाराम कटारा जी ने ब्रजभाषा में अपने भावों को विभिन्न कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया। गद्य के क्षेत्र में भी कहानी, संस्मरण, लघुकथा एंकाकी आदि लिखा हैं। इन को विभिन्न पुरुस्कार भी प्राप्त हुए 1995 में राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी द्वारा सम्मानित भी किया गया।

45. दामोदर लाल तिवारी

हास्य व्यंग्य से तीखे प्रहार कर अपनी बात को कहनेवाले 'दामोदर लाल

तिवारी का जन्म 4 दिसम्बर 1933 को डींग में हुआ। इन का काव्य 'स्वान्त सुखाय' और 'पर हिताय' पर लिखा गया हैं। इन्होंने आम जनता के दुःख दर्द को समझकर, समाज में फैले रहे भष्ट्राचार, अत्याचार को दर्पण की तरह पेश कर नवभारत की कल्पना की हैं।

'ब्रजरचना माधुरी' में इन्होंने प्रारंभ में वन्दना से शुरु करके विभिन्न विषयों पर लिखा हैं। 'माँ-सरस्वती-वन्दना' में शत बार प्रणाम कर सरस्वती जी की वंदना की हैं और हमेशा उन का आशीर्वाद रहें यह कामना की है। दूसरी तरफ 'गुरु-वन्दना' में अपने गुरु का आभार प्रकट करते हुए भगवान से ऊँचा स्थान दिया है। इन्ही सब को काव्य द्वारा दर्शाया है उदाहरण इस प्रकार हैं -

गुरुजी ! शत-शत बार प्रनाम ॥
ब्रह्मा विसनू अरु शिव ते हू,ऊँचौ है स्थान।
कोऊ देव बड़ौ ना तुमसौ, सबई दैं सम्मान।
जाई कारन सुर-नर मुनि हु, पढ़े गुरु के धाम।[329]

'मन मोहि लियौ हैं' में तिवारी जी ने एक तरफ तो उस उद्धव, गोपी संवाद की चर्चा की जहां गोपीयाँ उद्धव से कह रही कि कृष्ण ने उनका मन मोह लिया हैं। तो दूसरी तरह कवि ने उन वीरों के पराक्रम का वर्णन कर वीरों ने लोगों का मन मोह लिया है। उदाहरण इस प्रकार हैं।

भारत के परमाणु परीक्षण नैं सबकूँ दिखलाय दियौ है।
आज निजी बल कौशल सौं बम, पाँचन कौ विसफोट कियौ है॥
पाक व चीन पुकारत हैं उत, धीरज हू अति खोय दियौ है।
सैनिक वीर जवानन नैं जन, मानस कौ मन मोहि लियौ है॥[330]

'नारी महिमा' में कवि ने नारी को महत्व देते हुए नारी को सृष्टि में इन्सान का निर्माण करनेवाली सपूतों को जन्म देने वाली, घर की नाव में पतवार की तरह घर को आगे बढ़ाने वाली हैं अर्थात नारी की घर की शोभा, मान-सम्मान, बढ़ानेवाली माना हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं -

गृह नौका की नाव की, नारी है पतवार।

जो नहिं खेबै जुगत सौं, डुबा देय मँझधार।

बढ़ाबै यही पुरुष कौ मान। होम दे पति के ऊपर प्रान॥

भलइ हो घर की टूटी छान। न बेचैगी अपनौं ईमान॥[331]

'चेतावनी' में कवि ने उन देशों को चेतावनी दी हैं। जो भारत का बुरा चाहते हैं। उन्होंने इस में भारत की एकता अखण्डता का वर्णन किया हैं- उदाहरण इस प्रकार हैं -

यह मेरी देस महान है।

न्यौछावर हर बूढ़ौ-बच्ता, बाला अरु ज्वान है।

कासमीर है मुकट राष्ट्र कौ, सुर के स्वर्ग समान है॥

यह मेरौ देस महान है। [332]

शिक्षा का महत्व बताते हुए स्त्री शिक्षा को उन्नति का आधार बताते हुए इन्होंने लिखा हैं।

ऐसौ कहा फट परौ काम, दौरे छूटे दीखैं गाम,

तुम जैसे हैं अन्य तमाम, जो घर पै करते आराम,

बचन दिये हैं मती छिपाऔ, को हैं जिनकूँ आप पढ़ाऔ,

मन में का है मोय बताऔ, अपनौई सुख चैन गमाऔ॥[333]

'हिन्दी भाषा' में कवि ने हिन्दी, भाषा का महत्व बताते हुए भाषा को देश की शान बताया है। अंग्रेजी को शैतान कहां हैं। उदाहरण इस प्रकार हैं-

दूजे की झूँठन खाऔ मत, बिसराऔ पड़ ना जाबै लत।

कछु सोचौ अपनी शान की, यह हिन्दी हिन्दुस्तान की॥

भाषा है देश महान की.... [334]

इस प्रकार दामोदर लाल तिवारी जी ने आधुनिक विषयों पर लिखा हैं साथ ही परम्परागत काव्यधारा का भी अनुसरण कर कृष्ण, राधा, ब्रज, होली, प्रकृति आदि जैसे विषयों पर लिखा परम्परागत और आधुनिकता दोनों का सुन्दर चित्रण कर ब्रजभाषा साहित्यमें वृद्धि की।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि राजस्थान के ब्रजभाषा साहित्यकारों का

कृतित्व ज्ञान का भण्डार का स्त्रोत है जिसमें परम्परागत विषय तो है, साथ ही आधुनिक विषयों का भी समावेश है। यहां हमने कुछ कवियों के कृतित्व को दर्शाया है। मगर राजस्थान में ओर भी कई ब्रजभाषा कवि है जो दिनप्रति दिन ब्रजभाषा साहित्य भण्डार की वृद्धि कर रहे है।

*

सन्दर्भ सूची

1. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-1 सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ 36
2. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 46
3. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
4. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
5 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 42
6. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 39
7. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 230
8. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 216
9. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 217
10. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-8, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ 96
11. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 95
12. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 96
13. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 98
14. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 93
15. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 99
16 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 104
17. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 104
18. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 105
19. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 107
20. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 109
21. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 109
22. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 111
23. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 102
24. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 103
25. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 254
26. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 255
27. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 255
28. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 254
29. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 254
30. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 254
31. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 254
32. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 297
33 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 312
34. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 312
35. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 313
36. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 313
37. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 283
38. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 290
39. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-15, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मद्गल, पृ. 70
40. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 79
41. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 80

42. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 81
43. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 85
44. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 103
45. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 141
46. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 142
47. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 181
48. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 190
49. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्‌गल, पृ. 269
50. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 280
51. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 283
52. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 291
53. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 293
54. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 299
55. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 297
56. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 306
57. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 35
58. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 37
59. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 40
60. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 50
61 पुस्तक : राज्सथान के आधुनिक अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-1, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 192
62. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 191
63. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 186
64. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 186
65 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 186
66. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 194
67. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 197
68. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 202
69. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 194
70. पुस्तक : राजस्थान के आधुनिक अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भागृ-2, सम्पादक : डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक, पृ. 33
71. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 29
72. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 21
73 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 25
74 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 29
75. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
76. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 45
77. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 38
78 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 148
79. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 149
80. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 149
81. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 150
82. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 150
83. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 161

84. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 160
85 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 150
86. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 154
87. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-17, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्‌गल, पृ. 296
88. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 299
89. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 299
90. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 301
91. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 301
92 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 304
93. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 313
94 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 302
95. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 304
96. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 25
97. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 65
98. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 71
99. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 71
100. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 31
101. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 26
102. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 48
103. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 36
104. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-9, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 40
105. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 43
106. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 42
107. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
108. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 45
109. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 45
110. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 46
111. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 46
112. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 47
113. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 47
114. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 48
115. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 49
116. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 51
117. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 53
118. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 57
119. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 60
120 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 91
121. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 142
122. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 145
123. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 146
124. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 148
125. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 148
126. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 148
127 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 150

128. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 153
129. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 156
130. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 152
131. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 239
132. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 242
133. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 243
134. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 244
135. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 250
136. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-10, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 40
137 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
138. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
139. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 46
140. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 48
141. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
142. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 51
143. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 60
144. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 63
145. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 72
146. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 74
147. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 77
148 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 79
149. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 80
150 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 89
151. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 104
152. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 217
153. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 218
154. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 219
155 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 239
156. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 241
157. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 242
158. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 245
159. पुस्तकः वही, सम्पादक : वही, पृ. स. 246
160. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-3, सम्पादक : डॉ, विष्णुचंद पाठक, पृ. 2
161. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 18
162. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 29
163. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 31
164. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 35
165. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 41
166. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 37
167. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 43
168. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 60
169. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 63
170. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 97
171 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 99

172. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 107
173. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 108
174. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 117
175 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 123
176. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 34
177. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 119
178. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 76
179. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 176
180. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 180
181. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 159
182. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 162
183. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 174
184. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 170
185. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 186
186. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 187
187. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 208
188 पुस्तक : राजस्थान के अध्यात ब्रजभाषा, साहित्यकार भाग-5, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. सं. 15
189. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 16
190. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 23
191. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 39
192. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 17
193. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 18
194. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 18
195. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 16
196. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 18
197. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 24
198. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 26
199. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 56
200 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 80
201. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 81
202 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 88
203. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 88
204. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 90
205. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 92
206. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 92
207. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 96
208 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 97
209 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 102
210. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 217
211. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 220
212. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 220
213. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 221
214. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 226
215. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 227

216. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 229
217. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 229
218. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 231
219. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-6, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 4
220. पुस्तक: वही, सम्पादक : वही, पृ. 16
221. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 38
222 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 39
223. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 47
224. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 73
225. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 76
226. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 80
227. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 90
228 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 154
229. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 165
230. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 180
231. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 181
232. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 182
233. पुस्तक : वही, सम्पादकः वही, पृ. सं. 185
234. पुस्तक : वही, सम्पादकः वही, पृ. सं. 186
235. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 172
236. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-7, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 17
237. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 21
238. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 21
239. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 5
240. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 35
241 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 37
242 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 279
243 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 68
244. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 103
245. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 86
246. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 80
247. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 100
248. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 102
249. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 104
250. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 104
251. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 79
252. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 97
253. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 156
254 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 157
255. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 178
256. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 178
257. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 159
258. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 184
259. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 161

260. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 162
261. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 173
262. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 172
263. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-12, सम्पादक : मोहनलाल मधुकर, पृ. 25
264. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 31
265. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 32
266. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 65
267. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 78
268. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 78
269. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 85
270. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 95
271. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 99
272. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 202
273. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 208
274. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 227
275. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 227
276. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 234
277. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 239
278. पुस्तक : राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-13, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्‌गल, पृ. 18
279. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 18
280. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 33
281. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 34
282. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 39
283. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 38
284. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 45
285. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 47
286. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 67
287. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 71
288. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 108
289 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 109
290. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 132
291. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 190
292. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 191
293. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 202
294. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 205
295. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 205
296. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ 289
297. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 295
298. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 297
299. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 297
300. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 305
301. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 309
302. पुस्तक : राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-14, सम्पादक : गोपाल प्रसाद मुद्‌गल, पृ. 25
303. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 30

304. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही पृ. 38
305. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 49
306. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 35
307. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 97
308. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 98
309. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 99
310 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 100
311. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 101
312. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 119
313. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 123
314. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 143
315 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 145
316. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 147
317 पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 155
318. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 199
319. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 200
320. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 201
321. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 214
322. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 213
323. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 216
324. पुस्तक : राजस्थान के अग्यात ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-15, सम्पादक : गोपालप्रसाद मुद्गल, पृ. 10
325. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 11
326. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 15
327. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 17
328. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 12
329. पुस्तक : राजस्थान के आधुनिक ब्रजभाषा साहित्यकार भाग-16, सम्पादक : गोपालप्रसाद मुद्गल, पृ. 119
330. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 121
331. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 122
332. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 124
333. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 135
334. पुस्तक : वही, सम्पादक : वही, पृ. 139